॥ श्री ॥

॥ श्रीसुकुमालचरित्र ॥

श्रीमत वीर जिनेशपद ॥ कमल नमूं शिर नाय ॥ जिनवाणी उरमैं धरूं जजूं सुगुरुके पाय ॥ १ ॥ पंच परमगुरु जगतमैं ॥ परम इष्ट पहिचान ॥ मन वच तनकरि ध्यावतैं ॥ होत कर्म-की हानि ॥ २ ॥ चार घातिया घाततैं ॥ दर्शनज्ञान अनंत ॥ सुख वीरज गुण जुत भये ॥ नमूं सदा अरिहंत ॥ ३ ॥ वसुविधि कर्म विनासिकरि लोकालोक निहार ॥ निज स्वरूपमैं थिर-भये ॥ नमो सिद्ध अघहार ॥ ४ ॥ दर्शन ज्ञान चरित तप ॥ बल पणविधि आचार ॥ गहै गहावै आप पर ॥ नमूं सूरि हि-तकार ॥ ५ ॥ पढैं पढावैं औरकूं ॥ देहैं श्रुत उपदेश ॥ भौ क्लेश मेरे हरो ॥ उवज्झाय परमेस ॥ ६ ॥ दर्शन ज्ञान च-रित मय ॥ शिव मारग सब साध ॥ साधत है करि उग्रतप ॥ हरो सकल भवबाध ॥ ७ ॥ जाके नैक प्रसादतैं ॥ मूढ सयानें होय ॥ ता श्रुतनके पादकूं ॥ नमौं जोरि कर दोय ॥ ८ ॥ जिन-सेनादिक सूरनैं ॥ कीनें महा पुराण ॥ तिनकी महिमा कहनकूं ॥ कौंन सकै मतिवान ॥ ९ ॥ बल माधव पूजित भये ॥ नेमिचंद्र वर सूर ॥ गोमट्टसार सिद्धांत रचि ॥ हन्यो मोहतम भूरि ॥ ॥१०॥ वट्टकेर वसुनंद मुनि ॥ मुनि श्रावक आचार ॥ बरनें पंचम कालमैं ॥ जिनमारग अनुसार ॥ ११ ॥ कुंदकुंद बर सूरकी ॥ महिमा कही न जाय ॥ नाटकत्रय जिननैं रचे ॥ अध्यातम द-रशाय ॥ १२ ॥ पादपूज्य अकलंक मुनि ॥ विद्यानंदि प्रवीन ॥ तत्वारथ दश सूत्रकी ॥ वृत्ति भनी जिन तीन ॥ १३ ॥ गण-

Scanned by CamScanner

पतिसम मतियुत भए ॥ उमास्वामि मुनिराय ॥ तत्वारथ
रचना कही ॥ दश अध्याय बनाय ॥ १४ ॥ इत्यादिक बहु
मुनि भए ॥ जिनमारग अनुसार ॥ मिथ्या मतके वाद तम ॥
हरे सूर उनहार ॥ १५ ॥ सकल कीर्ति मुनि राज इक ॥ भये
महामतिमान ॥ तिननैं श्रीसुकुमालको ॥ रच्यौ चरित हित
आन ॥ १६ ॥ ताको कछु संक्षेप अब ॥ कहूं मूल अनुसार ॥
नव अधिकारनमैं कह्यौ ॥ जो मुनिनैं विस्तार ॥ १७ ॥ वायुभू
तका भवविखैं ॥ सूर्यमित्र उपदेश ॥ लहिकैंभी नांही तज्यो ॥
पापकर्मको लेश ॥ १८ ॥ कोट उदंबर कष्ट सहि ॥ गदहीकी
परजाय ॥ पाप विविध फल भुगतही ॥ भई सूरडी जाय ॥१९॥
तहां दुःख भुगते घनें ॥ आयु अंत तजि प्रान ॥ भई कूकरी
वाडमैं ॥ चंडालहिके थान ॥ २० ॥ क्रूर वदन विकराल तन ॥
दुर्बल कष्ट अनेक ॥ सहिकैं तिस चंडालकै ॥ भई सुता अविवेक
॥ २१ ॥ पाप उदयतैं कष्ट बहु ॥ सहे आयु परजंत ॥ फिर
अघ उपसम योगतैं ॥ भयो येक विरतंत ॥२२॥ वायुभूत भवभूति
मुनि ॥ अग्निभूत तसु देखि ॥ सूर्यमित्र मुनिराजतैं ॥ जान्यौ
हेतु विसेष ॥ २३ ॥ चंडाली ढिग आयकैं ॥ दये गेहव्रतसार ॥
येक दिवसकी आयुभनी ॥ श्रीगुरु कियो विहार ॥ २४ ॥ गहि
अनसन चंडालिका ॥ अंत निदान विचार ॥ नागसर्म त्रिदेवकैं ॥
भई सुता हितकार ॥ २५ ॥ नागश्री येकै दिवस ॥ नागपूजने
हेत ॥ गई बागमैं सूर ढिंग ॥ व्रत सम्यक्त समेत ॥ २६ ॥ व्रत
गहि निजघर आवतैं ॥ सूर कही इस भांति ॥ व्रत मत तजियो
बालके ॥ छुरवावै जो तात ॥ २७ ॥ करै बहुत हठ छोरनेंको
तब हम ढिग आय ॥ श्रावकके व्रत छोरयो ॥ और भांति नज-
हाय ॥ २८ ॥ घर आवत ही विप्रनैं ॥ दीनीं गारि अनेक ॥

Scanned by CamScanner

व्रत छोरेविन गेहमैं ॥ नां राखू घडि एक ॥ २९ ॥ साथि विप्रकूं लेयकैं ॥ आवैथी मुनि पास ॥ मगमै पण विध पापको ॥ फल देख्यौ दुखरासि ॥ ३० ॥ कही तातकूं पापफल ॥ ये देखो परतच्छ ॥ अब पण व्रत कैसैं तजूं ॥ ॥ जिनतै व्हैं सुख स्वच्छ ॥ ॥ ३१ ॥ व्रत तो तूं राखहि भलैं ॥ पण इकवर मुनिपास ॥ देकैं बहुत उराहना ॥ आवैंगे निज वास ॥ ३२ ॥ जाय कहे कडवे वचन ॥ मुनिकूं बहुत प्रकार ॥ द्विज पुत्रनि व्रत देनको ॥ तेरो को अधिकार ॥ ३३ ॥ हम निज पुत्री जानिकै ॥ दीनें वरत विचार ॥ तेरा इसमैं है कहा ॥ किण विधि रुषै अपार ॥ ॥ ३४ ॥ शशि वाहन नृपकै ढिगैं ॥ कीनी विप्र पुकार ॥ नागश्री मेरी सुता ॥ कोसत है मुनि वार ॥ ३५ ॥ सुनि नृप आयो सूरिढिंग ॥ परजन पुरजनसंग ॥ करि प्रणाम मुनिकूं सकल ॥ पूछ्यौ हेतु प्रसंग ॥ ३६ ॥ सूर्यमित्र मुनि बोलये ॥ सुता हमारी एह ॥ बहुत शास्त्र हमतैं पढे ॥ उरमैं आनि सनेह ॥ ३७ ॥ विप्र भनैं मेरी तिया ॥ नाग पूजतैं येह ॥ नागश्री पुत्री लई ॥ यामैं किम संदेह ॥ ३८ ॥ फिर नृप मुनिकूं वीनयो ॥ तुम सूरज समसंत ॥ किण विधि सुता पढायई ॥ कहौ सकल विरतंत ॥ ३९ ॥ नागश्री शिर हाथ धरि ॥ वायुभूत उच्चार ॥ श्रुत पढनेंकी हाजरी ॥ दरसाई तत्काल ॥ ४० ॥ सोमसर्मके दोय सुत ॥ पावक मारुतभूत ॥ मोढिग श्रुत अभ्यास करि ॥ जेठो पावकभूत ॥ ४१ ॥ मोढिग मुनि व्रत आदरे ॥ येह हमारी संग ॥ वायुभूत मुनि निंद्यतैं ॥ संच्यौ अशुभ अभंग ॥ ४२ ॥ भावजके मुख लात दे ॥ गधी सूरडी कूर ॥ शुनी सुता चंडालकी ॥ भूगते दुख भरपूर ॥ ४३ ॥ चंडालीकी जातिमैं ॥ व्रत गहिधार निदान ॥ भई सुता इस विप्रके ॥ नागश्री तजि प्रान ॥

Scanned by CamScanner

॥४४॥ वायुभूतको जीव जो ॥ सो नागश्री येह ॥ सुता हमारी ।
है सही ॥ जानूं तजि संदेह ॥ ४५ ॥ नृप द्विजनैं मुनि वृत
गहे ॥ नागश्री तसु मात ॥४६॥ भई त्रिदेवी अर्जिका ॥ बहु पुरव
नितासाथ ॥ कौशंबी औ राजग्रही ॥ दोउ पुरके भूपाल ।
अतिबल सुबल यतीसपैं ॥ धरे महा वृत सार ॥ ४७ ॥ सूर्य
मित्र मुनिराज फुनि ॥ अग्निभूत दो धीर ॥ अष्ट कर्म निर्मूल
करि ॥ भये निरंजन वीर ॥४८॥ नागश्री द्विज ब्राह्मणी ॥ तजे
जुगतितैं प्रान ॥ अच्युत दिवमैं ऊपजे ॥ तीनूंही इक थान ॥
॥ ४९ ॥ पद्मनाभ नामा भयो ॥ नागश्री सुरराव ॥ माता तनु
रक्षक भयो ॥ पितामहर्द्धिक देव ॥ ५० ॥ आरणकल्प विमा
नमैं ॥ तीनू नृप वरदेव ॥ सुख विभूत विलशी तहां ॥ कहत
न आवै छेव ॥ ५१ ॥ नागसर्म चरचय भयो ॥ सेठ सुरिंद
ही दत्त ॥ भई त्रिदेवी जीव चई ॥ प्रिया सेठ धरदत्त ॥
॥ ५२ ॥ नाम यसोभद्रा दिवस ॥ येकहि श्री गुरुपाय ॥
वंदन करि सुत होनको ॥ प्रश्न कियो सिर नाय ॥ ५३ ॥ वर्द्ध
मान मुनिराज तब ॥ कह्यो यथावत हेत ॥ सुत तेरे ह्वैगो
सही ॥ और सुनहू धर चेत ॥ ५४ ॥ सुत मुखचंद बिलो
किकैं ॥ तेरो पति तजि धाम ॥ मुनिव्रत पालैंगो सही ॥ तोर
सुतभी अभिराम ॥ ५५ ॥ मुनिके दर्शन मात्रतैं ॥ अथवा सु
निकैं वैंन ॥ पंच महाव्रत पालसी ॥ तजि सुरसम सुख चैन
॥ ५६ ॥ आरण दिवकूं छांडिकैं ॥ शसिवाहन सुरआय ॥ वैस्य
यसोभद्र हि भयो ॥ सेठ तियाको भाय ॥ ५७ ॥ चयकैं आरण
कल्पतैं ॥ सुबल भूपचर आय ॥ उज्जयनीको पति भयो ॥ नृ
वृषभांक सुराय ॥ ५८ ॥ अतिबल चर नृप सुत भयो ॥ कनक
ध्वज यह आय ॥ गर्भ यसोभद्रहितणौं ॥ नागश्री चरथाय

Scanned by CamScanner

॥ ५९ ॥ नव महीने पूरण भये ॥ उपज्यौ सुत सुकुमार ॥ दा-
शी वशन प्रसूतके ॥ धोवैथी घरद्वार ॥ ६० ॥ कोई द्विज
लखि वशनकूं ॥ दई बधाई जाय ॥ तेरे सुत अब ऊपन्यौं ॥
अहौ सेठ सुखदाय ॥ ६१ ॥ बहुत द्रव्य द्विजकूं दयो ॥ सुतको
वदन निहार ॥ पंच महाव्रत आदरे ॥ सकल परिग्रह छार ॥६२॥
करि उच्छह सुत होनको ॥ सेठाणी जु बुलाय ॥ अपनां सकल
कुटुंबकू ॥ भूषन वशन दिवाय ॥६३॥ महल बतीस बनाइये ॥
सुवरनके अभिराम ॥ मध्य सर्वतोभद्र इक ॥ रतनमई शुभधाम
॥ ६४ ॥ बडे बडे नृप सेठकी ॥ कन्या शुभग बत्तीस ॥ येक वा-
रमैं ब्याह दई ॥ सुतकूं निजघरसीस ॥ ६५ ॥ बहुत संपदातैं
भरे ॥ दीने इक इक धाम ॥ तिनमैं ते सुकुमाल जुत ॥ रमैं भोग
अभिराम ॥ ६६ ॥ फिर बुलाय दरबानकूं ॥ कही येक सम-
झाय ॥ जैन जतीकूं गेहमैं ॥ आनें मति द्यौ भाय ॥ ६७ ॥
नृप लेनें सकनां भयो ॥ सुनि कंबल बहुमोल ॥ सो सेठाणी-
नैं लियो ॥ दियो खजानो खोलि ॥ ६८ ॥ भास्यो कठिन नि-
हारिकैं ॥ कंवर नवीनूं अंग ॥ तब करवाये तासके ॥ सेठाणी-
नैं भंग ॥ ६९ ॥ पुत्र वधुके पावकी ॥ मोचरिया वनवाय ॥
दई पहरनेंकूं[1] तिन्हैं ॥ धनका फिकर न लाय ॥ ७० ॥ खोलि
सुदामा सौधसिर ॥ सिंघासनपै बैठि ॥ पश्चिम दिसा निहारती ॥
तिष्टैथी तिहपैठि ॥ ७१ ॥ गृद्ध मोचरी येकले ॥ नृप मंदिर
सिर जाय ॥ आमिख भूमतैं खानकौं ॥ कीनूं बहुत उपाय ॥७२॥
चूंच घाततैं कठिनलखि ॥ डारी सोधमझार ॥ लखि नृप किं-
करकूं कही ॥ किनकी पादुक सार ॥ ७३ ॥ सेठ कंवर सुकुमा-
रकी ॥ वनिताकी है भूप ॥ सुनि नृप कंवर निहारनें ॥ हेतु च-

१ प्राचीनकालमें कुलवान स्त्रियां जूतियां पहनतींथी.

Scanned by CamScanner

ल्यौ सुखरूप ॥ ७४ ॥ निजघर सन्मुख भूपकौं ॥ सेठाण
लखिजाय ॥ पूछी किणसे हेतुतैं ॥ आये हौ नरराय ॥ ७५
तो सुत देखन आइयो ॥ और न कारण कोय ॥ देखि कुमा
रकूं भूप अति ॥ मनमैं हर्षित होय ॥ ७६ ॥ सेठाणीके बैनतैं
नृप कुमार इक धाम ॥ भोजनकरि नृपनैं कही ॥ तेरो सुत अभिराम
॥ ७७ ॥ है पण औगुण तीनये ॥ क्यौ न करै तु ख्यास ॥ नैंन
झरै आसन अथिर ॥ इक इक तंदुल घास ॥ ७८ ॥ सदा रमै
मणिधाममैं ॥ दीपक तेज निहार ॥ नीर नैंनमैं आइयो ॥
औगण नाहि लगार ॥ ७९ ॥ सरस्यूंके दाणे चुभे ॥ कोमल
तनके माहि ॥ यातैं चल आसण रह्यौ ॥ यहभी औगुण नांहि
॥ ८० ॥ भीजे सगरी रैनके ॥ कोमल तंदुल खाय ॥ वै थोरे
लखि और हम ॥ तंदुल दिये मिलाय ॥ ८१ ॥ इक इक चांवल
वीनके ॥ खायें तंदुल सोय ॥ पुण्यवान इस कंवरमैं ॥ औ-
गुण नैकनि कोय ॥ ८२ ॥ बहुत प्रसंसा कंवरकी ॥ करि नृप
अपनें धाम ॥ गयो कंवर सुख भोगवै ॥ सुरपति सम अभि-
राम ॥ ८३ ॥ यसोभद्र व्रत धारिकैं ॥ च्यार ज्ञानकूं पाय ॥
आयु अलप सुकुमालकी ॥ जानीं अवध बसाय ॥ ८४ ॥ धाम-
पास जिनधाममैं ॥ आये योग विचार ॥ च्यार मासको हे-
तुए ॥ लियो सुबोधनसार ॥ ८५ ॥ मालिमुखतैं सूरिकूं ॥
जानि गमन तत्काल ॥ आय सूरसैं हम कही ॥ उठ जावो तुम-
वार ॥ ८६ ॥ मेरे सुत ये येक है ॥ तुम दर्शनतैं सूरि ॥ पंच-
महाव्रत आदरै ॥ मेरे दुख व्है भूर ॥ ८७ ॥ साढ सुकल पुनौ
दिवस ॥ जावैं हम किस धाम ॥ योग च्यार महीनां गह्यौ ॥
और न दूजो काम ॥ ८९ ॥ जाग्रत जानि कुमारकूं ॥ अवधि-
ज्ञानतैं सूरि ॥ तीन लोक प्रज्ञप्तिको ॥ पाठ कियो गुणभूर ॥९०॥

Scanned by CamScanner

नरकधरा वर्णन करी॥ विरकत होणे हेत॥ मध्यलोक वर्णन कियो॥ ॥ चैत्यालयनसमेत॥ ९१॥ देव लोकको कथनकरि॥ अच्युत स्वर्गके मांहि॥ पद्मगुल्म सुविमानमैं॥ पद्मनाभ सुर ठांहि॥९२॥ भोग संपदा बहुत विधि॥ वर्णन करी विथार॥ जाती समरण ज्ञानकौ॥ पायो तव सुकुमार॥ ९३॥ व्है विरकत भव भोगसूं॥ नीसरनेंको दाव॥ हेरन लाग्यौ महलमैं॥ लाध्यौ नहीं उपाव॥ ९४॥ बांधि वसन थंभानिकैं॥ पकरि उतऱ्यो धीर॥ सूरपाय सिर नायकैं॥ दिक्षा जाची वीर॥ ९५॥ भली विचारि आजि तुम॥ तीन दिवस अवसेश॥ आयु रही निज काजकरि॥ धारि दिगंबर भेस॥ ९६॥ गहि मुनिव्रत संन्यास जुत॥ कोमल तन अविकार॥ अरणि मध्य निजरूपमैं॥ थिरता धरी अपार॥ ९७॥ यसोभद्र तिस थानतैं॥ अन्य जिनालय जाय॥ तिष्टे बहुत कलेशकी॥ हानि जानि मनमांहि॥ ९८॥ माताआदि कुटंब नृप॥ हेरि सकल वनवास॥ नांहि देखि सुकुमालकूं॥ दुखित भये निरास॥ ९९॥ वायुभूत भव भाविजा॥ अग्निभूतकी नार॥ भरमि भवावली वनविखैं॥ स्यालनि भई करार॥ १००॥ मुनिके कोमल पांवतैं॥ वही रुधिरकी धार॥ कठिन भूमिके फरसतैं॥ वन परजंत अपार॥ १०१॥ ताहि चाटिवा स्यालनी॥ धाराके अनुसार॥ गई गहनके मध्य थल॥ जहि तिष्टै सुकुमार॥ १०२॥ पूरव वैर निदानतैं॥ क्रोध बहुत उर आनि॥ खान लगी पग दाहिनों॥ सनैं सनैं अघखानि॥ १०३॥ ताकी पिछली वामपग॥ भखन लगी करचाव॥ येक दिवसमैं जांघलौं॥ खाये दोऊ पांव॥ १०४॥ दूजे दिन जंघानलौं॥ भखे वदन विकरार॥ तीजे दिन अध रैनमैं॥ कीनूं उदर विदार॥ १०५॥

Scanned by CamScanner

आंति खैंचि खाने लगी ॥ तास बेदना भार ॥ सह्यौ सकल समभावतैं ॥ मुनिवर श्री सुकुमार ॥ १०६ ॥ बारह भावना धरम दश ॥ रत्नत्रय चित आंनि ॥ पंच परम गुरु ध्यानतैं ॥ त्यागे अपने प्रान ॥ १०७ ॥ सर्वारथ सिध ऊपनें ॥ सकल सुखनिको थान ॥ आयु जलधि तेतीसकी ॥ एक हाथ तनुमांन ॥ १०८ ॥ अवधि विक्रिया लोकके ॥ अंत प्रयंत वखान ॥ तिसतैं चय नर देह धरि ॥ होवैंगे भवपार ॥ १०९ ॥ आये चउविधि देवजुत ॥ इंद्र पूजनें काज ॥ स्वामीके सुभ देहकूं ॥ वाहन चढि सबसाज ॥ ११० ॥ वादित्रनिको नाद सुनि ॥ माता भई सचेत ॥ जानि पुत्रको मरण शुभ ॥ आई बंधुसमेत ॥ १११ ॥ अर्धगात्र लखि पुत्रको ॥ परी भूमिके मांहि ॥ रुदन कियो वनिता बहुत ॥ सो कछू कह्यौ न जाय ॥ ११२ ॥ व्हैं सचेत लहि बोधकूं ॥ नृप सज्जन परिवार ॥ दाग देय सुत देहकूं ॥ गई जिनालय द्वार ॥ ११३ ॥ पूजा करि जिनराजकी ॥ यसोभद्र सिरनाय ॥ सुतपैं बहुत सनेहको ॥ कारण पूछ्यौ भाय ॥ ११४ ॥ पूरव भवकी मात तूं ॥ इसभी भवमैं मात ॥ भई कंवर सुकुमारकी ॥ यह सनेहकी बात ॥ ११५ ॥ नागसर्म गतभव पिता ॥ सोभी यह भव मांहि ॥ पिता भयो सुकुमारको ॥ नागश्री सुकुमार ॥ ११६ ॥ शशिवाहनको जीव मैं ॥ यसोभद्र तुम भ्रात ॥ सुबल भयो वृषभांक नृप ॥ अतिबल सुत विख्यात ॥ ११७ ॥ कनकध्वज नामा भयो ॥ अब मैं तपधर च्यार ॥ ज्ञान पाय संबोधनेंकूं आयो जिन द्वार ॥ ११८ ॥ वनिता च्यार कुमारकी ॥ गरभवती तिह काल ॥ तिनकूं घरधन संपदा ॥ सौंपि तज्यौ जग जाल ॥ ११९ ॥ शेष वधूजुत अर्जिका ॥ भई कंवरकी मात ॥

Scanned by CamScanner

नृप लघुसुतकूं राजदे ॥ बडे पुत्रकी साथ ॥ १२० ॥ राज संपदा छारिकैं ॥ यसोभद्र मुनि पासि ॥ पंचमहाव्रत आदरे ॥ पायो ज्ञानप्रकास ॥ १२१ ॥ सकल संघजुत सूर बहु ॥ देशनि कियो विहार ॥ भविजनकूं संबोधिकैं ॥ कीनें भवके पार ॥ १२२ ॥ यसोभद्र वृषभांक कनक ध्वज सुरिंददत्त ॥ च्यारूं मुनि निज रूपको ॥ जान्यौं सगरो तत्त ॥ १२३ ॥ शुक्लध्यान करवा लगहि ॥ घाति अरनिकूं घाति ॥ केवल दर्शन ज्ञानजुत ॥ लही चिदानंद जाति ॥ १२४ ॥ लोकालोक विलोकिकैं ॥ फुनि अघात करिनास ॥ चिदानंद निज रूपमय ॥ पायो शिवपुर वास ॥ १२५ ॥ माताश्री सुकुमालकी ॥ धरि अनसन संन्यास ॥ समभावनितैं प्रान तजि ॥ पायो अच्युत वास ॥ १२६ ॥ और अर्जिका प्राण तजि ॥ अपनें तप अनुसार ॥ सोडस दिवलौं ऊपनें ॥ सुर सुरत्रिय मनहार ॥ १२७ ॥ सर्वारथसिधलौं गये ॥ सेष जती तजि प्रान ॥ जानूं भवि संक्षेपतैं ॥ इह विधि चरित वखान ॥ १२८ ॥ अब सुकुमाल चरित्रकौं ॥ सकल ज्ञानके हेत ॥ देश वचनिका मय लिखूं ॥ पढो सुनौं धरि चेत ॥ १२९ ॥ वसि प्रमाद कहूं भूलिकैं ॥ अरथ लिखन जो होय ॥ पंडितजन सब सोधियो ॥ मूलग्रंथ अवलोय ॥ १३० ॥

नमःश्रीविश्वनाथाय ॥ पंचकल्याणभागिने ॥ महते वर्द्धमानाय ॥ नित्यानंदगुणाब्धये ॥ १ ॥ अर्थ ॥ मैं जो सकलकीर्तिनामां आचार्य ताको वर्द्धमान तीर्थंकरके आर्थि नमस्कार हो. कैसेहै ? श्रीविश्वनाथाय–कहिये शोभायमान तीन भुवनका स्वामी है. अथवा स्थावर जंगम सकल जीवनिका ईश्वर है. अर पंच-

Scanned by CamScanner

कल्याणभागिने—कहिये गर्भ, जन्म, तप, केवल, और निर्वाण ऐसे पंचकल्यानकविखैं जाकौं इंद्रादिक देव सेवैं है. महते कहिये सबनिके पूज्य है. अथवा चतुर्विधि संघविखैं महान श्रेष्ठ है. बहुरि नित्यानंदगुणाब्धये—कहिये सास्वते आनंदरूप जे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतसुख, अनंतवीर्य, आदि अनंतानंत गुण तिनका समुद्र है. भावार्थ—तीन भुवनका स्वामी, पंचकल्यानकका नायक, अनंतगुणनिका समुद्र, अंतिम तीर्थंकरकूं आचार्यनैं निर्विघ्न शास्त्रकी समाप्तीके अर्थि आदि विखैं नमस्कार किया है. वर्द्धमान तीर्थंकरकरि प्रकाश्य सत्यार्थ धर्म तीन जगतकी लक्ष्मी, अर सुखकी खान, और इस पंचमकाल विखैं मुनि अर्जिका श्रावक श्राविकानिकरि आचरण किया प्रवर्तै है. अर पंचमकालके अंतपर्यंत रहैगा जो वचनरूप किरणनिकरि सर्वथा एकांत मतरूप जे अज्ञान सोही अंधकारका समूह ताहि मूलतैं उच्छेद करि भव्य जीवनिके मोक्षकी प्राप्तिके अर्थि रत्नत्रय रूप मुक्तिका मारग प्रगट दिखाया. श्री कहिये सोभायमान सम्यग्ज्ञानकी वृद्धितैं देवनिनैं जाका वर्द्धमान नाम प्रसिद्ध किया. अर अंतरंगविखैं क्रोधादिक वैरीनके जीतवेतैं वीर अथवा महावीर ऐसा नाम पाया. अर स्वयं कहिए आपही परोपदेशविना आपूं आप सत्यार्थ मार्गकूं जान्यां. तातैं सन्मति ऐसा नाम कहाया. या प्रकार वर्द्धमान, वीर, महावीर, सन्मति च्यार नामके धारक, धर्मरूप चक्रवर्ति पदके नायक, त्रिजगतपूज्य अंतिम तीर्थंकरकूं मैं नमस्कार करूंहूं. जो भगवान शुक्लध्यान रूप खाड्गकरि बरजोरीतैं घातिकर्मरूप वैरीको नास करि लोकालोक प्रकासक केवलज्ञानकूं पाय चतुर्थ कालकी आदि विखैं भोले आर्य पुरुषनिके कल्याणकी सिद्धिकेअर्थि मुनि श्रा-

Scanned by CamScanner

वकके भेदकरि दोय प्रकार धर्म दिव्यध्वनि करि उपदेस्या ऐसा प्रथम तीर्थंकर वृषभ देव ताहि नमस्कार करूंहूं. कैसा है धर्म ? स्वर्ग मुक्तिके सुखका दाता है. अर अजितनाथकूं आदिदेय पार्श्वनाथपर्यंत जे अवसेष बाईस तीर्थंकर तिनके चरणकमलनिका सेवन करूंहूं. काहेकेअर्थि ? तिनके अनंत ज्ञानादि गुणनिकी प्राप्तिके अर्थि. कैसे हैं बावीस तीर्थंकर ? सर्व भव्य जीवनिके हितविखैं उद्यमी है. अर इंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादिकनिकरि वंदनीक पूजनीक अनंत गुणनिके समुद्र है. अर संसारतैं भयभीत जे भव्यजीव तिनके शरणैं आधार है. बहुरि सर्व मंगलके कर्ता लोकविखैं सर्वोत्तम है. अर पूरव पश्चिम विदेहविखैं विद्यमान शीमंदरादि वीस तीर्थंकरनिके चरणकमलनिकूं हृदयविखैं स्थापन करूंहूं. कैसेहै ? जे भव्य जीवनिके मोक्ष सुखके अर्थि सत्यार्थ मार्गकूं प्रवर्तावै है. और अनंत गुणनिके समुद्र दिव्यध्वनिकरि मनुष्यनिकूं तथा तिर्यंचनिकूं संबोधे है. अर त्रिकाल गोचर अनंत केवली हुवे, आगैं अनंतानंत होहिगे, और वर्तमानविखैं वर्तैहै, तिनसबनिकूं स्तवूहूं, वंदौहौं, नमस्कार करूंहूं. काहेकेअर्थि ? सारभूत आत्मज्ञानकी सिद्धिके अर्थि. जे महान ध्यानरूप खड्गकरि कर्म नौ कर्मरूप वैरीनका नाश करि, सम्यक्त्वादि अष्टगुणनिकरि सहित, और जिनोनै मुक्तिरूप साम्राज्यपद अंगीकार किया, अर लोकसिखरपैं हैं आवास जिनका, इंद्र नरेंद्र नागेंद्रनिकरि वंदनीक, ऐसे अनंत सिद्धपरमेष्टीनकूं सिद्धगतिकी प्राप्तिकेअर्थि सदाकाल नमस्कार करूं हूं. जे छत्तीस गुणनिकरिसहित, अर संसारसमुद्रविखैं भव्यजीवनिके त्यारवेकूं जिहाजसमान अर परम उत्कृष्ट पंचाचारकूं मोक्षकेअर्थि आप आचरण करै है, अर विनयवान शिष्यनिकूं आचरण करावै है, ऐसे आचार्य

Scanned by CamScanner

परमेष्ठीनकूं पंचाचारकी सिद्धिकेअर्थि मैं नमस्कार करूं हूं. कैसे है आचार्यपरमेष्टी ? विना हेतु सकल जीवनिके उपकार करनहारे है. जे ग्यारह अंग चौदह पूर्वरूप शास्त्रसमुद्रकूं आपपार भये, अर अन्य योगीश्वरनिकूं पार करणहारे ऐसे उपाध्याय परमेष्ठीनके चरणारविंदनिकूं समस्त श्रुतका लाभकेअर्थि अर निर्वाण द्वीपकी प्राप्तिकेअर्थि नमस्कार करूं हूं. कैसे है उपाध्याय परमेष्ठी ? त्रिकाल दर्शनी प्रज्ञा जो बुद्धि सोई जिहाज ताका है आश्रय जिनकै. अर सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्रमय अमोलिक धन ताके ईश्वर है. जे शीतकालविषैं नदीनके तटपैं, ग्रीष्मविखैं पर्वतके शिखरऊपर, अर वर्षाकालमैं वृक्षनिकैं नीचै, ध्यानकूं धरते महान घोरवीर तपके धारक धर्मसुक्लध्यानकरि निरंतर मोक्षका साधन करते पर्वतनिकी गुफाविखैं, दुर्गमस्थानविखैं, वा निर्जनवनविखैं, सिंघसमान निर्भय तिष्ठै है. तिन सर्वसाधु परमेष्ठीनकूं नमस्कार करूं हूं. कैसे है साधु परमेष्ठी ? निरंतर आत्महितविखैं विद्यमान है. ये पंचपरमगुरु ज्ञानीजननिकरि वंदनीक स्तुतिकरवेयोग्य इस शास्त्रका आरंभके सिद्धकेअर्थि मोकूं अपने उत्कृष्ट गुण देहू. महानकवित्तादि गुणनिकरि परिपूर्ण, अर द्वादशांग श्रुत समुद्रके पारकूं प्राप्त भये, ऐसे गौतमादि गणधर तिनका आत्मीक बुद्धिकेअर्थि ध्यान करूं हूं. कैसे है ? ध्येय कहिये ध्यायवेयोग्य है. जाके प्रसादकरि काव्यनिकी रचना करवेविखैं समर्थ मेरी बुद्धि अति निर्मल भई; अर चारित्रके आचरणविखैं पवित्र भई प्रवीण भई ऐसी जिनेंद्रभगवानके मुखकमलविखैं निवास करनेवारी जिनवाणी ताहि मैं स्तवूं हूं, बंदूं हौं, नमस्कार करूं हूं. कैशी है जिनवाणी ? तीन जगतके जीवनिकूं मातासमान उपकार करनहारी है. अर त-

Scanned by CamScanner

त्वनिके समस्त अर्थनिकी दिखावनहारी है. जिनेंद्र भगवानकी दिव्यध्वनितैं अर्थरूप ग्रहण करि गणधर देवनिनैं जिनकी अंग, पूर्व, अर प्रकीर्णकरूप रचना करी, अर प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिके धारक योगीश्वरनिकरि वा श्रुतकेवलीनकरि धारण किये, बहुरि सर्व अर्थके प्रकाशक जिनेंद्र भगवानकरि कहे सांचे अर्थ तिनकूं ज्ञानादि गुणकी प्राप्तिकेअर्थि नमस्कार करूंहूं. अर सुकुमालमुनिकूं मैं नमस्कार करूंहूं. कैसे है ? महाधीर है. अर कामदेवसमांन मनौग्य रूपका धारक महापराक्रमी महोत्तम वैश्यका कुल ताविखैं उत्पन्न भया है. अर महालक्ष्मीकरि सोभायमान जगतविखैं मानवेजोग्य महासाहसी है. बहुरि महाघोरवीर उपसर्गनिका जीतनिहारा है. काहेकैअर्थि नमस्कार करूंहूं ? जो सक्ति सुकुमाल मुनिविखैं भई सोई सक्ति कहिए सामर्थ्य मेरेविषैं हू प्रगट होहु ताकेअर्थि नमस्कार करूं हूं. याभांति अरहंत, सिद्ध, देव अर केवलीकेभाखे द्वादशांग सिद्धांत, अर आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु गणधर श्रुतकेवली आदिपरमगुरु, तिनकूं मंगलकेअर्थि मैनें नमस्कार किया, स्तवन किया, प्रार्थना किई, ते सर्व मंगल करो. अर मल जो पाप ताका नाश करो. समस्त विघ्नकूं दूर करो. अर शास्त्रका प्रारंभकी पूर्णता करो. इष्टकी सिद्धकरो. कैसे है पंचपरमगुरु ? सर्व मंगलनिके कर्ता है. अर अपमंगलनिके विनासक है. याप्रकार स्वस्य कहिये आपके अर भव्यजीवनिकै अनिष्टकी शांतिकेअर्थि, इष्टकी प्राप्तिकेअर्थि, कल्याणरूप हितकेअर्थि, अपने इष्ट जे देव, धर्म अर सतगुरु तिनकूं गुणनिकरि सहित नमस्कार करि, स्तुति करि, श्रीसुकुमालस्वामीका महान पवित्र चरित्र कहूंगा. कैसा है सुकुमालस्वामी ? क्षायिक सम्यक्त्वआदि अनेकगुणनिका समुद्र है. जो सुकुमाल

Scanned by CamScanner

वैश्यकुलरूप आकाशविखैं सूर्यसमान उद्योतकारि भया. अ
शिरसके फूलसमान अत्यंत कोमल है अंग कहिये शरीर जाका
महाघोरवीर उपसर्गनिकरि वज्रसमान, अतिअभेद्य इंद्रसमान
दिव्य भोगनिका भोगनेंवाला, सुखरूप समुद्रके मध्यविखैं प्राप्तभ
या. अर योग जो ध्यान तातैं दुर्निवार सकल परिषहनका जीतन
हारा, श्यालनीकृत घोरउपसर्ग परिसह सुकुमाल मुनि तीन दि
नपर्यंत सहिकरि समभावनितैं प्राणनिका त्यागकरि सर्वारथसि
द्धकूं प्राप्त भया जो सुकुमालमुनि ताका चरित्र मैं कहूंगा. अ
इसही चरित्रके कहवेकरि सूर्यमित्र महामुनिके सिद्धांतनिके पट
नादिकनिका जो फल प्रगट भया ताकूंभी कहूंगा. बहुरि याह
ग्रंथके मध्य अग्निभूत वायुभूत आदि बहुत महांनपुरुषनिकी शु
कथा है ताहि वर्णन करूंगा. इत्यादिक श्रेष्ठ अर प्रवीण महा
पुरुषनिके समूहकरि परिपूर्ण जो यह चरित्र ताके सुणवेकरि बु
द्धिवान पुरुषनिकै श्रुतका अभ्यास आदि अर्थका चिंतवन अ
धर्मविखैं धर्मका फलविखैं प्रीति, संसारदेहभोगनिविखैं उदासी
नता आदि अनेक गुण वृद्धिकूं प्राप्ति होय है. बहुरि पापकर्म
सहित रागद्वेषआदि सकलदोषनिका निराकरण होय है. भो
कल्याणकाअर्थि भव्यजीवहो, तुम इसचरित्रकूं श्रेष्ठफल पूर्वोक्त
प्रकार जानि इस चरित्रकूं सुनौं. मैं आगमके अनुसार तुमकूं
कहूं हूं.

अथानंतर असंख्यात द्वीपसमुद्रनिके मध्यविखैं जंबूवृक्षका
चिन्हित सार्थक नामकूं धारण करता जंबूनामा द्वीप सोभे है
कैसा है द्वीप ? लाखजोजनका है विस्तार जाका, अर ल
वणसमुद्ररूप वस्त्रकरि वेष्टित मांनूं चक्रवर्ती है. कैस
है द्वीप अर कैसा है चक्रवर्ति देव ? नरोत्तमनिकरि आ

Scanned by CamScanner

श्रित है. भावार्थ–द्वीपविखैं तो अनेकदेव अनेक उत्तमपुरुष अर समस्त विद्याधर सेवे है, अर चक्रवर्तिकूं छह खंड निवासी देव अर महामंडलेश्वर आदि अनेक उत्तम पुरुष सेवे है. अर द्वीपविखैं तो अनेक नदी पर्वत देश गहन वन आदि दुर्गम स्थान है. अर चक्रवर्ति अनेक नदी पर्वत देश गड इनका नायक है. ता द्वीपविखैं लाखयोजन ऊंचा, अर षोडस जिनमंदिरनिकरि महारमणीक, सुदर्शननामा मेरु इंद्रसमान सोहे है. मेरु तो जलकरि भरे सरोवर, अर गरुड आदि पक्षी, तिनकरि सोभायमान है. अर इंद्र अनेक अप्सरा अनेक देवनिकरि मंडित है. अर मेरु तौ ध्यानमैं तल्लीन ऐसे चारणमुनि तिनकरि सेवनीक है. अर इंद्र जे चारण गंधर्व आदि अनेक गुनींजन, तिनकरि सेवनीक है. ता मेरुकी दक्षण दिसाविखैं पांचसें छवीस योजन छहः कलाके विस्तार कहिये दक्षण उत्तर चौडा भरत क्षेत्र है. सो कैसा है भरतक्षेत्र? धर्म अर सुख इनकी खानि है. अर खेचर कहिये विद्याधर, भूचर कहिये भोमगोचरी, अर अमर कहिये देव, तिनकरि भऱ्या है. अर अनेक धर्मात्मा पुरुषनिकरि भऱ्या है. मांनूं धर्मका निवासही है. ता भरतखंडकै मध्य आर्यखंड है. कैसा है? अर्हंत कहिये तीर्थंकर, वा सामान्यकेवली, अर चक्री कहिये नवनिधि चौदह रत्न षट्खंडधराका मालीक चक्रवर्ती, अर आदि शब्दतैं बलभद्र, नारायण, प्रतिनारायण, त्रेसट सलाकापुरुष, चौवीश कामदेव, इत्यादिकनिकरि भूषित है. अर धर्मात्मा पुरषनिकै स्वर्ग अर मोक्षके साधनका आदिहेतु कहिये मूल कारण है. भावार्थ–आर्यखंडविखैं उत्तम कुलविखैं जन्म पायेंविन अन्य क्षेत्रनितैं मोक्षका लाभ

Scanned by CamScanner

नाहीं. तिस आर्यखंडकै मध्य नाभिसमान अंगनामा देश सोभे है. कैसा है? जाके च्यार दरवाजे होय सो तौ पुर, अर पत्तन कहिये जाविखैं रत्नादिककी खानि होय, अर जाके येक वोर नदीका बेट होवैं, येक वोर पर्वतका बेट होवैं, बीचमैं सहर वसैं, ताकी बेट संज्ञा है. अर अद्रि कहिये पर्वत, वन, अनेक बाग, अर जाकै च्यारूतरफ काटेनकी वाडि होय ताकी गाम संज्ञा है. इत्यादिकनिकरि पूरित कहिये भऱ्या है. अर धर्मात्मा, क्षुल्लक श्रावक, तेरह प्रकार चारित्रके धारक महामुनि, अर असंजमी सम्यक्ती गृही श्रावक,इनकरि निरंतर सोभायमान है. ता देशविखैं चंपापुरी नगरी ऊंचा कोट, उंचे दरवाजे, अर चहूंवोर अगाध खाईकरि अयोध्यासमान सोभे है. अर धर्मात्मा सम्यग्दृष्टी श्रावक अर धर्मात्मा सूरवीर सुभट तिनकरि भरी है. बहुरि अनेक जिनमंदिरनिविखैं उत्साह सास्वते होय है. भव्यजीव स्वाध्याय, पूजन, गान नर्तनादिकरि पुण्यका उपार्जन करे है. ता पुरीका सूर्यसमान प्रतापी, धर्मात्मा, पुण्यवान, ज्ञानी, अति चतुर चंद्रवाहन नामा राजा, ताकै लक्ष्मीमती नामा राणी, प्राणनिहूतैं अतिप्यारी शुभ लक्षणनिकरि परिपूर्ण साक्षात लक्ष्मीसमान होती भई. अर वा राजाकै जिनमततैं पराङ्मुख, खोटे शास्त्रनिका ज्ञाता मिथ्यामदकरि उद्धत, अतिरौद्र, नागसर्मनामा पुरोहित होताभया. ताकै सोभाग्यकी खानि त्रिदेवीनामा ब्राह्मणी स्त्री भई. तिनकै साक्षात लक्ष्मीसमान नागश्रीनामा पुत्री विवेक, रूप, सोभाग्यकरि सोभायमान अर ज्ञान, विग्यान आदिगुणनिकरि शोभायमान, देवांगनासमान शोभाकूं धारती भई. एकदिन नागश्री अनेक ब्राह्मणनिकी कन्यानिकरि सहित नगरके बाहार नागके मंदिर मूढबुद्धीकरि पुण्यकी प्राप्तिकेअर्थि नागके पूजि-

Scanned by CamScanner

वेकूं गईहूती. कैशी है नागश्री ? शुभकर्मकी करणहारी क्रीडामैं है उत्साहजाकै. तहां पुण्यके उदयकरि सूर्यमित्र अग्निभूत है नाम जिनके ऐसे दोय मुनिकूं देखे. कैसे है मुनि? पुण्यकर्मके कारण है, अर शुभलक्षणनिकरि संयुक्त, अर सत्पुरुषनिकूं निर्मल धर्मोपदेशके दायिक, अनेक शुद्धिनकरि मंडित, महाप्रवीण, द्वादसांग श्रुतसमुद्रके पारगामी, बहुरि सब जीवनिके हित विखैं उद्यमी, अर रत्नत्रय तपही है धनजिनकै, ध्यान अर अध्ययन जो जिनवाणीका पठन, ताविखैं सावधान है. शुद्ध प्राशुक सिलापर पद्मासन तिष्टे है. मुन्यांकेसमीप जाय मस्तक नमाय मुनिके चरणारविंदनिकूं नमस्कारकरि भोलेपनेंतैं मुन्यांके समीप बैठी. सूर्यमित्र मुनि नागश्रीकै अगामीं शुभगति होणी जाणि अर पूर्वभवनिके जानवेनिमित्त कोमलवाणीं कर कहते भये. हे पुत्री, तूं ग्रहस्थका धर्म अंगीकारकरि. कैसा है धर्म ? स्वर्गनिवासकूं तौ आंगण समान है. भावार्थ—धर्मके प्रसादतैं स्वर्गकी प्राप्ति तौ विनाउपायही होय है. धर्मके सेवन करि इस भवविखैं अर परभवविखैं मनोवांछित सुख उपजे है. जातैं धर्मके प्रसाद करि तीनलोकसंबंधी इंद्र, नरेंद्र, नागेंद्रनिके सुख होय है. धर्मात्मा जीवनिके सैंकडां मनोरथ विनाजतन स्वयमेव सिद्ध होय है. मदिरा, मांस, अर मधु कहिये सहेत इनके त्यागकरि अर जुवांआदि सप्तव्यसननिका त्याग करि. अर जीवनिकी दया करनी, सांच वचन बोलनां, चोरीका त्यागकरनां, शीलव्रत पालनां, अर परिग्रह प्रमाणीक राखणां. इन पंच अणुव्रतके आचरणकरि गृहस्थका धर्म होय है. जातैं व्रती धर्मात्मा जीव धर्मके फलकरि देवलोककूं प्राप्त होय है. अर यो आत्मा अव्रती पापके उदयकरि नरकगति तिर्यंचगतिकूं प्राप्त होय है. याभांति

Scanned by CamScanner

जानि जे सुखके अभिलाषी जीव हैं तिननैं बारह अवृत काम-
चेष्टा, पांचौं इंद्रियनके विषय, अर खोटे आचरण, इनका त्या-
गकरि सांचेव्रत ग्रहण करनां योग्य है. यह वचन मुनिके सुनि
नागश्री बोली हे तात, सुखके अभिलाषी जीव जिन व्रतनिकूं
धर्मके अर्थि आचरण करे है ते व्रत कौनसे है ते मोहि कहो.
तदि सूर्यमित्रमुनिराज बोले, हे पुत्री, व्रतनिका किंचित स्वरूप
कहूं हूं सो तूं आत्महितके अर्थि सुनि. सकल त्रसजीवनिकूं मन-
वचनकायकरि चित्तविखैं निजसमान धारण करि. सब जीवनिके
हितकारी प्रथमही अहिंसा अणुव्रत ग्रहण करनां. जैसैं सुखके
अर्थि शुभक्रियाका जो आचरण सो यसका करनहारा हो है.
तैसैं समस्त जीवनिकूं अभयदानका दायिक ऐसा जो अहिंसा
अणुव्रत सो समस्तव्रतनिका मूलकारण है. भावार्थ—एक दया-
विना सकल क्रिया आचरण अर व्रतनिका धारण करनां वि-
फल है. जातैं तीन लोककी राज्य संपदातैंहू समस्त जीवनिके
अपनां अपनां जीवतव्य अत्यंत प्रिय है. भावार्थ—प्राणनिका
वियोग भये पीछैं तीन लोककी संपदा कौंन भोगवैगा? तातैं हे
पुत्रि, आदिविखैं अहिंसा अणुव्रत प्रधान है. अर इस अहिंसा
अणुव्रतविखैंही व्रतनिकी रक्षाकै अर्थी वडका वडवाला, पी-
पलकी गोल, उमर, कठुमर, अर पाकरफल इन पंचउदंबर-
निकरि सहित मदिरामांस अर मधु कहिये सहेत, इनका ज्ञानी
जीवनिनैं विखसमान जान त्याग करनां जोग्य है. जातैं श्राव-
कके येही आठ मूलगुन हैं. बहुरि मदिरा मांस सहेत अर पंच
उदंबर इनके भक्षणविखैं लंपटी जे जीव हैं तिनकै दयारूपबुद्धिका
तो लेसहू नांही है. अर दयाविना समस्त जीवनिकी दया है
मूल जामैं ऐसा जो दयामयीधर्म ताका विचार कैसै होय? भा-

Scanned by CamScanner

वार्थ–जाके अंतरंगविखैं दया होगी सोई पुरुष जीवनिकी रक्षा करैगा. अर पापी निर्दयी है सो जीवनिकी रक्षा कैसै करेगा? अर ज्ञानी जीवनिनैं जुवांआदि सात विसनका शीघ्रही त्यागकरना जोग्य है. कैसे है सात व्यशन? सकल पापनिकी तो खानि है. अर नरकके मार्गके दिखानेहारे है. इन व्यसननिके त्यागनेतैंही जीवनिका लाभ होय है. सोही नाटक समयसार-विखैं कह्या है. दोहा ॥ जुवा खेलन मांसमद वेस्या विशन सिकार ॥ चोरी पररमणीं रमण सातौं विसन निवार ॥ जातैं व्यसनासक्त जीवनिके दया सांच आदिगुण कबहू नांही होय. तब दया अर सांच विनां मनुष्यनिकै अहिंसादिक व्रत अर उत्तम क्षमादिक धर्म कैसैं उत्पन्न होय? जैसैं जुवाआदि सात-व्यसनका त्याग किया तैसैंही धर्मात्मा पुरुषनितैं अहिंसा व्र-तकी विशुद्धताके अर्थि सकल जगतविखैं निंदनीक जो रात्रि-भोजन ताका भी त्याग करनां योग्य है. जो प्राणनिको त्याग होय तो भलाही होहू, परंतु प्राणीनिकी रक्षावास्ते रात्री भो-जन तो कदाचितही नाही करनो. जातैं जे अग्यानी जीव रात्रिविखैं भोजन करेहै तिनके त्रस जीवनिकी राशीके भक्ष-णतैं मांसभक्षणका त्याग कैसे होय? अर दयाव्रतहूं कहातैं होय? भावार्थ–जानैं रात्रिभोजन किया तानैं तो मांसही भक्षण किया. जातैं अन्यमतविखैं हूं, ऐसा कह्या है. "जो रात्रिविखैं अन्न तो मांस समान है, अर जल रुधिर समान है." तातैं अहिंसादि व्रतनिकी रक्षाकै अर्थि रात्रिभोजनका त्याग अवश्यही करनां. अर अनंतानंत जीवनिके पुंज ऐसे जे आदानैं आदिलेय कंद जिनका औषधिके निमित्त हू ग्रहण नाहीं करनां. कैसे है? समस्त जगतविखैं निंदनीक है. अर

Scanned by CamScanner

मूलिकादिक काहू भक्षण नाहीं करनां. येभी अनेक जीवरासिके पुंज है. जे जीव रसनाइंद्रियके विषयके लोलपी अनंतकाय जे आर्द्रकआदि कंदमूल तिनकूं भक्षण करेहै तिन जीवनिके अनंतानंत जीवरासिका भक्षणतैं दयामयीधर्म कहां है ? हे पुत्रि, अथाणां अर बोरआदि फल बहुरि नवनीत कहिये लूण्यां घृत इत्यादिक जे हैं ते कीडा लटआदि त्रस जीवकरि भरेहैं महा. निंद्य हैं. ते ज्ञानी जीवनिके भक्षण योग्य नाहीं है. सोई समयसार नाटकमैं कह्या है.

कवित्त

वोरा घोलवडा निशिभोजन बहुबीजा बैंगनसंधान ॥
वड पीपल उमर कठूमर पाकरफल जो होय अजान ॥
कंदमूल माटी विष आमिष मधु माखन अरु मदिरापान ॥
फल अतितुच्छ तुषार चलितरस ये जिनमत बाईस अखान ॥

अर असंख्यात बादर सूक्ष्म जीवनिकी हिंसाका कारन अनछान्या जल धर्मात्मा जीवनिके कदेभी पीयवो जोग्य नाही है. कैसा है अनछान्या जल ? बहुत दुःख अर पाप तिनका आकर कहिये खानि है. सोई प्रश्नोत्तर श्रावकाचारमें कह्या है.

चौपई

बिनछान्यो अंजुलि जलपान । इक घटितैं कीनूं जिन न्हान ॥
ता अघको हमनैं नहि ग्यान । जानत है केवलि भगवान ॥

इत्यादि पूर्वे कहे अर बैंगण, मतिरा, कोहला आदि बडे फल असंख्यात त्रस जीवनिकी हिंसाके कारण धर्मात्मा जीवनिनैं अहिंसाव्रतके रक्षाके वास्ते भक्षण करवेजोग्य नाहीं है. अणुव्रती धर्मात्मा पुरुष हितकारी, प्रमाणिक अक्षरकूं लिये, सारभूत, पुण्यका मूल, परजीवनिके श्रवणनिके अतिमिष्ट, अर

Scanned by CamScanner

धर्मकारक ऐसे सत्य वचन बोलैं. अर सत्पुरुषनिकरि निंदनीक ऐसा असत्य वचन नाहीं बोलैं. सत्यवचनका बोलवातैं सत्पुरुषनिकी कीर्ति लोकविषैं फैले है. अर तीन लोककी लक्ष्मी स्वयमेव प्राप्त होय है. अर विवेक कहिये भेदावज्ञान भली बुद्धीका प्रकास होहै. बहुरि सकल लोकविखैं वचनकी प्रमाणता होहै. अर झूंठ वचनका बोलवातैं बुद्धीका नाश होहै. अपजस फैले है. अर सर्व जीवनिके अविश्वासका पात्र होहै. बहुरि राजादिकनितैं हात, पांव, नाक, कान, जीभ आदिका छेदरूप दंड पावेहै. अर अचौर्यव्रतके रक्षाके अर्थी विनादिई अर मार्गमें पडी भूली जाती रही पराई वस्तुकूं काला नागसमान जानि ग्रहण नहीं करनी. हे पुत्रि, परद्रव्यके चोरनेतैं चोर जे हैं ते इस भवविखैं तो वध, बंधन, कर्ण नाशिका छेदनादिक दुःख पावेहैं. अर पापकर्मके उदयतैं परभवविखैं नरकादि गतीनके असह्य दुःख भोगवे है. भावार्थ—माता, पिता, पुत्र, स्त्री, बहन, भाई, सज्जन, परजन, नौकर आदि कोईभी चोरके सहाई नहीं होय है. चोर अकेलाही इसलोक परलोकसंबंधी दुःख भोगवे है. अब चौथा अणुव्रत ब्रह्मचर्य जो अपनी विवाहिता स्त्रीविना समस्त परस्त्रियनकूं मन, वचन, कायकृत, कारित, अनुमोदनाकी शुद्धताकरि माता, बहिन, पुत्रीसमान देखै सो है. कुशील, परस्त्रीलंपट पुरुष इस भवविखैं तो वध बंधन पीलन हस्त कर्ण नाशिकादि छेदन अर धनका क्षय आदि दुःखनिकूं प्राप्त होय है बहुरि परभवविखैं सातवे नरक जाय है. परिग्रह प्रमाण नामा पंचम अणुव्रतकी प्राप्तीके अर्थि लोभरूप वैरीका नाश करि ज्ञानी जीवनिनैं क्षेत्रआदि दशप्रकार बाह्य परिग्रहकी थोडी संख्या करनी.

Scanned by CamScanner

भावार्थ–जेता परिग्रहतैं अपना धर्म सधैं, परिणामनिविखैं आकुलता नाहीं होय, ममत्वका अभाव होय तेता तो अंगीकार करैं. अर अवशेष परिग्रहका परित्याग करैं. हे पुत्रि, कहे जे ए पंच अणुव्रत तिनकूं धर्म अर सुखके अर्थि तूं अंगिकार करि. ग्रहण करि. कैसे है पंच अणुव्रत? इस पर्यायतैं देवलोकसंबंधी सुखनिकै साधक है. अर परंपराय निर्वाण सुखके साधक है. जे सम्यग्दृष्टी ज्ञानी पुरुष सोभायमान सुख अर गुणनिके भंडार ऐसे जे पंच अणुव्रत तिनकूं मन, वचन कायकी सुद्धताकरि पाले हैं. ते भव्य जीव अच्युत स्वर्गपर्यंत अनुपम सुखनिकूं भोगिकरि निरंतर निराकुल सुखनिकी खानि जो पंचमगति कहिये निर्वाण ताहि प्राप्त होय है. भो ज्ञानी पुरुष हो, या भांति जानिकरि सारभूत परमोत्कृष्ट स्वर्गमोक्षसंबंधी सुखके कारन अर जिनेंद्र भगवानकरि कहे ऐसे पंच अणुव्रत तिनकूं सदाकाल आचरण करो. बहुरि धर्मरूप वृक्षके मूलसमान अर तीन लोकसंबंधी सारभूत सुखनिके देनहारे ऐसे पंच अणुव्रतनिका आचरणविना क्षणभंगुर अपनी आयुविखैं एक घटिकामात्रहू हितके अर्थी पुरुषनिनैं वृथा नाहीं गुमावनी. भावार्थ–आयु तो क्षणभंगुर है. तातैं व्रत धारणकरि आयुकूं व्यतीत करैं. सो मनुष्यभव सफल होय देवलोकके सुखपाय कर्मनिका क्षय करि निर्वाणका लाभ होय. तातैं व्रत धारणकरि मनुष्य पर्याय सफल करनी. फिर यह अवसर मिलनेका नाहीं ऐसा उपदेश है.

इति श्रीसकलकीर्तिआचार्यविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृतग्रंथकी देशभाषामयवचनिकाविखैं नागश्रीकैं धर्मका लाभ वर्णन प्रथम सर्ग समाप्त भयो.

Scanned by CamScanner

चौपई.

जे देहै सांचो उपदेश ॥ तिहुजगजनबंधव परमेश ॥
ते सब साधु अमलगुणगेह ॥ देहुं मोहि निजगुणधरिनेह ॥

अथानंतर सो नागसर्म ब्राह्मणकी पुत्री नागश्री, सूर्यमित्र-मुनीके चरणारविंदकूं नमस्कार करि, मुनीके उपदेशतैं सम्य-ग्दर्शनसहित श्रावकधर्मसंबंधी पंच अणुव्रतनिकूं अंगीकार करती भई. व्रतनिकूं ग्रहण करि नागश्री अपने घर जानेकूं सन्मुख भई. तब अवधिज्ञानके बलतैं शुभाशुभ होनहारके जाननहारे ऐसे सूर्यमित्र मुनि नागश्रीकूं ऐसी शिक्षा देते भये. हे पुत्रि, तेरा पिता बलात्कार सर्वथा व्रतनिकूं छुरावेगा तोहू तूं मति छोरयो. कैसे हे व्रत ? देवनिकूंहू दुर्लभ है. भावार्थ—देव-निके कदाकालहू व्रतनिका ग्रहण होय नाहीं. सम्यग्दृष्टी जीव-निके निरंतर ये विचार रहे है. जो हमारे देवपर्यायकी थिति कब पूर्ण होयगी तदि हम मनुष्यपर्याय पाय पंच महाव्रत अथवा अणुव्रतनिकूं धारैं. इहां तो अव्रतसंबंधी महान् घोर दुःख है. अथवा चार गति चौराशीलाख जोनिविखैं भ्रमतैं देवनिके सुखतो अनंतवार भोगे, अर सम्यग्दर्शनसहित व्रतनिका धारन एक वारहू नाहीं भया. तातैं व्रतनिका पावना महान दुर्लभ है. जातैं व्रतधर्मके आचरण करिनेकरि ज्ञानी जीवनिनैं स्वर्ग-मोक्षकी संपदा, अर लोकविखैं मान्यपणा, बहुरि निर्मल जस आदि मनोवांछित सुख पाइए है. अर व्रतभंगसंबंधी अति-पापके उदयकरि अधम नीच मनुष्य इस भवविखैं तो निंदा, क्लेश, आपदाकूं भोगे है. बहुरि परभवविखैं नरक निगोद आदि दुर्गतीकूं प्राप्त होय है. हे पुत्रि, जो तूं पिताके हठतैं व्रतनिके धारण करवेकूं असमर्थ होवै तो इहां आयकैं व्रत मोकूं

Scanned by CamScanner

देइ जाइयो. मोकूं सोंपेवगर अन्यथा व्रतनिकूं मति छोर दीजियो. नागश्रीने कही, हे तात समस्त जीवनिके हितकारी जे तिहारे बचन तिनके अनुस्वारही करूंगी. भावार्थ–भो मुनि जैसे तुमने कही तैसेही करूंगी. ऐसे कही मुनीनके चरणारविंदनिकूं नमस्कार करि अपने घरप्रति गमन किया. तब वै ब्राह्मणनिकी पुत्री जे नागश्रीके साथ नाग पूजनेकूं आ-ईथी ते नागश्रीने व्रत ग्रहणकरि गमन कियाथा ताके पहली शीघ्रही जाय या भांति निंद्य वचन कहे. भो नागसर्म, तेरी पुत्री नागश्री दिगंबर मुनीके चरणारविंदनिकूं नमस्कार करि तिनके पास कितनेक जैनके व्रत अंगीकार किये हैं. तिन क-न्यानके वचन सुणवेमात्रही क्रोधरूप अग्निकरि प्रज्वलित भया है मन जाका ऐसा होयकरि नागसर्म बिरामण, व्रत ग्रहणकरि अपने घर आई जो नागश्री ताहि ऐसा दुर्वचन क-हताभया. हे पुत्रि, तौने बुद्धिकरि दिगंबर मुनीकूं नमस्कार करि व्रतादि ग्रहण किया यह बडा विपरीत काम किया. अ-पनेकूं तो यज्ञकर्मादिकरि वेदविखैं कह्या अर अपने कुलक्रमतैं आया ऐसा ब्राह्मणनिका धर्महीं शीघ्र अंगीकार करना योग्य है. हे भोरी, जीवनिकी दया है प्रधान जामैं ऐसा जिनेंद्रका भाख्या धर्मतैं अंगीकार किया सो धर्म ब्राह्मणनिके कुलविखैं व्रतादिकनिके पालवेकरि करवेकूं अयोग्य है. भावार्थ–जिनें-द्रका भाख्या धर्म जैनी श्रावकनिकेही करवे योग्य है. ब्राह्म-णनिकूं सर्वथा अंगीकार करना जोग्य नाहीं. यांतैं हे पुत्रि, मेरे हठतैं तिन व्रतनिकूं तूं छोर दे. ये व्रत स्वर्ग मोक्षके प्राप्तीके अर्थि वा मुनिहीके करवे योग्य है. हम ब्राह्मण-निके कदेभी करवे योग्य नाहीं है. या भांति पिताके वचन

Scanned by CamScanner

सुनि नागश्री बोली हे तात, अंगिकार किये जे व्रतादिक तिनकूं जे दुर्बुद्धी छोडे हैं तिनका इसही भवविखैं नीचपना निंद्यपना होय है. अर महान् पापकर्मका बंध होय है. अर परभवविखैं पापके उदयतैं चिरकाल दुर्गतिविखैं भ्रमण होय है. तातैं अंगिकार किये जे मुनीके दिये सारभूत और स्वर्गमुक्तीके कारण ऐसे व्रतनिकूं आत्मीक सुखके प्राप्तीके अर्थि कदेभी नाहीं तजूं. यह वचन सुनि पापी नागसर्म महाक्रोधकरि बोल्या, हे भोरी, इन व्रतनिकूं शीघ्रही छोर दे. अर जो नाहीं छोरेहै तो मेरे घरतैं निकसि जाहू. या प्रकार पिताका खोटा हठ जानिकरि अत्यंत दुखथकी नागश्री बोली हे तात, व्रत ग्रहणकरि जब मैं घर आवने लगी तदि मुनिनैं मोहि ऐसे कही है, जो तेरा पिता मेरे दिये व्रतनिकूं छुरावेगा तो तूं इहां आयकरि व्रतनिकूं सोंपि जाइयो. नागसर्म बोल्या ऐसेही हो. जो मुनीने कही सोही करूंगा. ऐसे कही पुत्रीकूं लारे लेय, मुनीकी मुखतैं निंदा करता, दुर्वचन बोलता, व्रतनकूं सोंपवेकौ घरतैं चाल्या. नागसर्मके साथि आवती ऐसी नागश्रीनै, काहू जवान पुरुषकूं बंधनसैं बांधि मारवेके अर्थि ले जायथे ताहि देखि पितातैं पूछी, हे तात यह पुरुष कैसे बंध्या है? अर यानैं कहां अन्याय किया है? तब नागसर्म बोल्या, हे पुत्रि, मै तो नाहीं जानूंहू परंतु कौनसा अन्यायतैं बंध्या है सो कोटवालकूं पूछैं. तब पुत्रीसहित नागसर्म ब्राह्मण कोटवालके समीप जाय कोतवालकूं पूछी. अहो कोतवाल, यह पुरुष कौन अपराध करि बंध्याथका दुःख भोगे है? कोटवाल बोल्या, याही चंपापुरीविखैं अठारा कोड दीनारका धनी देवदत्तनामा सेठ, ताके समुद्रदत्तानामा स्त्री, अर वसुदत्तनामा एकही यह पुत्र, जुवाआदि

Scanned by CamScanner

सप्त व्यसनका सेवनेहारा सो आज धूर्तनामा जुवारीतैं जुवा खेलि सीघ्रही लाख दीनार हारी. तब धूर्तनामा जुवारी हठ. थकी शीघ्रही या दुरात्माके निकट अपनां जीत्या धन लक्ष दीनार मांगी. तब यो निर्दयी वसुदत्त क्रोधायमान होय छुरीके प्रहारतैं धूर्तनाम जुवारीकूं माऱ्या. अहो नागसर्म, या वसुदत्त दुष्टनैं दोय अपराध किये. प्रथमतो जुवा खेलि पीछे धूर्तनामा जुवारीके प्राण हने. तदि राजा याका सकल धन खोसि मा. रवाकी आज्ञा दई है. तातैं यह वसुदत्त बंधनमैं बंध्या महा. घोर दुःख भोगवे है. ऐसे कोतवालके वचन सुनि नागश्री बोली, हे तात प्रत्यक्ष देखि. हिंसाके आचरण करवेकूं इसही भवविखैं वध कहिये प्राणनिका घात, बंधन कहिये सांकल, बेडी, तोष जंजीरादिकनिके तीक्ष्ण बंधन, अर कर्शन अर हांत पांव कर्ण नाशिकादिकका छेदन इत्यादि घोर दुःख पाइएहै. अर पर. भवविखैं जे दुःख भोगवै तिनकूं कौन कहिसकैं ? इसवास्तैं मैंने मुनीके निकट हिंसाको त्याग करि अहिंसाव्रत ग्रहण कियो है सो इस व्रतकूं कैसे छोरूं ? कैसा है अहिंसा व्रत ? तीन जगतविखैं सारभूत जे इंद्र अहमिंद्र नरेंद्रआदि उच्चपद ति नका देनहारा है. तदि नागसर्म ब्राह्मण बोल्या, हे पुत्री, एव यह अहिंसाव्रत तो रहो, परंतु और व्रत सोंपवेकूं तो मुनीके निकट जांहि. तब आगैं जातैं कोउ और स्थानकविखैं औंधे मुख लटकता कोई पुरुष जाके वदनविखैं सूलनके प्रहारकरि ताकूं कोतवालके किंकर मारतेथे. सो देखि नागश्री अपने पिताकूं पूछी, हे तात, ये पुरुष ऐसे महानघोर प्रचंड दुःखनिकूं कैसे प्राप्त भया ? तब नागसर्म बिरामण बोल्या हे पुत्री, एक वज्रवीर्यनामा राजा चतुरंग सेनासहित अंगदेशकी सीवविखैं

Scanned by CamScanner

आय मुक्काम किया. और अपने इष्टकी सिद्धिके अर्थ वचना-
लापविखैं प्रवीण और विचक्षण ऐसे अपने दूतकूं यह चंपापु-
रीका राजा चंद्रवाहनके समीप भेज्या. सो दूत आय राजाकूं
प्रणाम करि बिनती करताभया. हे राजन्, मेरे वचन सुनो.
मेरा स्वामी राजा वज्रवीर्य कुशलक्षेम पूछि तुमपैं यह आग्या
करेहै कि मेरी सेवा करि. अर जो सेवा करिवो तोहि मुना-
सिब नाहीं है तो मोतैं युद्ध करि. अर जो युद्ध करना भी तोंहि
कबूल नाहीं तो सर्वस्वकरि पूर्णभंडार चंपापुर नगर देहु.
यह वचन सुनि राजा चंद्रवाहन बोल्या, रे दूत, जाहु जाहु !!
आजही रणभूमिविखैं तेरा स्वामीका प्रताप देखिवेकूं तिष्ठू हूं.
या भांति कहि दूतकूं विदाकरि चतुरंग सेनासहित बलनामा
सेनापतिकूं, वज्रवीर्यकूं संग्रामके अर्थि, पठाया भेज्या. सो बल-
नाम सेन्यापति प्रचंड पराक्रमी चंद्रवाहन राजाकी आज्ञातैं
महान चतुरंग सेनासहित जाय वज्रवीर्य नृपतैं भयानक संग्रा-
मका आरंभ किया. कैसा है संग्राम ? कायर पुरुषनिकूं भयका
दायक है. तहां दोन्यूं सेन्याके महाघोर संग्राम होतैं यह तक्ष-
कनामा सुभट चंद्रवाहनका अंगरक्षक मरणके भयतैं भागि
यहां आय चंद्रवाहन नृपकूं ऐसे झूटे वचन कहे. अहो देव,
अहो राजन्, राजा वज्रवीर्य संग्रामविखैं बलनामा सेन्यापति-
सहित हाथी घोडे वस्त्र आदि सारभूत वस्तु ग्रहण करलई. यह
वचन तक्षकनामा अंगरक्षक सुभटके सुनि राजा हृदयविषैं
अत्यंत खेद खिन्न भया. अर बलनामा चंद्रवाहन भूपका से-
नापति महाघोर संग्रामविखैं बलात्कार बरजोरीतैं पकडीकरि
वज्रवीर्यराजाकूं दृढबंधनतैं जकरबंध करि चंपापूरप्रति प्रयाण
किया. ता अवसरविखैं विजयकरि आया जो सेनापति ताके

Scanned by CamScanner

वादित्रनिके सब्द सुनि, अर सेन्याके क्षोभका आडंबर देखि यह जानीके, वज्रवीर्य राजा सेन्यासहित संग्राम करवैकूं इहां आया. तब चंद्रवाहन नृप सेन्याकू सजि संग्रामके अर्थि उद्यमी भया. गढकी रक्षापै इतबारी बहुत सुभटनिकूं राखि अर नगरके दरवाजे बंध करि आप हातीपै सवार होय संग्रामके अर्थि सेन्यासहित नगरके बाहर तिष्ठ्या. बलनामा सेन्यापति चंद्रवाहनकूं खेदखिन्न स्वरूप देखि आप अगाऊ आय राजाकूं प्रणाम करि नगरके द्वार खुलाये. ता पीछे भूपेंद्रसहित राजमंदिर आय बहु प्रणाम करि वज्रवीर्यकूं अर्पण किया. तब राजा अत्यंत हर्षायमान होय सेनापतिकूं बडी संपदासहित नगर गाम दिये. अर वज्रवीर्यकूं छोर वस्त्राभूषण देय अमृत समान मीठे वचन निकरि संतोष उपजाय ताके देशप्रति पठाया. हे पुत्री, वज्रवीर्य नृप गये पीछै सुखसैं तिष्ठता राजा चंद्रवाहन इस तक्षकनाम सुभटने पूर्व कहे जे झूट वचन तिनकूं चितार महान कोपायमान होय तांहि मारनेकूं कोतवाल प्रति ऐसी दुष्कर आज्ञा दई है. भावार्थ—या सुभटने झूटे वचन बोले तातैं याकी ऐसी अवस्था भई है. यह वचन नागसर्मके मुखतैं सुनि नागश्री बोली, हे तात, जिस असत्य वचनकरि इसही भवविखैं महाघोर दुःख पाइयेहै तो मैने असत्य वचन बोलनेका त्याग और सत्यव्रतका अंगिकार योगीश्वरके पास किया है तांहि मैं कैसे छोरूं? कैसाहै सत्यव्रत! इस भवविखैं तो पूजा, सत्कार, लोकविखैं मान्यता, विश्वास, यश, इत्यादि सुखनिका कारण है. और परभवविखैं स्वर्गमोक्षका दाता है. सारभूत है. ऐसे नागश्रीके वचन सुनि नाग-

Scanned by CamScanner

सर्म पुरोहित बोल्या, हे पुत्री, यह सत्यव्रतभी रहो, परंतु और व्रत तो चालकरि जतीकूं सोंपैं.

तावर पीछैं आगैं जातैं कोऊ और प्रदेशविखैं एक पुरुष सूलीविखैं पोया हुवाथा. तांहि देखि करुनाकर नागश्रीनैं अपने पिताकूं पूछी, हे तात, यह पुरुष काहेके अर्थी निग्रह जोग्य भया है? तब नागसर्म बिरामण बोल्या हे पुत्री, मैंने तो ज्ञान नाहीं. तूं चाल कोटवालनैं पूछैं. या भांति समीप जाय पुत्रीके हठतैं कोटवालकूं पूछी, अहो चंडकर्मन, इस पुरुषनैं कहां अन्याय आचरण किया है? तब नागसर्मके प्रश्नतैं कोटवाल बोल्या, याही चंपापुरीविखैं महाधनवान वसुदत्तनामा राजश्रेष्ठी ताके वसुमतिनामा सेठाणी तिनके रूपादिक गुणनिकरि शोभायमान वसुकांतानाम पुत्री भई. एकदिन सर्पकरि डशी वसुकांता महाविकराल विषकरि आकुल मृतकसमान मूर्च्छित भई. तब सेठने पुत्रीकूं मरगई जानि सज्जनपरयनसहित स्मसान भूमिविखैं दग्ध करवेकूं प्राप्त करी. तहां चिताविखैं मेलनेके अवसर वसुकांताके पुण्यके उदयतैं कोईयेक वणिक्पुत्र गरुडनाभि है नाम जाका, रूपवान्, यौवनवान्, गारुडविद्याविखैं महाप्रवीण, नाना देशनविखैं विहार करतो तहां आय, वसुकांताकूं अतिरूपवान् देखि, वसुदत्त शेठकूं प्रगट याभांति कहता भया. भो श्रेष्ठिन्, जो इस पुत्रीकूं मोहि विवाहिदे तो मैं वसुकांताकूं जीवाय द्यूं. तदि गरुडनाभिका स्वरूपकूं विचारि वसुदत्तशेठ ताकूं बोल्या, भद्र, मैं मेरी पुत्री तोकूं ही देऊंगा, तूं वानैं शीघ्रही जीवाय दे. गरुडनाभि बोल्या, इस रात्रीविषै तो हर्षसहित बडा जावतातैं जतनसौं चौकस करो. प्रभातही वसुकांताकूं निर्विष कहिये विषरहित करूंगा. तब वसुदत्तशेठ

Scanned by CamScanner

हजार हजार दीनारनकी चार पोटली बांधि समसानविखें वसुकांताका विमानकै समीप धारण करि मेलिकरि, चार सुभटनिकूं बुलाय पुत्रीकी रक्षाके अर्थि कहता भया. भो सुभटहो, इस वसुकांताकी बडी चौकसतैं बहुत सावधानीतैं चार प्रहर रात्रीपर्यंत रक्षा करो. प्रभात तुमकूं एक एक हजार दीनार चूंगा, यामैं कछुभी संसय नाहीं जानहू. या भांति वह चारौं सुभट हजार हजार दीनारनके लोभतैं वसुकांताका विमानकी रक्षा करते रात्रीविखैं समसानमै खडे रहे. अर सेठ आदि सर्व मस्तजन आनंदसै अपने अपने घर गये. दूसरे दिन प्रभातही गरुडनाभि गारुडी शीघ्र आय मंत्रसक्तीके प्रयोगादिकरि वसुकांताकूं विषरहित करी. तब वसुदत्तशेठ अति आनंदकूं प्राप्त होय करि अपनी पुत्रीकूं विवाहकी विधिकरि प्रीतसहित गरुडनाभिके अर्थि दिई. अर बहुत संपदा दिई. अथानंतर दीनारनिकी चारौं थैल्यानिके मध्य एक थैली चोरीमें गई, अर तीन थैली रही. तिनकूं देखि मीठे वचननिकरि चारौं सुभटनिकूं सेठ कहता भया, विमानके समीपतैं जा सुभटनैं एक थैली ग्रही तानैं तो हजार दीनार लईही. और तीन थैली हजार हजार दीनारकी है तिनकूं भो चारो सुभटहो, अबार तुम ग्रहण करो ये वचन सुनि चारूं ही सुभट सेटप्रति बोल्या, हमनैं तो तुह्मारी थैली नाहीं ग्रही. ऐसे कहिकरि थैली लेनेकी हामलि काहूनैंभी नाहीं भरी. तब सेठ शीघ्रही चंद्रवाहन राजाके निकट जाय प्रगट कहता भया. हे राजन्, एक हजार दीनारकी एक थैली ह्मारी चोरीमे गई. ए वचन सुनि राजा चंडकीर्ति कोटवालकूं कहता भया, रे दुरात्मन्, रे चंडकर्मन्, मेरे समीप सीघ्रही चोरकूं ल्याय. अर जो चोरकूं नांही ल्यावैं

तो तेरो मस्तक देहि. ये वचन सुनि कोटवाल बोल्या, हे नाथ, जो पांच दिनके अंतर चोरकूं नांही अर्पण करूं तो आपकी इच्छा होय सोई करियो. ये वचन सुनि राजा चंद्रवाहन पांच दिनकी मर्याद चोर ल्यानेकी मानी. तब चंडकीर्ति कोटवाल चोरके हेरणेके अर्थि चिंतानैं प्राप्त भया संता तिन चारौ शुभटनिसहित अपने घर गया. तहां महारूपवान सुमति नामा कोटवालकी पुत्री वेश्या, पिताकूं चिंतातुर देखि पूछती भई. कैशी है सुमति ? वेश्यातैंभी अत्यंत प्रवीण है बुद्धि जाकी. भो तात, तुम चित्तविखैं चिंतातुर कैसे हो ? चिंताका कारण मोहि कहो. मैं समस्त चिंताको दूर करवेकूं समर्थ हौं. तब चंडकीर्ति कहता भया, इन चारौ सुभटनिकै मध्य कोई एकनैं हजार दीनारकी एक थैली लिई है, अर राजा चंद्रवाहन मेरा निग्रह करेहै. ऐसे चंडकीर्ति कोटवालके वचन सुनि सुमति बोली, हे तात, तुम तो चिंतारहित निश्चिंत रहो, मैं आजही चोरका निश्चय करि तोहि सोपोंगी. तावर पीछैं कोटवालकी पुत्री सुमति तिन सुभटनिकूं भोजनादिक देय बोली, अब तुम चारौंही पांच दिन तो इहां तिष्टो; ऐसे कहि बंदोबस्तके स्थानविखैं मंचकादिक देय वचनकी चातुर्यतातैं तिनके मनकूं भेदने लागी. चारू सुभटनिकूं भूमीपर बैठाय विकारसहित चेष्टा करि या भांति बोलि, तुम चारनिके मध्य काहू येकपैं मै आसक्त भई हौं. परंतु मेरे चित्तविखैं यह संशय वर्ते है. भो सुभट हो थाके निकट धरी थैलीकूं चोर कैसे चोरलेगया ? अर तहां तुम कहा कर्तव्य करते तिष्टेथे ? यह मेरे कौतुक है. तब तिनि चारनिके मध्य एक सुभट बोल्या, हे सुमते, मैतो इन तीनूंकूं कहिकरि पहिली रातिविखैं हर्षसहित वेश्याके घर गया. अर

Scanned by CamScanner

पिछली पहरमे शीघ्रही इहां आया. तब दूजा कही मैंभीयाके पीछैंही आवैथा. अर एकली रंडीकूं छोरकरि रात्रीविखैं ही तहां आय गया. तब मोनैं आये पहली तहां कहां वृत्तांत भया सो मैं नांही जानूंहूं. कोई विश्वासघाती दुराचारी दुष्ट यह अकृत्य किया है. तब तीसरा सुभट कही हे वत्से, हे पुत्री, मैं तो मेढिका जो लिरडी ताकूं पिसित कहिये मांस करताथका वहां तिष्टैथा. तब तहां कहा वृत्तांत भया सो मैं नाहीं जानूंहूं. तब चौथा पुरुष बोल्या, मैं तो नेत्रनिकरि मुरदेकूं देखता रह्या मेरे द्रव्यविखैं कछुभी चिंता नाहीं है. भावार्थ–मेरी दृष्टी तो केवल मुरदापैंही रही. धनकी मोहि खबरि नहीं. या भांति चारू पुरुषनिके बचन सुनिकरि संसयसहित चोरकूं जानि बहुरि चोरके निश्चयके अर्थि ऐसे कहती भई. कैशी है सुमति ? कुटिल कहिये वक्र मायाचार सहितहै आसय कहिये अभिप्राय चित्त जाका. इस दीनारकी थैली चोरी जाके विखैं तुम चारनिका तो दोष नाहीं है. भावार्थ–तुम चारनिविखैं तो थैलीका चोर कोऊभी नाहीं है. परंतु अब मेरे नयननिविखैं निद्रा प्रवर्ते है तातैं आलस्य निद्राका विनासके अर्थि तुम कोई एक कथा कहो. तब सुभट बोले हे सुमते, हमतो कोऊभी कथा नाहीं जानेहै तूही कहे. तब सुमती बोली, हे सुभट हो, तुम सुनो मै कथा कहूंहूं.

पटनाविखैं धनदत्तनामा वैस्यके सुदामा नामा कुमारी कन्या थी. सो एक दिन अपने घरके पिछाडी उद्यानविखैं सरोवरमैं पाव धोनेकूं पैठी हुती. तहां तुरतही ग्राहनैं पांव पकऱ्या. तदि अति भयाभीत होय धनदेव नामा अपना जीजाकूं देखिकरि बोली, हे धनदेव, इहां बरजोरीतैं ग्राह मोहि पकरे है सो तूं शीघ्रही

Scanned by CamScanner

छुराय. तव धनदेव कौतूहल हास्यकरि कही जो तू मेरा कह्या करै तो मैं तोहि छुराऊं. तब सुदामा बोली तूं कहां कहे है? धनदेव कही विवाहके दिन रात्री विखैं लग्नकाले कहिये फेराके अवसर वस्त्राभरण सहित मेरेपास आवे तो तोहि छुराऊं. अन्यथा नांहि छुराऊं. तब सुदामा बोली, जैसे तूं कही तैसेही करूंगी. धनदेव कन्याका वचन लेय दाहिने हाथ पकरि बलातकारैं बरजोरीतैं ग्राहथकी कन्याकूं छुरावता भया. तहां अनुक्रमतैं सुदामा विवाहके अवसरकूं प्राप्त भई. तब अपने विवाहके दिनविखैं धर्महस्तमोचनाय कहिये वचनके छुरायवेके अर्थि धनदेवके दुकानप्रति अंधेरी रात्रीविखैं सुदामा कुमारिकानै घरतैं गमन किया. सुदामाकूं जावती देखि मार्गमैं कोई चोर खरी राखि कहता भया, हे कन्ये, अपने आभरणादिक मोहि दे दे. कन्या बोली. आभरणसहित मोही कहूं जाना है, तातैं आवनेके अवसर समस्त आभूषण तोहि द्यूंगी. तूं कछुभी संसय मति जानैं. या भांति कहिकरि चोरकूं वचन देय आगैं चाली. अर चोरभी अदृश्य होय कौतूहलतैं कन्याके साथि लाग्यो. आगैं मार्गविखैं कोईक राक्षस कन्याकूं देखि बोल्या, भो कन्यके, तूं अपने इष्ट देवतानिकूं स्मरण करि, जातैं अबही मैं तोकूं निगलूहूं. कन्या बोली, भो सुर, भो राक्षस, मैं प्रतिज्ञा लेयकरि कहूं जाऊं हूं. तातैं आगमनके कालबिखैं तेरी इच्छा होय सो करियो. ऐसे राक्षसकूंभी धर्म देय कन्या आगैं चाली. अर राक्षसभी प्रतिछन्न वृत्तिकरि कन्याके खोजां खोजां चाल्यो. आगैं चालतैं कोई एक कोतवाल कन्याकूं खडी राखी. तब कोटवालकूं भी धर्म देय सत्यवचन बोलनेवारी कन्या आगामी गमन किया. तब निर्विघ्नपनेंकरि समस्त आभूषण-

Scanned by CamScanner

निकरि भूषित सुदामा कन्या अपना वचन छुरायवेकेअर्थि अंधेरी रात्रिविषैं धनदेवकी दुकान पोहोंची. रात्रीविखैं एकाकी आई जो सुदामा ताहि देखि महा प्रवीण बुद्धिवान् धनदेव, जो मन वचन काया करि परदारातैं पराङ्मुख है, सो बोल्या, हे भोरी, अबार तूं अंधेरी रात्रीविखैं क्यौं आई है? भो कन्ये, लघुसाली मेरे पुत्री है. अर मेरे समस्त परदारा भगनी कहिये बहेन समान है. भावार्थ–तूं तो लघुसाली है सो पुत्रीसमान है. परंतु एक विवाहिता स्त्री टार समस्त स्त्री है सो माता, बहेन, पुत्री समान है. काहू प्रकारभी पररमणीकी वांछा नांही है. अर मैंने तो पूर्वे हास्य कौतूहलकरि वचन कह्याथा. अन्यथा ऐसे पाप बंधके कारण निंदित वचन काहेकूं उच्चारता? जातैं पर-दारा करि सहित आसक्तपनाकूं प्राप्त भये ऐसे पापी दुराचारी मनुष्य पापकर्मके उदयतैं इस भवविखैं वध, बंधन, अपघात मरण आदि दुःखनिकूं पायकरि सप्तम नरक विखैं परे है. तहां सागरपर्यंत असंख्यात काल अति दारुण घोर दुःख सहे है. तातैं हे कल्याणरूपिणी, अब तूं अपने घर जाहु. ऐसी उक्ति करि धनदेवके रहित भई सुदामा जा मार्ग विखैं गईथी ताही मार्गविखैं उलटी आई. तब वे चोर, राक्षस, कोटवाल तीनूं पुरुष सुदामाकी सांच देखि बोले, भो कन्ये, तूं महासती मोकूं तो मातासमान है. ऐसे कहकरि हर्षसहित धर्मवचन छोरे. तब वे कन्या पुण्यके उदयतै अपने घर आई. यह कथा कह-करि कोटवालकी पुत्री सुमती तिन चारौ सुभटनिकूं पूछती भई, भो सुभट हो, तिन चारू पुरुषनिकेमध्य श्रेष्ठ कौन है सो मोकूं कहो. सुमतीका वचन सुनि लिरडीका चोर तिस चोरकी प्रशंसा करी. अर मांस करनेवारा सुभट तिस राक्षसकी प्रशंसा

Scanned by CamScanner

करी. मृतककी रक्षा करनेवारा सुभट कोटवालके साहसकी प्रसंसा करी. वेश्याका पति धनदेवकी प्रशंसा करी. या भांति चारोंका अभिप्राय जानि चोरकूं हर्षसहित निश्चयकरि तिन चारनिकूं अपनी सज्यातलकूं सीख देय आप हर्षसहित निद्राका सेवन करती भई. कैसी है सुमति ? निश्चित जान्या जो चोर ताकरि बहुत हर्षसहित है अंतरंग जाका.

दूजे दिन जा दुरात्मानैं चोरकी बडाई करी थी, ताहि बुलाय अपनी सय्यापर बैठाय कहती भई. भो सुभट, मै तेरे ऊपरि अनुरागिणी भई हूं. परंतु मेरा पिता एकाकी पुरुषकरि सहित मोहि इहां नाहि रहने दे है तातैं आपा दोऊ तुरतही देशांतर विखैं चालैं. ये बैन सुनिकरि लिरडीका चोर सुभट कही बहुत भले है. तब सुमति बोली हे सुभट, तहां देशांतर मैं भोग सामग्रीनविखै द्रव्यकरि मनोरथ सधेगा. ऐसे कहकरि अपनी एक थैली दीनारनकी चोरके आगे स्थापनकरि अति प्रवीणताकरि ताहि पूछती भई. एता द्रव्य तो मेरेपास था सो तोहि प्रगट दिखाय दिया; परंतु तेरेपासभी कछु धन है कि नाहीं है? तब चोर सुभट कही धन तो मेरे घर बहुत है, इहां तो एक हजार दीनारनकी थैली मेरे हात है. ऐसे कहिकरि ताहि समय जो अपने हाथ थैलीथी सो सुमतीकूं प्रत्यक्ष दिखावता भया. तब सुमती थैलीकूं लेयकरि तस्कर सुभटकूं कही तुम अपने सयनके स्थानकू जाहु, प्रातःकालही आपां मनोहर पांचो इंद्रीनके विषयसुख भोगनेके अर्थि देशांतर चलेंगे. या भांति कहिकरि सुभटकूं सीख देय हर्षसहित अपने पिताकूं थैली सोंपि कोटवालकी पुत्री सुमति तीसरे दिन

Scanned by CamScanner

प्रगट चोरकूं दिखावती भई. तब कोटवालभी चोरकूं पकरि सीघ्रही चंद्रवाहन राजाकी भेट किया.

भो नागसर्म, राजा महाक्रोधायमान होय याके निग्रह करनेकी यह दुष्कर आग्या दई है. यह वचन कोटवालके मुखतैं सुनकरि पापकर्मतैं भयभीत ऐसी प्रोहतकी पुत्री नागश्री अपने पिताकूं यह प्रगट वचन कहती भई. भो तात, जो चोरीके आचरण करि वध, बंधन, समस्त द्रव्यका नास कुटुंबका क्षय आदि दारुण दुःख पाईयेहै, तातैं योगीश्वरके निकट विना दई पराई वस्तुका है त्याग जामैं, अर सारभूत सुखनिकी खानि, ऐसा अचौर्य व्रत मैंने अंगिकार किया है, ताहि कैसे छोरू? नागसर्म बिरामण बोल्या हे पुत्री, एक यहभी सारभूत उत्तम व्रत तेरे रहो, परंतु और दोय व्रततो मुनीके दिये मुनीकूं सोंप देवैं.

याभांत जीवनिकी हिंसा करने तैं, झूंठ वचन बोलनेतैं अर चोरीके करने तैं धनका नास, प्राणनिका नास, अपयसका होना आदि नाना प्रकारके दुःखनिकूं प्राप्त भये ऐसे पुरुषनिकूं मार्गविखैं अवलोकन करि नागसर्म प्रोहितकी पुत्री दुःखनितैं भयभीत होय व्रतनिके पालन करनेविखैं अत्यंत तत्पर भइ ऐसे जानिकरि भो ज्ञानीजनहो, आत्मिक सुखके प्राप्तीकेअर्थि अतिचाररहित निरंतर व्रतनकूं धारण करो, व्रतनिके धारनेविना अव्रतविखैं एक घटिका मात्र भी काळ वृथा मति गमावो, ऐसा उपदेश है. सम्यक्ग्यानी पुरुषनिकरि वंदनीक अर शुद्धात्माका अनुभवतैं स्वर्गमोक्षके साधन करनहारे अर तीन लोकमैं भव्य जीवनिकौं संसारसमुद्रके तारबेविखैं अत्यंत प्रवीण अर आप संसारसमुद्रके पारकौं प्राप्त भये ऐसे

Scanned by CamScanner

जे मुनिपुंगव दिनदिनप्रति भव्य जीवनिकूं स्वाधीन निराकुल सुखके अर्थि सारभूत पंच महाव्रत पंच अणुव्रत अर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र सम्यक्तप इनका अमृतसमान मधुरवचनकरि उपदेश देहैं ते मुनिराज धन्य हैं.

इत्याचार्य श्रीसकलकीर्तिविरचिते सुकुमालचरित्र संस्कृतग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखैं हिंसा झूंट चोरीतैं उत्पन्नभये जे प्रत्यक्ष दुःख तिनकूं प्राप्त भये ऐसे जे मनुष्य तिनकी कथाका हैं वर्णन जाविखैं ऐसा द्वितीयसर्ग समाप्त भया.

चौपई

दरशन ज्ञानचरण तप सार,
धरम अमोलिक मणिदातार ॥
संतनिकूं सुरशिवसुख हेत,
नमूं तपोधनभाव समेत ॥ १ ॥

अथानंतर आगैं गमन करती नागश्री, मार्गविखैं कटेहै काननाक जाका, अर पुरुषके मस्तककरि वंध्याहै कंठ जाका, महान् दुःखित ऐसी नारीकूं अन्य स्थानविखै, देखि पिताकूं पूछी, हे तात, इस नारीकी ऐसी निंद्य अवस्था कौनसा अपराधकरि भई ? तब नागसर्म कही याही चंपापुरीविखैं मभस्यनामा वैश्य ताके जैनी नामा स्त्री तिनके दोय पुत्र भये. बडाका नाम नंद छोटाका नाम सुनंद. अर याही नगरीविखैं जैनीका भाई सुरसेन वैश्य ताके मदाली नामा पुत्री थी. एक दिन नंदनामा वणिकपुत्र द्वीपांतरकू गमन करता थका अपना सूरसेन मामाके निकट जाय ऐसे वचन कहे, हे मामा, मैं द्वीपांतरकूं जाऊंगा. सो यह महारूपशालिनी तेरी पुत्री मदाली

Scanned by CamScanner

मोकूंही दीज्यो. अर जो तूं अन्य वणिक्पुत्रकूं देवेगा तो तोहि राजाकी दुहाई है. तब सूरसेन कही, हे वत्स, कालकी मर्यादाकरिकै द्वीपांतरकूं जाहु. तब अपने आगमनके कालकी बारह वर्षकी मर्यादा करि नंदनामा वणिक्पुत्र द्वीपांतर प्रति गमन किया. अर बारह वर्ष उपरांति छह महिने व्यतीत भयेभी नंद नाही आया. तब सूरसेनने नंदका छोटा भाई सुनंदकेअर्थि अपनी पुत्री मदाली देनी करी. दोऊनके रमणीक मंदिरनविखैं बडी विभूतकरि विवाहसंबंधी उत्सव होने लगे. अर लग्नके पांच दिन अवशेष रहे तदि वणिक्पुत्र नंद द्विपांतरतैं आय मदालीका वृत्तांत जानि मधुरबचन करि सज्जन परिजनकू कहता भया. अहो सज्जनपरिजनहो, जो सूरसेन आदि तुम समस्त इस मदालीकूं सुनंदकेअर्थि देनीकरी सो छोटा भाई सुनंदकी स्त्री मदाली मेरे पुत्रीसमान है; तुम भलेही सुनंदकूं परनावो. ऐसे आग्या देय बडा भाई नंद तो फिर द्वीपांतरकूं गया अर नंदका छोटा भाई सुनंद मदालीकूं बडे भाईकी वियोगिनी जानि समस्त सज्जनपरिजनकूं प्रगट कही, जो यह मदाली बडे भाई नंदकी नियोगिनी मेरे माता समान है तातैं मैं याहि न परनूं. तुम अन्य वणिक्पुत्रकूं भलेहि परनावो. मेरे काहूतैंभी ईर्षा नाहीं है. याभांति नंद सुनंद दोऊ भाईनकरि तजी ऐसी मदाली कुंवारीहि यौवनकूं पाय अपने घरविखैं तिष्टी. अर सूरसेनका घरकेनजीक अन्य घरविखैं कुबुद्धी नागचंद्रनामा वैश्य रहै. ताके बारह प्राणप्रिया अर बारहकोटि दीनारका धनी सो पापी दुराचारी पापकर्मके उदयतैं पापकर्मके उदयकरि कुंवारी मदालीविखैं अति आसक्त भया. घने दिन वा दुराचारीको व्यभिचार गुप्त च-

लतोथो सो स्वयमेव प्रगट हो गयो. अहो नीच पुरुषनिका छिप्या हुवा महान् पाप पृथ्वीविखैं प्रगट होजायहै. भावार्थ–नीच पुरुषके अपने मनमें यह विचार रहेहै कि मेरा अकृत्य कोईभी नही जानेंगे. परंतु पापकर्मके उदयकरि स्वयमेव प्रगट होजायहै. सो अत्यंत पापकर्मके उदयकरि समस्त लोकनिके कहनेतैं दुराचारीका व्यभिचार नगरमैं विख्यात भया. यह पापी दुराचारी नागचंद्र कंवारी मदालीविखैं आसक्त भया निरंतर तिष्टेहै. ऐसे सुन चंडकर्म कोटवाल तिनके कुकर्मकी परीक्षाकरि दोऊ अनाचारीनकूं पकरे. तब राजाकी आज्ञातैं वध बंधन अंगछेदन प्राणहरण आदि घोर दुःखनिकूं यह दोऊ मदाली नागचंद्र प्राप्त भये है. यह वचन पिताके सुनि नागश्री बोली, हे तात, जा शीलव्रतविना इसभवविखैं ऐसे घोर क्लेश पाइयेहै तातैं महान् पुरुषनिके समीप मैने शीलव्रत अंगिकार किया है सो शीलव्रत कैसे छोरिये? कैसा है शीलव्रत? समस्त दोषनिकरिरहित निकलंक है. अर तीन जगतविखैं पूज्य है. भावार्थ–शीलवान् स्त्रीपुरुषनिके चरणकमलकूं इन्द्र नरेंद्र नागेंद्रादि समस्त देव मनुष्य निरंतर पूजे है. नागसर्म कही, हे पुत्री, तेतैं सारभूत यह शीलव्रतभी रहौ परंतु और एक व्रत तो मुनीकेपास सौंपनेकूं चालैं.

तहांतै आगैं आवतैं मार्गविखैं कोटवालके किंकरनकरि मारवेकूं प्राप्त किया अर पांवतैं लेय कंठपर्यंत दृढ बंधन करि बंध्या ऐसा जो कोऊ एक पुरुष तांहि देखि नागश्री अपने पिताकूं पूछी हे तात, यह दृढ बंधनतैं बंध्या पुरुष कौन है? अर कौनसे निंद्य कर्मकरि ऐसी घोर दुःखकी अवस्थाकूं प्राप्त भया है सो मोहि कहो. नागसर्म बोल्या, हे पुत्री, यह महालोभी

Scanned by CamScanner

अर क्षीरभोजी ऐसा वीरपूर्ण नामा मनुष्य नृपके पट्ट घोरेनके
निमित्त घांसकी रक्षा करता थका एकदिन घांसके बीडविखैं
प्रवेश किया. अर काहूका गोधन वहांथा सौ लायकरि राजाकूं
नजर किया. तब राजा हर्षायमान होयकरि कही, यह गोधन
तूंहि ग्रहण करि. सो वा गोधनकूं ग्रहणकरि पापकर्मके उदयतैं
यानैं अति लोभ ग्रहण किया. राजानै मोकूं यह वर दियाहै
जो मेरे देशविखैं श्रेष्ठ गोधन है ताहि तूं ग्रहण करि. ऐसे
कहिकरि देशके समस्त लोकनिके श्रेष्ठ गोधन ग्रहणकरि अति
लोभाकुल भयासंता पट्टराणीकी भैंसनिकूं ग्रहण करी. तहा म-
हादेवीनैं या दुराचारीका सकल देशका गोधन ग्रहण आदि
अपनी महिषीनका ग्रहण करणापर्यंत कुलोभसंबंधी दुराचारीका
समस्त वर्णन चंद्रवाहनप्रति निवेदन किया. तब राजा महा
क्रोधायमान होय अत्यंत लोभतैं संचय किया जो पापकर्म ताके
उदयके निमित्ततैं अतिलोभी इसपापीके मारनेकी आज्ञा सीघ्र-
ही कोटवालप्रत दईहै. यह बचन पिताके सुन नागश्री बोली,
हे तात, परिग्रहके लोभतैं लोभी जीवनिनैं इस भवविखैं ऐसे
घोर दुःख पाईएहै, तो लोभरूप वैरीके विनासके अर्थि दिगंबर
मुनीके समीप परिग्रहका प्रमाण किया है तातैं इस व्रतकूं मैं
मरण होतेभी तजूं नाहीं. नागसर्म बोल्या हे पुत्री, यहभी सार-
भूत व्रत तेरे रहो, परंतु जाय करि वा दिगंबर मुनीका तिर-
स्कार करि आपां दोऊ सीघ्रही आजावेंगे. ऐसे कहिकरि नाग-
सर्म ब्राह्मण नागश्रीसहित वनमैं जाय मुनिपुंगवकूं देखि दूरही
खरारहि या भांति कठोर बचननिकरि तिरस्कार करता भया,
हे दिगंबर तूं मेरी पुत्री नागश्रीकूं दया आदि पंच प्रकारके
व्रत कैसे दिये? हमारे कुलविखैं ब्रह्मा, विष्णु महेशकरि कहे

Scanned by CamScanner

प्रदोषादिक व्रत प्रसिद्ध है. अरे दिगंबर, अरे मोहि कहतो सही; ब्राह्मणनिकी कन्याको व्रत देनेका अधिकार तेरा कहा है? यह विचार नीकैं करि. भावार्थ—हम राजमान्य उत्तम ब्राह्मण है. सबनिके गुरू है. हमतै बडा ऐसा कौन है जो हमकूं वा हमारे पुत्रादिककूं व्रत ग्रहण करनेकी शिक्षा देवैं? तव जोगीश्वर नागश्रीके हितके अर्थि मधुर स्वरतैं ब्राह्मणनकूं कहते भये. कैसेहै जोगीस्वर? आगामी कालसंबंधी लाभ अलाभ सुखदुःखादिकनिके ग्याता है. भो ब्राह्मण, भो नागसर्म, यह नागश्री मेरी पुत्री है. मैंने सम्यक प्रकार विचार करि पंच अणुव्रत दिए है. इहां तेरा कहां बिगार भया? कैसेहे पंच अणुव्रत? दया है मूळ जिनका अर धर्मके बीज है. सूर्यमित्र मुनिराजके बचनके सुनवे मात्रतैं महाक्रोधकूं प्राप्त होय करि नागसर्म बिरामण कहता भया. भोमुने, यह नागश्री तेरी पुत्री कैसी होय? भावार्थ—नागश्री तो प्रगटपणें प्रसिद्ध मेरी पुत्री है. त्रिदेवीके गर्भतैं उपजी है. व्रतहीके देनेकरि तूं तेरी कैसें कहे है? मुनी बोले हे ब्राह्मण यह नागश्री हमारी पुत्री अवश्य है यामैं कछुभी संशय नहीं है. अर तेरे संशय कहा है? जातैं मैं असत्य नहीं कहूं हूं. नागश्री समभावकूं प्राप्त भई व्रतनिके पालवेविखैं तत्पर, मुनिके चरणकमलनिकूं प्रणाम करि, सूर्यमित्र मुनीके चरणारविंदनिके समीप तिष्टी. तब नागसर्म अत्यंत क्रोध करि वेगही चंद्रवाहन नृपके समीप जाय अनेक वचननिकरि या भांति पुकारकी विज्ञप्ति करता भया. भो देव, एक दिगंबर मुनि मेरी पुत्री नागश्रीकूं असत्य वचन तैं अपनी कहकरि बलात्कार बरजोरी तैं ग्रहण करे है. तासमय नागसर्म प्रोहितकरि कहे ऐसे असंभवी वचन तिनकरि सभानिवासी समस्त लोकनिके चित्तविखैं

Scanned by CamScanner

बडा आश्चर्य भया. अर राजा चंद्रवाहनभी नागसर्म प्रोहितके वचन सुनकरि अत्यंत आश्चर्यकूं प्राप्त होय अपने चित्तविखैं यह विचार करता भया. कैसाहै राजा ? जोग्य अजोग्य संभाव्य असंभाव्यके विचार विखैं अत्यंत प्रवीन है. बडी अचरजकी वात है जो कदाचित मेरुगिरि चलायमान होय अर अग्नि शीतल होय तो होहू, परंतु जैनके जती असत्य वचन कदाकाल भी नाहीं कहैं. भावार्थ–निन्याणवै हजार जोजन ऊंचा अर हजार जोजनकी जाकी चित्रापृथ्वीविखैं जड है, ऐसा मेरु गिरि अनादि कालतैं कदेभी चलायमान न भया, सो तो कोऊ दैवकी विपरीततातैं कदाचित चलायमान होजाय, अर अग्निभी अनादितैं उष्ण है कदेभी शीतल भई नाहीं, सो दैव योगतै उष्ण स्वभावकूं छांडि शीतल हो जाय, परंतु दिगंबर मुनि असत्य वचन कदेभी न कहैं. जे निर्मोही जैनके जती बाह्य अभ्यंतर समस्त परिग्रहका त्याग किया तिन जतीश्वरनिके झूठ वचनकरि पृथ्वीविखैं कहां साध्य है ? कछूभी साधने जोग्य नाहीं. अर नागश्री अब इस नागसर्म बिरामणकी पुत्री है सो सर्व लोक विखैं विख्यात है; परंतु इहां कछू कारण विशेष है तांहि मैं नहि जानूंहूं. याभांति राजा चंद्रवाहन विचार करि बहुत लोकनिसहित नागसर्म नागश्री संबंधी संशयका विनासके अर्थि सूर्यमित्र मुनिराजसमीप गया. अर केई पुरवाशी धर्मात्मा जैनी श्रावक धर्मकेअर्थि परिवार सहित सूर्यमित्र मुनिकी वंदनाकूं वनमें गये. केई लोक या बिरामण सूर्यमित्र मुनि अर नागसर्म प्रोहितके जो नागश्रीसंबंधी विवाद ताहि सुनवेकूं गये. बहुरि केई जन विनाप्रयोजन कौतिक देखवेकूंही वनमें गये. तहं वनविखैं प्राशुक शिलापर विराजमान अर चंद्रमासमान कांति

Scanned by CamScanner

युक्त है मूर्ति जाकी, रागद्वेषरहित निर्विकार शांत मुद्राके धारक षटकाइक जीवनिके दयाल, पंच महाव्रतके परिपालक, मेरुसमान थिरतावान ऐसे जे सूर्यमित्र मुनिराज जिनकूं देखि राजा चंद्रवाहन पंचांग नमस्कार करि अमृतसमान मधुर वचन कहि या भांति पूछता भया.

भो स्वामिन् कदाचित दैवयोगतैं समुद्र अपनी मर्यादाकूं उल्लंघै तो उल्लंघो; अर कुलाचलनिकरिसहित भूपीठ चलायमान होय तो होहू; तथापि सत्यवादी निर्मोही जतीनके मुखसैं जैसे तैसे भी वचन कोई काल विखैंभी चलायमान नाही होय है. ऐसे हृदय विषैं नीकै जानूहूं. तौभी हे प्रभो, तीन जगतके नायक, मैं मनका संदेहका हानीके अर्थ तुमकूं कछुएक पूछवेका इछक हूं. भो देव आपके पास बैठी यह रूपवान् नागश्री कौनकी पुत्री है सो आप मोहि सांचि कहो. कैसे हो तुम ? सत्यवचनरूप किरणनिकरि संदेहरूप तिमिरके नाश करवेकूं भानु समान हौ. तब समस्त सभाजनकूं तिष्टतां राजाकूं सूर्यमित्र मुनिराज प्रगट वचन कहते भये. भो राजन् यह नागश्री मेरी पुत्री है. यह वचन सूर्यमित्र मुनिराजके सुनि नागसर्म बिरामण लाल नेत्रकरि कहता भया. भो राजन्, मेरी भार्या त्रिदेवी नागका आराधन करि अर बड़ी भक्तिथकी पूजन करि नागश्री नामा कन्याकूं प्राप्त भई सो यह वार्ता समस्त नगर विखैं प्रसिद्ध है. अर यह आपके पास बैठे समस्त पुरजन अथवा सज्जन परिजन कहां नाहीं जाने है? अब इस ब्रह्मचारीकी यह नागश्री कैसे पुत्री भई या विचार विखैं सकल परिजनसहित नीकैं चित्त धारण करो. तब मुनिराज बोले हे राजन् जो यह नागश्री इस नागसर्मकी पुत्री है तो नागसर्म नागश्रीकूं कछु

Scanned by CamScanner

विद्याभी पढाई है कि नाही ? व्याकरण, छंद, अलंकार, नाम-माला, नाटक, राजनीति, कथा, पुराणादिक, लौकिक चमत्कारी शास्त्र, अर आचार, गणित, न्याय आदि अध्यात्म-शास्त्र शिक्षा विवेक धर्मादिकके सिद्धीके अर्थि अर अज्ञानके हानिके अर्थि समस्त जन अपने पुत्रादिकूं पढावे है, याने कहां पढाया है? तब नागसर्म बोल्या मैनैं तो कछुभी शास्त्र नागश्रीकूं नाहि पढाया. तब मुनी बोले तोनैं याकूं कछुभी शास्त्र नाही पढाया है तो यह नागश्री तेरी पुत्री कैसे होय? भावार्थ-जो शास्त्र पढावे है तिनहीके पुत्रपुत्री होते हैं. जातैं नागश्रीकूं हमने शास्त्र पढाया है तातैं यह नागश्री हमारी पुत्री है. फिर नागसर्म बोल्या भो योगिन् तैनैं नागश्रीकूं कहा शास्त्र पढाया हैं सो मोहि आदरथकी कह. तब सूर्यमित्र मुनिराज प्रगट कहता भया मेरे पढायवे करि यह पुत्री नागश्री अनेक श्रुतसागरके पारकूं प्राप्त भई है. यामैं कछुभी संशय नाहीं. यह वचन मुनिराजके सुनि सकल सभाजन जब अत्यंत अचरजकूं प्राप्त भये. तब राजा चन्द्रवाहन हात जोर नमस्कार करि या भांति सूर्यमित्र मुनिराजकूं पूछता भया. कैसा है राजा ? आश्चर्य करि सहित है मन जाका. भो मुनिराज जो या कन्याकूं आप शास्त्र पढाया है तो पापके हानिके अर्थ या कन्याकी परिक्षा दिवावो. तव योगीश्वर विस्मयकारिणी वाणी करि श्रेष्ठ वचन कहते भये. हे राजन् इहांही मै शास्त्रनिकी परीक्षा दिवाउहूं या भांत कहकरि पंडितनकी सभाके मध्य नागश्रीके मस्तक परि दहणा हाथ मेलि सूर्यमित्र मुनिराज दिव्यवाणी करि प्रगट कहते भये. भो वायुभूत, राजग्रह नगरविखैं मैं सूर्यमित्र तोकूं जे बहुत शास्त्र पढाए थे तिन सकल शास्त्रनिकी नृप चंद्र

Scanned by CamScanner

वाहन आदि समस्त पंडितनकूं अब परीक्षा देहि. जाकरि इनका संशय दूर होय. याभांति सूर्यमित्र मुनिराजके कहिवेथकी नागश्री दिव्यवाणीकर सरस्वतीसमान अनेक शास्त्रनिके अर्थ प्रगट कहवेकूं प्रारंभ करती भई. जो कोऊ पंडित जिस शास्त्रका जैसा स्थल जिस वाणीकरि पूछैं, तिस पंडितकूं तिस शास्त्रका तैसा स्थलका तिह वाणी करि नागश्री प्रगट उत्तर देवे है. भावार्थ—जिनवाणीके चार अनुयोग है. जिनविखैं काहूनैं प्रथमानुयोगका स्वरूप पूछ्या, तब नागश्रीने कही, जाविखैं तीर्थंकर आदि त्रेसठ शलाका पुरुषनिके पुराण अर मोक्षगामी महंत पुरुषनिके चरित्रनिका भवावलीसहित पुण्यपापके फलका सब विस्तार कथन होय सो प्रथमानुयोग है. काहूने पूछी करुणानुयोगका स्वरूप कहाहै? नागश्रीने कही जाविखैं गुणस्थान आदि वीस प्ररूपणाका अर ज्ञानावरणादि अष्ट कर्मनिका बंध उदय उदीर्णा अर सत्ताका अर तीनूं योगनिके द्वारे कर्म नोकर्मके निमित्तभूत समय समय पुद्गल द्रव्यके आगमनका अर औपशमिक आदि पंच भावनिका बहुरि तीन लोकके संस्थानका अर इकईस भेद संख्या प्रमाणका आठ भेद उपमा प्रमाणका अर इन प्रमाणनिके विशेष चौदह धारा आदि अनेक धारानिका सविस्तर वर्णन होय सो करुणानुयोग है. काहूनैं कही चरणानुयोगका कहा स्वरूपहै? नागश्रीनैं उत्तर दिया, जाविखैं अठाईस मूलगूण, चौरासी लाख उत्तर गूण, अठारह हजार शीलके भेद, पांच प्रकार चारित्र अर दीक्षा शिक्षा प्रायश्चित्तादि देनेका बिधान स्वरूप मुनीके आचारका, अर सम्यक्तादि आठ मूलगूण, ग्यारह प्रतिमारूप श्रावक धर्मका सविस्तर वर्णन होय सो चरणानुयोग है. बहुरि काहूनैं

Scanned by CamScanner

द्रव्यानुयोगका कथन पूछ्या, तब नागश्रीनैं उत्तर दिया कि, जाविखैं षटद्रव्य, सप्त तत्व, नव पदार्थ, पंचास्तिकाय इनका अर प्रत्यक्ष परोक्ष दोय प्रमाण बहुरि प्रमाणनिके एक देशरूप नैगमादि सप्त नयका अर सप्त भंगनिकरि चार निक्षेपनका वस्तुका यथावत स्वरूप साधनेका, बहुरि बौद्धादिकनिकरि कल्पना किये छह प्रमाण, तहां बौद्धनिके प्रत्यक्ष अनुमान दोय प्रमाण, अर सांख्यके प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम ये तीन प्रमाण, बहुरि नैयायिकके प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमा, ए चार प्रमाण, अर नैयायिकनिके दूसरे मतविखैं, प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमा, अर्थापत्ति ए पांच प्रमाण बहुरि जैनीके प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमा, अर्थापत्ति, अभाव यह छह प्रमाण इनके निराकरणका अर नयनिक्षेपनिका प्रचार करि रहित केवल निज सुद्धात्मस्वरूप निज स्वभावके अनुभवका सविस्तर वर्णन होय सो द्रव्यानुयोग है. ऐसे चारौं अनुयोगनिके स्वरूप अर तिन अनुयोगनिके अधिकार, बहुरि अधिकारनिविखैं अवांतर अधिकार, अर सुखमा दुखमा आदि दुखमा दुखमा पर्यंत षटकालनिकी स्थितीका, अर तीन कालविखैं जीवनिकी जघन्य उत्कृष्ट आयु बहुरि शरीरकी अवगाहना, शरीरके वर्ण, अर सुख, दुःख, बल, वीर्यादिकनिकी हानि वृद्धिका स्वरूप आदि समस्त प्रश्नके अनुसार उत्तररूप वचन नागश्रीनैं प्रगट कहे. या भांति नागश्रीके मुखकरि श्रुताध्ययनसंबंधी परीक्षा दिवायवेतैं समस्त ज्ञानीजननीकै हृदयविखैं अत्यंत आश्चर्य भया. तब राजा चंद्रवाहन सूर्यमित्र मुनिराजकूं नमस्कार करि प्रगट श्रेष्ठ वचन कहता भया. हे नाथ, यह नागश्री सर्वथा तुमारी-

Scanned by CamScanner

ही पुत्री है; नागसर्म बिरामणकी नाहीं. परंतु मेरे वा और सज्जन परजननिके चित्तविखैं एक कौतुकरूप संदेह वर्तेहै. हे प्रभो, परीक्षा देनेकेअर्थि तो नागश्रीके सिरपैं हात मेलि वायुभूतका नाम उच्चारण किया अर श्रुतकी परीक्षा वायुभूतके नामकरि नागश्रीके मुखतैं दिवाई सो यह समस्त लोकनिके वडा कौतिक है. तब राजाके प्रश्नतैं फिर सूर्यमित्र मुनि बोले, भो राजन्, जो भवांतरविखैं वायुभूत था सोही निश्चयकरि इहां नागश्री भईहै. यह वचन सुनकरि उपज्याहै आश्चर्य जाके ऐसा राजा चंद्रवाहन हाथ जोर सिर नवाय सूर्यमित्र मुनिराजकूं नमस्कार करि अमृतसमान कोमल वाणीकरि प्रार्थना करता भया. भो भगवन्, हम सबनिपैं कृपा करि नागश्री अर वायुभूतसंबंधी पूर्व भवनिका दिव्य वाणीकरि उपदेश करो. याभांति चंद्रवाहनके प्रश्नथकी सूर्यमित्र मुनिराज भव्य जीवनिका हितके सिद्धके अर्थि अर सकल जीवनिके उपकारके अर्थि बहुरि धर्मके वृद्धीके अर्थि पूरव भव कहते भये.

भो राजन्, धर्म अर धर्मके फलविखैं प्रीतकी बढावनहारी नागश्रीकी कथा अर वायुभूतके भवविषैं हमारा संबंधका कारण, बहुरि पुण्यपापके उपाजनिकरि अनुभव किये भवांतरविखैं सुख दुःख आदि समस्त कथन तोहि कहूंहूं, सो तूं आपना चित्तकूं एकाग्र करि सकल सभाजन करि सहित श्रवण करि. महान पापके उपार्जनतैं नागश्रीके जीवनैं भवावलीविखैं नाना प्रकार दुःख भोगे. अर अघकी करनहारी अनेक दुर्गति पाई. बहुरि व्रत धारण करि संचय किया जो पुण्यका लेश ताके वसतैं नागसर्म बिरामणके यह सती नागश्री नामा पुत्री भई सो समस्त संबंध प्रगटपणे करि कहूंहूं. ताहि अहो भव्य-

Scanned by CamScanner

जीव हो, तुम एकाग्र चित्तकरि सुनो. अनुपम गुणनिके समुद्र अर साक्षात धर्मका स्वरूपके दिखायवेविखैं दीपकसमान पंच महाव्रतरूप आभूषणके धरनहारे स्वर्गमुक्तिके कारण इंद्र नरेंद्र नागेंद्रनिकरि पूजनीक बहुरि कर्मरूप वैरीनके जीनतहारे पांचू इंद्रियनके विषयतैं पराङ्मुख ऐसे जे परमपूज्य पंच परमगुरु अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सकलसाधू, जिनकूं मैं नमस्कार करूंहूं यहां सकलकीर्तिमुनि राजनैं तीजा अधिकारका अंतविखैं पंचपरमेष्टीनकूं स्तवनरूप अंतमंगल किया है. ऐसा भाव है.

इत्याचार्य सकलकीर्तिविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखै कुशील परिग्रहके संबंधकरि जीवनिके प्रत्यक्ष दुःख देखनेका अर नागश्री संबंधी भवांतरके प्रश्नका है वर्णन जामैं ऐसा तृत्तिय अधिकार समाप्त भया.

चौपाई.

अर्हत सिद्ध सूर उवझाय, सकल साधुके प्रणमूं पाय।
जिननैं रागरोष निरजया,ते मुज निजगुण द्यो करदया.

अथानंतर याही जंबूद्वीपविखैं भरतक्षेत्र वत्स देश कौसंबी नगरी ताका राजा अतिबल ताके प्राणनिहूतैं प्यारी मनोहरी नामा पटराणी, अर सकल शास्त्रनिका ग्याता सोमसर्म बिरामण मंत्री, ताके कास्यपी नामा बिरामणी तिनके दोय पुत्र थे. बडा अग्निभूत छोटा वायुभूत. दोऊ भाई बालपणेतैं पिताके अति लाडले यथेच्छ क्रीडा करते थे. बहुत उपाय करि पितानैं पढाए तोहू नाहीं पढे केवल मूर्खही रहे. कदेक पापके

उदय करि तिनका पिता सोमसर्म परलोक गया. तब राजा अतिबल बिना बिचारे अग्निभूत वायुभूतकूं प्रोहित पद दिया. याभांति वे दोऊ भाई सोमसर्मके पुत्र शास्त्रके ज्ञानकरि रहित विषयसुख भोगते जौं लौं तिष्ठेथे, तौंलौं अनेक देशनिमैं भ्रमण करता अर तर्कशास्त्रके विवादकरि अनेक वादीनके वादका मदकूं दूर करता ऐसा एक विजयजिव्हनामा वादी आयकरि वादीनतैं वाद करनेके अर्थि राजद्वारपैं वादपत्र खडा किया. इहां वाद करनेका अधिकार केवल पुरोहितका है अन्यका नाहीं यह बिचार कर अन्य वादीननैं वादपत्र नाहीं ग्रहण किया. तब राजा अतिबलनैं तिन दोऊ भाईनकूं यह आग्या दई. भो द्विजपुत्रहो, तुम अपनी बुद्धिकरि इस वादीकूं वादपत्रका अच्छीतरह उत्तर देहु. तब वे अग्निभूत वायुभूत दोऊभाई तिस वादपत्रकूं लेय शीघ्रही फारडाऱ्या. तब राजा तिन दोऊ भाईनकूं बडे मूर्ख जानि अनेक दुर्वचनतैं अपमान करि तिनका दायादार जो सोमिल बिरामण ताके अर्थि सीघ्रही प्रोहितका पद दिया. तब वे दोऊ भाई मानभंगके दुःखकरि हृदयविखैं अत्यंत खेदखिन्न अर नष्ट भईहै आजीवका जिनकी ते अपने घरविखैं याप्रकार विचार करते भए. अहो आप मंदभागी है. पिता पढाए तोभी पापके उदयकरि नाहीं पढे. कुमार्गमैं लीन अतिमूर्खही रहे. पुरुषनिके ज्ञानरूप नेत्रविना धर्मादिकनिकी परीक्षा कहां? अर ज्ञानविना लोकमे मान्यता कैसे होय? बहुरि परलोकविखैं सुख कैसे होय? जिन जीवनिनैं गुरुके निकट कल्याणका दायक समस्त तत्वनिका प्रकासक ज्ञानरूप नेत्र नांही पाया ते पुरुष इसलोकविखैं आंधेही है. जे दुर्बुद्धी तात मात गुरुजनादिककी सिक्षा

Scanned by CamScanner

अर हितोपदेशादिक नांहीं मानेहै तिन पापी जीवनिके दोऊ लोक विगरेहै. ज्ञानाभ्यासकरि निर्मल ज्ञानकी उत्पत्ति होयहै ज्ञानाभ्यास करिकैंही सत्पुरुषनिके मोक्षका लाभ होयहै. याभांति विचारकरि वे दोऊ भाई अग्निभूत वायुभूत श्रुतज्ञानके पढनेकेअर्थि देशांतर जानेकूं शीघ्रही उद्यमी भये. तब तिनकी माता कास्यपी तिनका विद्याभ्यासविखैं अत्यंत आग्रह जानि हितके अर्थी स्वकीय पुत्रनिकूं याभांत कहती भई. राजग्रहनगरविखैं राजा सुबलके सुप्रभा नामा पटराणी है. अर महारो भाई सूर्यमित्र प्रोहित है. कैसा है सूर्यमित्र ? ज्ञानविज्ञानकरि सहित है. अर अतिप्रवीण सकल पंडितनिविखैं अगवाणी है. बहुरि तुमारा मामा है. सो राजग्रहविखैं विद्यमान है. जो तुम दोऊनके विद्याध्ययनविखैं आग्रह है तो तुम दोऊ शीघ्रही जायकरि सूर्यमित्रके समीप विद्याध्ययन करो. याभांति माताके वचनकरि वे दोऊ बिरामण विद्याकेअर्थि कौसंबीतैं निकसि अनुक्रमतैं राजग्रह नगरकूं प्राप्तभए. तहां सूर्यमित्र द्विजोत्तमकूं मस्तक नमाय नमस्कार करि याभांति अमृत समान वचन कहते भए. हे माम, पूर्वै पितानैं हठकरि विद्या पढाई तोहू हम कछू नाहीं पढे. केवल घरविखैं मूर्खही रहे. अब पिताकू मरे पीछै राजा अतिबलनैं हमारा प्रोहितपद सोमिल बिरामणकूं दिया हम पदभ्रष्ट भए. अर आजीवकातैंभी रहित भए. तदि मातानैं इहां तेरेपास बहुत सास्त्र पढनेकूं हमकूं भेजे है. अर तुम हमारे हितकारी हो. याभांति जानिकरि तुम हमकूं शास्त्र पठावो. जानैं नष्टभया ऐसा जो पुरोहित पद सो सास्त्राभ्यासतैं हमारे फिर हो जायगा. यह वचन सुनिकरि बुद्धिवान सूर्यमित्र अपने चित्तविखैं याभांति विचार करता

भया. अहो ये दोऊ भाई यथेष्ट खानपानादिके लोभतैं पिताके पास विद्या नाहीं पढे. अर जो मैभी इनकूं यथेच्छ भोजन द्यूंगा तो ये दोऊ शैलानी हो जायंगे. रंचमात्रभी विद्याध्ययन नाहीं करेंगे. अर विद्याध्ययनविना इनके कार्यकी सिद्धी नहीं होगी. याभांति विचारकरि सूर्यमित्र प्रोहित प्रगट कहता भया, अहो द्विजपुत्रहो, मेरे बहिण नाहीं तातैं तुम दोऊ विद्याहीण भाणजे कहांतैं भए? भावार्थ—जातैं बहिणके होतैं भाणजेका होना संभव. वहिण विना तुम भाणजे कहातैं भए? तातैं तुमारी माता मेरी बहिण नाहीं. अर तुम मेरे भाणजे नाहीं. अर जो तुम अन्य ब्राह्मणनिके घर भिक्षावृत्तितैं भोजनकरि इहां अध्ययन करो तो विद्यापढायद्युं. जो तुम विद्याके अर्थि हो तो मेरा कहना करो. अन्यथा मैं विद्या नाहीं पढाऊंगा. ऐसे कहतैं वे दोऊ भाई बोले भो सूर्यमित्र उपाध्याय, तुमनैं जैसे कही तैसेही करेंगे. या भांति कहकर सूर्यमित्रके समीप वडे आदरतैं विद्याध्ययन करनेका प्रारंभ करते भए. आलस्यरंहित विद्यावे दोऊ विरामणके पुत्र अनुक्रमतैं गिणतीके दिननिकरि अनेक शास्त्रनिकूं पढि महान प्रवीण पंडित भए. अनेक शास्त्रनिका अध्ययन करि वह दोऊ भाई अपने घर आनेकूं उद्यमी भए. तब सूर्यमित्र जिनकूं वस्त्राभरण देय हर्षकरि ऐसे कहता भया, भो सोमसर्म विरामणके नंदन अग्निभूत वायुभूत हो, मैं तुमारा निश्चयतैं हितकारी मामा हौं. जो इहां तुमकूं सोमसर्मकी नाईं यथेच्छ रमणीक खानपानादि द्यूंगो तो यह पूर्ववत कौतुकी विषयासक्त भए थके विद्याध्ययन नाहीं करेंगे. मूर्ख रहजायंगे. यह विचारकरि मैंने विद्याध्ययनके सिद्धिकेअर्थि भिक्षावृत्तितैं तुमकूं दुःखित किये. कैसाहौं मैं? तुम दोऊनका हितका

Scanned by CamScanner

वांछक हूं. यह वचन सूर्यमित्रके सुनकरि अतिहर्षायमान होय बडा भाई अग्निभूति सूर्यमित्रकी प्रशंसा करता भया. भो बुद्धिनिधान सूर्यमित्र, तुमतो हमारे पितासमान दुजा हितकारी पिता है. तुमनैं ज्ञानदानतैं इहां हमारा पंथ हितकारी अनुष्ठान किया. अर यह मनुष्य जन्म सफल किया. बहुरि जीवनेका उपाय दिया. विद्यादानशिवाय और दान श्रेष्ठ नाहीं है. अर विद्यादानके दातारशिवाय पृथ्वीविखैं और कोई श्रेष्ठ दातार नाहीं है. जाकारणतैं जे कृतघ्नी मूर्ख विद्यादानके दातार जे उपाध्याय जिनका किया कल्याणका कारण उपकार इहां नाहीं मानेहै तिन पापीनकी समस्त विद्या तो पापतैं नष्ट होयहै. अर मूर्खपनाकी प्राप्ति होयहै. बहुरि परभवविखैं नरकादि कुगति होय है. तासमय दुराचारी वायुभूत सूर्यमित्र गुरूपैं कोपायमान होयकरि अपनी दुर्गतीकी करणहारी गुरूकी बडी निंदा करता भया. रे सूर्यमित्र! रे अधम! रे दरिद्री! तूं चांडालसमान माना है. रे दुराचारी! बलात्कारैं घरघर भिक्षा मगाय हमकूं विद्या पढाई. इहां आचार्य कहेहै, अहो भव्यजीवहो, देखो एक माताका उदरतैं उत्पन्न भए जे अग्निभूत वायुभूत दोऊ भाई तिनविखैं महान अंतर है. जातैं अग्निभूत तो गुरूकी प्रशंसा करी, अर वायुभूत गुरूकी निंदाकरी. तातैं इहां जानिएहै प्राणीनके कर्मनिकी गति विचित्र है. अब वे दोऊ भाई राजग्रहनगरतैं कौसंबीपुर आय राजा अतिबलकूं आशीर्वाद देय अमृतसमान वचनकरि अपने शास्त्राभ्यासकी कुशलता प्रकास, नृपनैं आदरपूर्वक दिया जो अपना प्रोहितपद ताहि अंगिकार करि बडी संपदासहित आनंदतैं सुखसूं कौसंबीपुरविखैं तिष्ठते भए. यह कथा तो इहां रही.

Scanned by CamScanner

एकादिन राजग्रह नगरका राजा सबल स्नानके अवसर विखैं अपनी देदीप्यमान मणिनकरि जडित सुवर्णमई मुद्रिका तैलमर्दनके अवसर मंदक्रांति होनेके भयतैं सूर्यमित्रके हाथ दई. तब सूर्यमित्र वा मुद्रिकाकूं अंगुरीविखैं धारणकरि अपने घर आया. तहां ब्राह्मणके स्नानसंध्या तर्पणादि कर्म करि अर भोजन करि बहुरि राजमंदिर जायथा. सो वा मुद्रिकाकूं अंगुरीबिखैं नाहीं देखि अत्यंत खेदखिन्न भया. तब मुद्रिकाके ज्ञाननिमित्त परमबोधिनामा निमित्तग्यानीकूं बुलायकरि याभांति पूछी. अहो निमित्तग्यानी, रत्नजडित सुवर्णमई मुद्रिका मेरे करतैं नष्टभई सो लाधैगी कि नहीं लाधैगी यह निरूपण करो. तब प्रोहितके प्रश्नतैं निमित्तज्ञानी अपने निमित्तकूं बिचार करि कही. हे सूर्यमित्र, तोहि वा मुद्रिकाका लाभ होगा. ऐसे कहि करि निमित्तग्यानी तो अपने घर गया. अर सूर्यमित्र प्रोहित सोककरि खेदखिन्न जौंलौं अपने महलके अग्रभाग तिष्टेथा तौलौ ता नगरके बाहर उद्यानविखैं चतुर्विध संघसहित सुधर्मानामा आचार्य पधारे. ताहि सुनकरि पुरोहित अपने चित्तविखैं विचारी जो यह ग्यानी मुनि ग्यान नेत्रकरि मुद्रिकाकूं प्रत्यक्ष बताय देगा. तातैं प्रछन्न एकाकी जायकरि याकूं पूछूं. कैसैं हे सुधर्माचार्य? अनेक भव्यजीवनिकूं संबोधके दायक है. अर इंद्र नरेंद्र नागेंद्रनिकरि सेवनीक है चरणयुगल जाके. तीन ज्ञान आदि अनेक गुणनिके आकर, समस्त जीवनिके हितकारी है. बहुरि जगतकरि वंदनीक जगतविखैं श्रेष्ठ समस्त जगतके स्तुति करवे योग्यहै. सो प्रोहित सूर्यमित्र पुण्यके उदयकरि काललब्धिके योगतैं दिनके अस्त होनेके अवसर मुद्रिकाके पूछनेके निमित्त

Scanned by CamScanner

सीघ्रही वनविखैं सुधर्माचार्य समीप गया. तहां ग्यान, रिद्धी आदि अनेक गुणनिके आकर अर सरीरादिक विखैं निर्मोही शिवका साधन विखैं वांछा सहित ऐसा जोगीश्वरकूं देखि लज्जा अर अभिमानके योगतैं प्रश्न करवेकूं असमर्थ अर कार्यको अर्थि ऐसा जो प्रोहित सो कार्यके सिद्धिके अर्थि मुनीके चहु- और भ्रमण करैं. ताहि परोपकारी जोगीश्वर अवधि ग्यानके योगकरि अत्यंत निकट भव्य जानि या भांति अमृतमय वचन कहे. भो सूर्यमित्र, नृपकी रमणीक मुद्रिकाकूं करकी अंगुरीतैं गेरकरि चिंतातुर भयाथका तूं इहां मेरे पास आयाहै. तब अपने मनमे चिंतये जे समस्त कार्य तिनके कहिवेतैं हृदयविखैं बहुत अचरजकूं पायकरि सूर्यमित्र शीश नवाय नमस्कार करि मुनीकूं ऐसे पूछत भया. भो ग्यानी, जहां मुद्रिका परी होय सो मोहि कहो. तदि तिन ज्ञानरूप नेत्रके धारी सुधर्माचार्य याभांति कहते भए. भो धीमन् तेरे महलके पछारी बागकेमध्य सरोवरकी पारिपैं खरा रहिकरि तूं सूर्यकूं अर्घ देवैथा तब तेरे करके अंगुरीतैं निकसिकरि मुद्रिका सरोवरके जलमै कमलकी कर्णिकाविखैं शीघ्रही परी. अबार अदृश्य विद्यमान है. तातैं हे भद्र मुद्रिकासंबंधी सोक छोर, अर मेरे वचनविखैं निश्चय करि. या भांति मुनीके वचन सुनिकरि जहां मुद्रिका बताईथी तहां जाय तैसेही कर्णिकाविखैं परी देखि मुद्रिकाकूं ग्रहण करि हर्षायमान होय राजाकी भेटकरि विस्मयकूं प्राप्त भया. सूर्य- मित्र पुरोहित चित्तविखैं याभांति विचारता भया. अहो यह मुनिराज प्रत्यक्ष सर्वका ग्याता ग्यानी पुरुषनिके मध्य अनुपम महाज्ञानी है. अर भूमिविखैं समस्त निमित्तनके मध्य सारभूत यहही निमित्त है. या कारणतैं इस मुनिंद्रका आराधन करि

Scanned by CamScanner

जिस निमित्त ज्ञानतैं प्रत्यक्ष मुद्रिका बताई तिस निमित्त ज्ञानकी प्रार्थना करूं. जा निमित्तज्ञानकरि सत्पुरुष पंडितनके मध्य मेरी बडी विख्यातता होय, अर महान ऐश्वर्यका लाभ होय, लोकविखैं मान्यता होय, बहुरि परमपदका लाभ होय. याभांति विचार करि अतिलोभी सूर्यमित्र सबनिके प्रछन्न निमित्त ग्यान शीखनेकूं सुधर्माचार्यके समीप गया. तहां योगिराजकूं हात जोर सिर नवाय प्रणाम करि भले वचनसैं प्रार्थना करी. भो भगवन, भो कृपानाथ, प्रत्यक्ष अर्थकी प्रकाशिनी अतिदुर्लभ यह विद्या मोहि देहु. तब वे सुधर्माचार्य अवधिज्ञानी सूर्यमित्रका हितके इच्छक सूर्यमित्रप्रति बोले, भोभद्र, यह प्रत्यक्षार्थ प्रकाशिनी परमविद्या निर्ग्रंथ ज्ञानी मुनीविना औरके प्रगट परिणतकूं नाहीं प्राप्त होय.

भावार्थ—निर्ग्रंथ मुनिबिना और पुरुषके नांहीं सिद्ध होय. अर जो तूं भी विद्याका अर्थी है तो मोसमान निर्ग्रंथ व्हैं. यह वचन सुधर्माचार्यके सुनकरि सूर्यमित्र अपने घर जाय समस्त परिवारकूं बुलाय निर्ग्रंथ भेशके सिद्धके अर्थी उच्च प्रकार आलोचना करता भया. अहो सज्जन पुरुषहो, सुधर्माचार्यके निकट प्रत्यक्षार्थप्रकाशिनी प्रत्यक्ष चमत्कारणी महाविद्या है. परंतु निर्ग्रंथ भेषबिना यह विद्या हमकूं देवैं नाहीं. तातैं विद्याका लाभके अर्थि निर्ग्रंथ होयकरि छलतैं विद्याकूं लेय अपना कार्यकरि सीघ्रही मै आजाऊंगा. इहां मेरा वियोगतैं रंचमात्रभी शोक करनां तुमकूं योग्य नाहीहै. तब वे सज्जन विद्याके लोभतैं सूर्यमित्र प्रति बोले, हे सूर्यमित्र, जो तुमने बिचारी सोई नीकीहै. परंतु विद्याका लाभ भए पीछैं अटकियो मति. तुरतही आजाइयो. याभांति विचारकरि सूर्यमित्र प्रो-

Scanned by CamScanner

हित तुरतही घरतैं मुनीके समीप जाय, शिर नमाय, प्रणाम करि केवल विद्याहीका लाभके निमित्त याभांति कहता भया. भो भगवन मेरे विद्या लाभका सिद्धिके अर्थि निर्ग्रंथ मुनीके भेश आदि जो कर्तव्य होय सो करिकैं मोहि शीघ्रही प्रत्यक्षार्थ प्रकाशिनी कल्याणरूपिणी विद्या देहु. तब वे सुधर्माचार्य भावीकालसंबंधी समस्त पदार्थनिके ग्याता, बाह्याभ्यंतर चौवीश प्रकार परिग्रहका त्याग कराय सूर्यमित्र बिरामणके अर्थि सुर-शिव संपदाके कारण सारभूत अठाईस मूलगुणसहित भगवती दीक्षा दीनी. कैशी है दीक्षा ? तीन जगतके जीवनिकरि वंद-नीक है. अर तीन लोकके सुखकी करणहारी है. ताहि समय वह सूर्यमित्र प्रोहित सुधर्माचार्यकूं नमस्कार करि यह प्रार्थना करता भया. भो भगवन कृपा करिके अब मोपैं प्रत्यक्षार्थ-प्रकाशिनी विद्या देहू. तब सुधर्माचार्य बोले, भो धीमन, क्रि-याकलाप आदि अनुयोगनिके अभ्यास किए बिना वह विद्या सत्पुरुषनिकैंभी सिद्ध नाहीं होय है. यह वचन सुनकरि सुबु-द्धी सूर्यमित्र पुरोहित बडे उद्यमकरि सूर्यमित्र गुरूके पास चारौं अनुयोग पढनेका प्रारंभ किया. तहां प्रथमही परमपुनीत जे त्रेसठ शलाके पुरुषनिके पूर्वभव अरसुख, आयु, काय विभूत आदिका प्ररूपक अर धर्मकारण ऐसा जो प्रथमानुयोग तांहि पुण्यपापके फलकी प्रगटताके अर्थि पढता भया. अर लोक अलोकके विभागकूं तथा लोकालोककें आकार विशेषका प्ररू-पक अर सात नरक आदि चारो गतिनके दुःखादिकका प्ररू-पक, बहुरि स्वर्गादिकके सुख संपदाका प्ररूपक ऐसा जो सकल वस्तु तत्वके दिखायवेकूं दीपकसमान करुणानुयोग सिद्धांत सो गुरुके मुखतैं अध्ययन किया. बहुरि मुनि श्रावककी क्रिया,

Scanned by CamScanner

आचार, गुण अर जघन्य मध्यम उत्कृष्ट श्रावकके तीन भेद, तथा महाव्रत, अणुव्रत, अठारह हजार शीलके भेद, चौं-रासीलाख उत्तर गुण, तथा तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रतरूप श्रावकके सात शीलभेद अर इनके स्वर्ग मोक्षादिक फल आदि जाविखैं निरूपण किए ऐसा जो सिद्धांत सो चरणानुयोग श्रीगुरुके वचनकरि नीकै अभ्यास किया. बहुरि जाविखैं षट-द्रव्य, सप्त तत्व, नव पदार्थ, पंचास्तिकाय आदि समस्त पदा-र्थका संसय, विपर्यय, अनध्यवसायरहित सांचे लक्षण अर जैनदर्शन कहिए सम्यक्दर्शन अथवा जिनमतका सांचा स्वरूप तथा एकांत, विपरीत, विनय, संशय, अज्ञान-रूप पंच भेद मिथ्यात्वका निराकरण अर सांचे झूंठे मतके देव, गुरू धर्मादिककी परिक्षाही होय ऐसा परमोत्तम द्रव्यानुयोग श्रीगुरूके पास बहुत नीके अभ्यास किया. सो सूर्यमित्र मुनि द्रव्यानुयोगके अभ्यास करही उत्तम सम्य-ग्दृष्टी होयकर हेय जे तजनेजोग्य अर उपादेयं जे ग्रहण करवाजोग्य जे अन्यमतकरि कहे अर जिनमतकरि कहे पचीस सोलह अर सात तत्त्व नव पदार्थ जिनके शुभाशुभ लक्षण धर्म अधर्मके भेद अर जिनमत तथा अन्यमतके भेदनिकूं भले प्रकार जानिकरि महा बुद्धिवान् निर्मल चित्तविखै याभांति प्रगट विचार करता भया. अहो, श्रीजिनेंद्र देवके मुखतैं प्रगट भया अर स्वर्गमुक्तिके सुखका कारण ऐसा जिनमतही इहां सारभूत जगतपूज्य साचां दीखे है. अर मूर्खनिकारि कल्पना किए वहुत निंदनीक जे अन्यमत हालाहलसमान अनेक जन्मविखैं प्राणनिके घातक ते अब मोकूं नरक निगोदके कारण भासे हैं. सर्वज्ञ देवकरि कहे अर सम्यग्ज्ञानके कारणभूत ए

Scanned by CamScanner

जीवादिक समस्त पदार्थ मोकूं सारसहित भासे है. अर दुरा-
चारी कुमार्गगामीनकरि कहे कल्पित ए खोटे तत्व झूठे महान
पापके कारण मैंने अग्यानतैं वृथाही अभ्यास किए. मति-
श्रुति है नाम जिनके ऐसे परोक्ष दोय ज्ञान जगतके हितकारी
केवलज्ञानवत लोकालोक संबंधी समस्त पदार्थनिकूं परोक्ष
प्रकासे है. अर इहांही जाकरि समस्त मूर्तीक द्रव्य अर जिव-
निके भवांतर प्रत्यक्षपणे साक्षात देखिएहै. ऐसा अवधिज्ञान
है. ताके देशावधि, परमावधि, सर्वावधिकरि तीन भेद है.
तिनविखैं देशावधिग्यान तो चारूंही गतिविखैं सम्यग्दृष्टी
जीवनिके भवप्रत्यय अथवा अवधिग्यानावरण कर्मके क्षयो
पशमतैं उपजे है. अर परमावधि सर्वावधिज्ञान तद्भव मोक्ष-
गामी भावलिंगी मुनीजनहीके उत्पन्न होय है. अन्य जीवनिके
नाही होय है. बहुरि रूपी द्रव्यनिका सूक्ष्म तत्वके प्रत्यक्ष
दिखायवेतैं दीपक समान मनःपर्ययज्ञान भावलिंगी निर्ग्रंथ
मुनीश्वरनीकेंही होय है. अर द्रव्यलिंगी मुनीनके कुमति
कुश्रुत विभंगज्ञान होय है. सम्यग्ज्ञान कदेभी नाहीं होय है. अर
चार घातिया कर्मके नास करि केवल ज्ञान प्रगट होय है. कैसा
है केवल ज्ञान ? त्रिकाळवर्ती समस्त पदार्थनिकूं प्रत्यक्ष जाने
है. यह केवळज्ञान त्रिलोक दीपक आत्माका निजस्वरूप है.
ए पांच भेद सम्यग्ज्ञान समस्त पदार्थनिके प्रकाशक हैं. तिन
ज्ञाननके देयवेकूं लोकविखैं कोऊभी काहूकूं समर्थ नाहीं है.
ग्यानावरण कर्मके क्षयोपसमतैं अथवा क्षयतैं जोगीश्वरनिके ए
पांच ग्यान स्वयमेव प्रगट होय है. तहां चार ग्यान तो ग्या-
नावरणके क्षयोपशमतैं होय है. अर केवळ ज्ञान चार घाति
यानके क्षयतैं होय है. इहां मैंने आत्महितके अर्थि यह भला

Scanned by CamScanner

उत्तम कार्य किया जो अवधि ग्यानके लोभकरि महान संजम ग्रहण किया. जैसे कंदमूळनिकूं हेरतैं निधिका लाभ होय तैसे ख्यात पूजाके लोभतैं मेरे दीक्षारूप निधिका लाभ भया. अर ए सुधर्माचार्य समस्त जीवनिके हितके वांछक ग्यानकी आग्यारूप भला उपाय करि मोकूं भगवगी दीक्षा दिई. कैसी है भगवती दीक्षा ? समस्त जगके हितकारिणी है. इस दीक्षा-करि आजि मैं कृत्यकृत्य हूं. अर मोक्षमार्गी हूं. बहुरि समस्त पापनिकरि रहित पवित्र मै आज तीन जगतकर पूज्य भया इस संसारविखैं अनादि कालतैं दुर्लभ ऐसी यह सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्रकी एकतारूप जो बोधि सो महान उदयकरि जिनसासनविखैं मैनें पाई. महारे भुक्तिमुक्तिका दा-यक निर्दोष अर्हंत देव है. अनंत गुणनिका आकर अर तीन जगतका नाथ ऐसा अर्हंत देव मैने काललब्धितै पाया है. अर दुस्तर संसारसमुद्रके तिरवेकूं अथवा भव्य जीवनिकूं तारवेकूं समर्थ ऐसा निर्ग्रंथ गुरू मैनें बडा पुण्यका उदयकरि पाया है. कैसा है निर्ग्रंथ गुरू ? धर्मरूप है बुद्धी जाकी. इस संसार विखैं मिथ्यामार्गमै तिष्टता थका मेरे इतने दिन वृथा ही भये. अर स्नान संध्या तर्पणादिविखै मेरे केवळ संक्लेशही भया. यह मूर्ख मिथ्यादृष्टी जिनधर्मतैं पराङ्मुख देवकरिठिगे थके धर्मके अर्थि कुमार्ग विखै वृथाही खेद खिन्न होय है. जातैं तीन लोक विखैं सारभूत ऐसा जिनसासन मैनें अति दुर्लभ पाया. तातैं मै आज महान पुण्यवान भया. अर आज मैं धन्य भया. बहुरि आज ही मैं मोक्षमार्गविखैं गमन करण-हारा भया. जैसे जोतिषी देवनिविखैं श्रेष्ठ सूर्य है. अर धातूनके मध्य सुवर्णकी खानि श्रेष्ठ है. बहुरि पाषाणनिविखै

Scanned by CamScanner

चिंतामणि परमश्रेष्ठ है. वृक्षनिमैं कल्पवृक्ष, स्त्री पुरुष निके मध्य शीलवान स्त्री पुरुष, धनवान पुरुषनिविखैं दातार, तपस्वीनविखैं जितेंद्री पुरुष, अर पंडितनिविखै ग्यानी जीव, उत्तम आचरणके धारी श्रेष्ठ है. तैसे समस्त धर्मनिके मध्य श्री जिनेंद्रकरि भाषित दयामई धर्म परम श्रेष्ठ है. अर समस्त मार्गनिविखैं श्री जिनेंद्रकरि भाषित निर्ग्रंथ भेषरूप जिनेंद्रमार्ग ही उत्तम श्रेष्ठ है. जैसे गऊके सींगते दूध, अर सर्पके मुखतैं अमृत, बहुरि अनाचारतैं यश, मानतैं महंतपणा कदाकालभी नाही पाईए है. तैसे कुदेव, कुगुरू, कुधर्मके सेवनतैं कुमार्ग विखैं प्रवर्तनेतैं बहुरि खोटे शास्त्रके अध्ययनतैं श्रेय कहिए कल्याण अर शुभ कहिए पुण्यकर्म बहुरि शिव कहिए मोक्ष कदाकाल भी नांही पाईए. इत्यादिक चिंतवन करनेतैं सूर्यमित्र मुनिराज अत्यंत दृढ वैराग्यकूं पायकरि अर करतलकी रेखासमान समस्त हेयोपादेय वस्तूनिकूं जानिकरि बहुरि सम्यग्ज्ञानके प्रभावतैं बारह प्रकार संयम विखैं तल्लीन होयकरि जिनसासनविखैं कहे जे व्रत अर तप तिनके पालवेकूं उद्यमी भए. याभांति ज्ञानाभ्यासकरि सूर्यमित्र मुनिराज इंद्र नरेंद्र नागेंद्रनिकरि पूजनीक भए. कैसे है सूर्यमित्र मुनिराज? सम्यग्ज्ञानादि अनेक गुणगणनिकी है निरंतर बढवारी जिनके. अर तीन लोकविखैं विख्यात है कीर्ति जिनकी. बहुरि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्रकी एकतारूप जो मोक्षमार्गताविखैं अतिचाररहित है गमन जिनका ऐसे परमोत्कृष्ट भए. तातैं भो भव्य जीव हो, तुमभी ऐसे जानिकरि बडे आदरतैं सकल सास्त्रनिका अध्ययन करो. समस्त पापनिका विनाश करनहारा अर पुण्यका निवास यह सम्य-

Scanned by CamScanner

ग्ज्ञान है. अर ग्यानवान पुरुषही ग्याननै आश्रय करे है. और शिवरमणीका वदनारविंद ग्यानकरिही अवलोकिए है. इंद्र, नरेंद्र, नागेंद्र, ग्यानहीके अर्थि शीश नाय नमस्कार करे है. समस्त जीवनिके ग्यानतैं टार और अनुपम दूजा नेत्र-नाहीं है. भावार्थ—ग्याननेत्रतैंही समस्त वस्तु यथावत् जानी जाय है. अर ग्यानका फल समस्त कर्मनिका अत्यंत क्षयरूप मोक्ष है. अर मैंभी ग्यानहीविखैं निरंतर मन ल-गाऊ हूं. तातैं हे ग्यान मोहि ग्यानी करहु. इहां भाव ऐसा हैं, जो उपांत्यकी काव्यविखैं तो ग्यानाभ्यास करनेका उपदेश है अर अंतकी काव्यविखैं ग्यानकी महिमा संबोधनसहित सप्त विभक्तिनकरि दिखाई है.

इति श्रीसकलकीर्तिआचार्यविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखैं सूर्यमित्र पुरोहितके दीक्षाग्रहणका वर्णन जामैं ऐसा चौथा सर्ग समाप्त भया.

चौपाई.

बाहिरभ्यंतर परिग्रह छार, गुणसंयुत धारीअधिकार॥
सकलशिरोमणि तिहुजगवंद्य, प्रणमूं अध्यापकगुणकंद

अथानंतर यह सूर्यमित्र मुनि सुधर्माचार्यसहित ग्राम, खेट, पुर, अटवी आदि अनेक देशनिमैं विहार करते अनुक्रमतैं इस चंपापुरमैं आये. सो यह पुरी भगवान वासपूज्य द्वादशम तीर्थंकरकी निर्वाणभूमि है. ताकी तीन प्रदक्षिणा देय स्तुति कर नमस्कार किया. तहां निर्वाणभक्तिकरसहित सुधर्माचार्यके साथि मोक्षके अर्थि अर मोक्षकूं प्राप्त भये जे सिद्ध परमेष्ठी

Scanned by CamScanner

तिनके गुणग्रामकी भावनाके अर्थि प्रदक्षिणासहित भक्ति करनेके अवसर अंतरंगविखैं परिणामनिकी विशुद्धतानिमित्त अज्ञानरूप तिमिरका घातक और त्रिलोकविखैं समस्त मूर्तिक द्रव्यनिका प्रकासक जगतविखैं उत्तम ऐसा अवधिज्ञान सूर्य. मित्र महामुनिके स्वयमेव प्रगट भया. अहो भव्य जीवहो, निर्वांछक शांतपरिणामी वीतरागी मुनिनके अवधिग्यान त. पके प्रभावकरि अनेक ऋद्धि स्वयमेव प्रगट होय है, यामैं क. छूभी संशय नांही. ग्यानविग्यानकरि परिपूर्ण अनेक गुण. निका सागर रत्नत्रयकरि विशुद्ध है आत्मा जाका, सकल संघके भारविखैं समर्थ, महातपस्वी, महाध्यानी, अतिचाररहित पंच. महाव्रतका धारक पांचू इंद्रियनका विजई महाशीलवान, यो. गीनमैं प्रधान शांत है परिणाम जाके, समस्त जीवनिके हितका वांछक संसारिक सुखविखैं वांछारहित ऐसा सूर्यमित्र मुनिराज बडे गुणनिकरि अनुक्रमतैं सकल शिष्यनिके मध्य प्रधान शिष्य भए. तब पूर्वोक्तप्रकार गुणनिकरिसहित सकल संघविखैं प्रधान सूर्यमित्र अवलोकन करि और संघके भारविखैं समर्थ जानि, सकल संघकी साखि विधिपूर्वक आचार्यपद ताकूं देयकरि गुरु सुधर्माचार्य शिवसुखके सिद्धिके अर्थ आप एका विहारी भये. सुधर्माचार्य एकाकी उग्रोग्र तप करते अर ईर्यापथ करि अनेक देश पुर ग्रामादिविखैं विहार करते, ध्यानाध्ययनविखैं आसक्त, प्रमादरहित, जितेंद्री, मौनव्रतके धारक महा धीरवीर अनुक्रमतैं वाणारसी आए. तहां वाणारसीके बाहरि भूमिभागविखैं प्रासुक निर्जंतु शुभस्थानमैं आत्मध्यानका अवलंबनकरि वे सुधर्माचार्यमुनि योगधार तिष्ठे. तहां आत्मध्यानके योगकरि शिवमंदिरकी सिडीसमान क्षपकश्रेणीविखै

Scanned by CamScanner

आरूढ होय निर्मल शांत परिणामी योगीराज चार घातिया कर्मनिकूं निर्मूलन करि नवकेवल लब्धीसहित केवल ज्ञानकूं प्राप्त भए. कैसा है केवल ग्यान ? शिवरमणीका मुखावलोकनकूं दर्पणसमान है. तब वे केवली भगवान इंद्रादिक देवनिकरि केवल कल्याणककी पूजाकूं पाय तहांही अंतिम शुक्लध्यानके बलतैं अवशेष चार घातियानका निपातकरि देहकूं त्याग निर्वाणकूं प्राप्त भए. कैसा है निर्वाण ? लोकशिखरपैं स्थिरीभूत अनंत गुणनिका सागर है. अर अविनाशी अनुपम सुखनिकी खानि है.

अथानंतर वे सूर्यमित्र मुनिराज सकल संघके नायक धर्मकी प्रभावना करते आत्मिक स्वाधीन अविनाशी सुखके अर्थी भव्य जीवनकूं धर्मोपदेश देते पृथ्वीतलविखैं विहार करते ईर्यापथके पालक एकदिन भोजनके अर्थि कौशंबीपुरीविखैं प्रवेश करते भए. तहां तिनका भाणिजा अग्निभूत वायुभूतका बडा भाई सोमसर्म बिरामनका पुत्र धर्मात्मा, परम निर्ग्रंथ अपने गुरु सूर्यमित्र मुनिराजकूं दुर्लभ निधिसमान देखि अत्यंत हर्षायमान होय, हे भगवन्, इहां तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, ऐसे तीनवार उच्चार करि श्रीमुनिकूं पडगावता भया. दातारके सप्तगुणसहित नवधा भक्ति करि सरस, मधुर, प्रासुक, ग्यान ध्यानादिककी वृद्धीका दायक, आहार दान अपने उपकारके अर्थि सूर्यमित्र मुनिराजकूं भावसहित दिया. तब वे मुनिराज वीतराग परिणामनितैं भोजनकर आत्मध्यानके अर्थि उलटे वनकूं चाले. तिहि अवसर नमस्कार करि अग्निभूतने ऐसे वचन कहे, हे भगवन्, मेरा छोटा भाई वायुभूत क्रोध, मायाआदि अनाचारनिकूं अर तुमसरखे महंत पुरुषनकी

Scanned by CamScanner

निंदा करि निरंतर पापका उपार्जन करेहैं. तातैं हे भगवन्, वा
दुराचारीके संबोधवेके अर्थि वाके घर पधारो. जातैं तीन ज्ञ
गतके जीवनिकूं संबोधवेकूं आपही समर्थ हो. ए वचन सुन
करि मुनिराज बोले, भो अग्निभूत, वा वायुभूतके निकट
कदेभी जावो योग्य नाहीं है. जातैं वायुभूत स्वभावहीतैं रुद्र
परिणामी है. अर हमारे दर्शनमात्रतैं निंदादिक करि दुखदाई
महान पापकूं अंगिकार करेगा. जा पापकरि वाका जीव चिर
काल दुर्गतविखैं भ्रमण करेगा. ए वचन मुनिके सुनि फिर
वायुभूत बोल्या, भो स्वामिन्, मेराही आग्रहतैं आप पधारो.
आपके संबोधवेतैं वाका कछु होणहार है सो होहू. या भांति
अग्निभूतके आग्रहतैं त्रिलोकवर्ती जीवनिके हितविखैं उद्यमी,
अर समस्त जीवनिपैं है समभाव जिनके, ऐसे सूर्यमित्र मुनि
राज अग्निभूतकी साथि वायुभूतके घर गये. वो पापी दुरा
चारी वायुभूत मुनिकूं देखिकरि सूर्यमित्र जानि पापके उद
यतैं कोपथकी कटुक दुर्वचननिकरि मुनिकी ऐसे निंदा करता
भया. रे सूर्यमित्र, पहले तूं कृपण, दुष्ट, महान् कुटिल परि
णामी था. अर हम दोऊ भाईनकूं भिक्षाके अर्थि घरघर
भ्रमावैथा. सो अब तूं पापके उदयकरि नग्न भयाथका घरघर
भ्रमण करेहै. इत्यादिक कटुक दुर्वचनकरि महामुनिकी निंदा
करि वा वायुभूतनैं तिर्यंच गतिका कारण निंद्य अशुभ पाप
कर्मका बंध किया. तातैं जाके जैसी शुभाशुभ गति होनहारी है
ताके तैसी सामग्री इहां मिलजाय है. ताहि निवारण करवेकूं
कोऊभी समर्थ नाहीं होय है. वे योगी सूर्यमित्र मुनिराज
उत्तम क्षमादिक गुणनिकरि साम्यभावके वृद्धीके अर्थि वायु
भूतकृत आक्रोश परीषहकूं सहकरि तहांतैं वनांतरकूं गए. तब

धर्मात्मा अग्निभूत मुनिकी निंदा करि अत्यंत दुखी होय करि चित्तविखैं संवेगकूं पायकरि समस्त विषयनविखैं ऐसे चिंतवन करताभया. अहो यह अत्यंत पापी, दुराचारी, पापबुद्धी, वायुभूत पापकर्मके उदयतैं अपने दुर्गतकी देनहारी इस सूर्यमित्र मुनिकी निंदा वृथाही करी. अथवा इस वायुभूतका इहां कहां दोषहै? मैं पापी पापात्मा नाहीं आवतैंभी मुनिकूं हटतै वायुभूतके घरि ल्यायो. कैसा है मुनि? भावी कालसंबंधी समस्त शुभाशुभ होनहारका ग्याता है. यातैं मुनिकी निंदाकरि उत्पन्न भया ऐसा पापकर्मका बंध मेरे निश्चयकरि भयाई होसी. जा कारणतैं कृत, कारित, अनुमोदनाकरि पापकर्मका बंध होयहै. भावार्थ—इहां हठतैं ल्यायकरि मुनिकी निंदा मैंने कराई. तातैं पापकर्मका बंध मेरेही भया. तातैं इस पापकी सुद्धताके अर्थि बंदीग्रहसमान घरका और अपने शत्रुसमान बंधु जननिका त्याग करि संयम ग्रहण करूं. इहां तिस भाई करि कहां कार्य है, जो वीतरागी गुरुनिकी निंदा करैं. इस घर करि अथवा कुटुंबकरि कहां प्रयोजन सधैगा. जिनकरि नानाप्रकार पापकर्मनिका आश्रय होय. जा कारणतैं अर्हंत देव, निर्ग्रंथ गुरु, अर अर्हंत करि कहे शास्त्र इन तीननकी भक्तिसमान स्वर्गमुक्तिका दायक संसारविखैं और धर्म नाहीं है. अर इन तीनूंकी निंदा समान नरकनिगोदको दायक और महान पाप नाहीं है. भावार्थ—जो अर्हंतादिक भक्ति है सोई बडा धर्म है. और जो इनकी निंदा सोई महान् पाप है. याभांति विचार करि पुण्यात्मा अग्निभूत चित्तविखैं दुगुणा वैराग्यकूं पाय संसार देह भोगनिविखैं उदास होय ग्रहवासका परित्याग करि बाह्य अभ्यंतर चौवीस प्रकार परिग्रहकूं छोडि

Scanned by CamScanner

मन, वचन, कायकरि देवनिहूकें दुर्लभ ऐसा संयम, कर्मनिकी हानिके अर्थि पुण्यके उदयतैं अंगिकार किया. अहो वह पापभी यहां भला है, जा पापकरि ग्यानवान् पुरुष संवेगकूं अर मोहरूप वैरीका घातक महान् तप संयमकूं प्राप्त होय.

अब अग्निभूतकी भार्या सोमदत्ता इस वृत्तांतकूं जानि तुरतही भर्तारका वियोगसंबंधी सोकतैं मलीन मुख होय वायुभूतके समीप जाय सोकके शांतिके अर्थि ऐसे कहत भई. हे वायुभूत, तैं दुष्ट परिणामतैं महामुनिकी निंदा करी, ताकरि थारा भाई अग्निभूत वैराग्य पायकरि मुनि भया. सो जौंलौं कोउ नाहीं जानैं तौंलौं आपां दोऊं चालिकरि समझाय तांहि इहां ले आवैं. इस कार्यके सिद्धिके अर्थि तूं मेरी साथि चालि. अर जो अपने चालनविखैं दीर्घकाल लगैंगा तो फिर तेरा भाईकूं ल्यानेकूं हम तुम दोऊ समर्थ नाही व्हैंगे. याभांति सोमदत्ताके वचनतैं महाक्रोधायमान होयकरि क्रोधांध वायुभूत कोपकरि अग्निभूतकी भार्या जो सोमदत्ता मातासमान बडी भाउज ताके मुखपरि पादकरि ताडना करी. भावार्थ–क्रोधतैं भोजाईके मुखपैं दृढ लात दई. तब वायुभूतकी पादकी ताडनातैं सोमदत्ता स्वपरघातक क्रोधकूं पाय करि निंद्यकर्मका कारण जगत निंद्य इसभांति निदान करती भई. अरे दुराचारी, इहां तो मैं अबला कहिए निर्बल हूं. तेरे मुखपैं उलटी लात देनेकूं समर्थ नाहीं; तथापि जन्मांतरविखैं जैसीतैसी स्त्री हूंगी तहां तेरा इसही पादका स्तोक स्तोक खंडन करुंगी, भखुंगी. अहो यह बडी अचरजकी वार्ता है. जे क्रोधकरि आंधे दुराचारी पापी जीव हैं ते अपना अर परका हिताहितकूं नाहीं देखे है. ऐसे जानिकरि धर्मबुद्धी ग्यानी पुरुषनिनैं दोऊ लोकका घातक अर धर्मशर्मका

Scanned by CamScanner

का विनासक ऐसा शत्रुसमान क्रोध, क्षमारूप बाणनिकरि हनिवेयोग्य है.

अब वायुभूतके मुनिराजकी निंदा कियेतैं सातवे दिन अत्यंत पापकर्मके उदयतैं सर्व सरीरविखैं महा घोर दुःखनिको येक निधानसम उदंबरजातिका महान कोड आदि व्याधीनिकरि घोर दुःखनिकूं भोगि आर्तध्यान प्रगट भया. आचार्य कहेहैं, अहो जीवहो, महान् पाप कर्मके उपार्जन करि पापी जीव इसही भवविखैं तत्काल नानाप्रकारके क्लेशनिकरि दुःखनिकूं पावे है. अर परभवविखैं जे नारकादिसंबंधी दुःख भोगवे है तिनकी कथा कहिवेकूं कोऊभी समर्थ नाहीं है. अब वो वायुभूत उदंबर कोढ आदि व्याधीनिकरि घोर दुःखनिकूं भोगि आर्तध्यानकरि प्राणनिकूं छोडि पापके उदयतैं ताहि कौसंबीपुरीविखैं गर्दभी कहिए गद्धी भई. अहो भव्य जीव हो परमपवित्र, परमपूज्य, अर्हंत देव, निर्ग्रंथ गुरु, दयामई धर्मनिके निंदक जीवनिके पापके उदयतैं इसही भवविखैं भूत, भावी, वर्तमान पुण्यकर्मका अर सुखका नास होहै. याभांति जानिकरि भव्य जीवनिनैं प्राणनिका अंत होतैंभी अर्हंत देव, निर्ग्रंथ गुरु, दयामई धर्म, अर अर्हंत करि कहे शास्त्र अर धर्मात्मा श्रावक इनिकी निंदाका त्याग करनां जोग्य है. अब वा गर्दभी पापके उदयकरि अति दुःखनी नानाप्रकारके सैंकडा क्लेशनिके दुःख और क्षुधा, तृषा, शीत, उष्णसंबंधी तीव्र वेदना बहुरि लोकनिविखैं पैंडपैंडविखैं काष्ठपाषाणकी ताडना आदि अनेक प्रकार दुःखनिकूं भोगि अल्प आयुके अंत मरणकरि तहांही कौसंबीविखैं महा दुःखनी सूरडी भई. सो सूरडी स्वामीरहित जाका कोऊ रक्षक नाहीं, पराधीन, क्षुधा, तृषा आदि तथा

Scanned by CamScanner

लोकनिकी ताडना आदि अनेक प्रकार दुःखनिकूं भोगि बडे कष्टतैं प्राणनिका त्याग करि पापके उदयतैं याही चंपापुरीविखैं चांडालके वाडेमे कूकरी भई. कैसी है कूकरी ? महान् घोर दुःखनिकरि व्याकुल है और विकराल कहिए महाभयंकर है. मुख जाका. बहुरि अत्यंत क्रूर है परिणाम जाके. सो कूकरी पापके उदयकरि तिसही चांडालका वाडामैं क्षुधा, तृषा, शीत, उष्णसंबंधी नानाप्रकारके दुःखनिकूं भोगि लोकनिकी ताडना. करि अति कष्टतैं प्राणनिकूं छाडि तहांही कौसांबी नामा चांडालीके जात्यंधानामा चांडाली पुत्री भई. कैसी है चांडाली ! पापके उदयकरि दुःखकरि परिपूर्ण है सरीर जाका. और जन्महीतैं आंधी अर अत्यंत दुर्गंधमई है शरीर जाका. बहुरि विकराल कुरूपकी धरनहारी भई.

अथानंतर तिह अवसरविखैं धर्मध्यानविखैं सावधान सूर्यमित्र अग्निभूत दोऊ मुनिराज पृथ्वीविखैं विहार करते जहां वायुभूतका जीव जात्यंधा चांडाली भई हुती तहां आये. तहां सूर्यमित्र मुनिराज तो उपवासेथे सो वनविखैंतिष्ठे. अग्निभूत मुनि आहारके अर्थि ता नगरीमैं गये. सो तहां जावतैं मार्गविखैं बहुत वृक्षनिके बीच जामूणका दरखतके तले बैठी दुःखकरि पीडित वा चांडालीकू देखि ताके दुःखकरि मुनि दुःखित भये. अर तिह अवसर विखैं भवांतरका स्नेहतैं सोककरि अग्निभूतमुनिके नेत्रनितैं बलात्कार अश्रुपात भये. भावार्थ—चांडालीकूं दुःखी देखि पूर्वस्नेहके संबंधतैं मुनिके नेत्र अश्रूनतैं बलात्कार भरगये. तब तहांहीतैं उलटे वाहुड सिघ्रही जाय अपने गुरुकूं नमस्कार करि याभांति पूछते भए. भो महा ग्यानिन् चांडालीके दर्शनमात्रतैं मेरे नेत्रनविखैं

Scanned by CamScanner

अश्रुपात भए. और मेरे अतिसयकरि दुःख भया. सो इहां सोकादि दुःखनिका कारण कहाहै ताहि तुम कहो. तब सूर्यमित्र गुरु ऐसे कहत भए. भो धीमन्, तेरा भाई कुबुद्धी वायुभूत हमारी निंदासंबंधी पापके उदयकरि निरंतर दुःखभोगि लोकनिंद्य तिर्यग्गतविखैं भ्रमण करि यह सुखका लेशकरिभी रहित जातिंधा चांडाली भई है. और पूरवभवका स्नेहका संबंधतैं तेरे दुःख सोकादि भए है. जातैं प्राणीनके भवभवविखैं स्नेह और वैर पूरव संबंधतैं प्रगट होय है. भो अग्निभूत, इस चांडालीके कल्याणकारिणी अति निकट भव्यता आई हैं सो सुन, जो आजिही याका मरण होयगा. यातैं हे विचक्षण, तूं शीघ्रही जायकरि न्यायके वचनतैं संबोध वा चांडालीकूं पुण्यके प्राप्तिके अर्थ श्रावकके व्रतपूर्वक संन्यासकूं ग्रहण करावहू. याभांति सूर्यमित्र गुरुके वचनकरि परोपकारी अग्निभूत सीघ्रही जायकरि जहां चांडाली तिष्ठैथी तहां प्रासुक भूमिपैं तिष्ठकरि अमृतसमान मधुर वचनकरि ऐसै संबोधते भए. हे पुत्री, तूं पापकर्मके उदयतैं चांडालसंबंधी अत्यंत नीचकुलविखैं घोर दुःखनिकी भोगनहारी जन्मतैं आंधी चांडालकी पुत्री चांडाली भई. सो अब तिस पापकर्मके शांतिके अर्थि और सुखके प्राप्तिके अर्थि श्रावकका धर्म अंगिकार करि. तिस धर्मके सिद्धिके अर्थि मेरे कहिवेतैं मदिरा, मांस, मधु कहिये सैत और पंच उदंबर फल इनका त्याग करि. बहुरि खाद्य, स्वाद्य, लेय, पेय आदि चतुर्विध आहारका त्याग करि सहित पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रतपूर्वक संन्यास मरण अंगिकार करि. जातैं इहां आजही तेरा मरण व्हैसी. तातैं सुखके प्राप्तीके अर्थि अनसन व्रतकरि शीघ्रही कल्याणका साध-

Scanned by CamScanner

न करि. या भांति अग्निभूत मुनिराजका वचन सुनिकरि वा
जात्यंधा चांडाली चार प्रकार आहारका त्यागकरि शीघ्रही
श्रावकके व्रत धारिकरि संन्यास अंगिकार करती भई.

सूर्यमित्र मुनि चंद्रवाहन राजाकूं कहे है, हे राजन्, जिह
अवसर चांडालीने संन्यास ग्रहण किया तिस अवसरविखैं इस
नागसर्म बिरामणकी भार्या त्रिदेवी, पुत्रीके प्राप्तीके अर्थि उत्स-
वसहित हर्षकरि इन नागनिनैं पूजवेकूं आवैथी. तब चांडाली
मार्गके वशतैं निकट आवती बिरामणकी भार्या त्रिदेवीके वा-
दित्रनिका नाद सुनकरि यह निदान करती भई, अहो, व्रत
संन्यासके फलकरि इस त्रिदेवी बिरामणके उत्तम पुत्री होंगी,
ऐसी प्रार्थना करू हूं. इस सिवाय और शुभगतिकूं नाहीं जाचू
हूं. जैसे कोड भूतलविखैं अग्यानी कुबुद्धी मूर्ख रत्नके साटे
कांच खरीदै, और हाथीतैं गर्दभकूं लेवै, बहुरि कांचन देय
लोहकूं ग्रहण करैं, तैसैं यह ग्यानहीन जात्यंधा स्वर्गसंपदाका
कारण जो व्रतसंन्यासका फल पुण्यकर्म ताकरि निंद्य स्त्रीपर्या-
यकी हर्षकरि जाचना करी. तातैं तिस निदानके दोषकरि इस
नागसर्म बिरामणके यह नागश्री नामा पुत्री भई है. कैसी है
नागश्री? व्रतके संस्कारकी है वासना जाके. सो वह नागश्री
आज नागनिके पूजवेकूं इहां आईथी. तब हम सूर्यमित्र अग्नि-
भूतनैं पुत्रीकी बुद्धिकरि याकूं सम्यक्तसहित श्रावकके व्रत
ग्रहण कराए. सूर्यमित्र मुनिराज कहे है, हे राजा चंद्रवाहन,
साधूनका निंद्यक जो वायुभूत सोई पापकर्मके उदयकरि निंद्य
तिर्यंच गतिके चार भवनिमैं महाघोर दुःख भोगकर यहां
यह नागश्री भई. हे राजन्, पापकर्मके उदयकरि तो जीव दुर्ग-
तिविखैं भ्रमण करे है. और पुण्यकर्मके उदयकरि शुभगतीकूं

Scanned by CamScanner

प्राप्त होय है. बहुरि पुण्यपापरूप मिश्रभावकरि मध्यगति जो मनुष्यगति ताहि प्राप्त होय है. धर्मात्मा जीव धर्मके फलतैं इंद्र अहमिंद्र चक्रवर्ति पदके सुख भोगवे है. और पापी जीव पापकर्मके फलतैं नरक तिर्यंच गतिके घोर दुःख अनुभवे है. धर्मात्मा पुरुष धर्मके फलतैं इंद्र नरेंद्र नागेंद्र तीर्थंकरादिकनिकी संपदा पावे है. और पापी जीव पापतैं प्रचुर दारिद्रकूं पावे है. जे तीन लोकविखैं सारभूत सुख है ते समस्त सुख धर्मात्मा पुरुषनिके धर्मके प्रभावतैं प्रगट होय है. और जे जगतविखैं नानाप्रकारके दुःखनिके समूह है ते पापी जीवनिके पापके फलतैं उदय होय है. धर्मके सेवनकरि तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, आदि उत्तम पुरुष हो है. और पापके उपार्जनकरि परनिके दास तथा किंकर, घरघरके भिखारी, दीन, जाचक हो हैं. जे वस्तु तीन लोकविखैं दुर्लभ है अथवा दूर द्वीपांतर देशांतरविखैं वर्तेहै, ते समस्त मनोवांछित वस्तु धर्मात्मा पुरुषनिके धर्मकरि स्वयमेव प्राप्त होय है. और पापी जीवनिके पापके उदयतैं हातमें तिष्ठतीहू वस्तु नष्ट हो जायहै. याभांति धर्मात्मा पुरुष धर्मके प्रभावतैं सर्व उत्तमगतिकूं पावे है. और पापी जीव पापके उदयतैं संपूर्ण दुःखकी खानि नरकनिगोद कुगतिकूं प्राप्त होय है. याभांति जानिकरि, अहो भव्य हो, मन वचन कायकी शुद्धताकरि सकल पापनिकूं छोडिकरि स्वर्ग मुक्तीनिके सुखनिके प्राप्तीके अर्थि जिनेंद्रदेवकरि भाषित परम धर्मका सदाकाल सेवन करो. धर्म है सो ब्रह्म कहिये लोकांतिक देव, नरेंद्र, अमरेंद्र पदका दायक है. और मैभी सुभ गतीके अर्थि सदाकाल धर्महीं सेवूहौं. और धर्मकरिही अनुपम आत्मीक धर्मकूं आचरण करूहूं. तातैं हे धर्म,

Scanned by CamScanner

मेरे संसारके दुःखकूं दूर करि. इहां उपांत काव्यविखैं तो पुण्य पापका फलकूं प्रत्यक्ष जानि करि पापका परिहार करो और धर्मका सेवन करो, ऐसा भव्य जीवनिप्रति उपदेश दिया है. बहुरि अंतकी काव्यविखैं संबोधनसहित सप्त विभक्तिन करि धर्मकी महिमा दिखाय संसारका भय दूरि करनेकी धर्मतैं प्रार्थना करी है.

इत्याचार्य श्रीसकलकीर्तिविरचित सुकुमाल चरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देश भाषामय वचनिकाविखैं नागश्रीका भवांतरका है वर्णन जामैं ऐसा पंचमसर्ग समाप्त भया.

चौपाई.

श्रीमत तीनभुवनके ईस, गुणसागर प्रणमूं नतशीस॥
पंच परमगुरु शिवसुखहेत, जिनमंदिर जिनबिंबसमेत.

अथानंतर सूर्यमित्र मुनिराजनैं अमृतसमान मधुरवानी करि कहे, पापकर्मतैं प्रगट भए घोर दुःखनिकरि सहित ऐसे नागश्रीके पूर्व भवांतरनिकूं राजा चंद्रवाहन समस्त बिरामण समस्त पुरजनकरि सहित नागसर्म बिरामण सुनकरि संसार देह भोगनिविखैं और ग्रहवासविखैं वैराग्यकूं पाय धर्मका अद्भुत महातम जानिकरि चित्तविखैं ऐसे चिंतवन करता भया, अहो इस लोकविखैं जिनेंद्र भगवान करि कह्या दया मई जैनधर्मही सराहिवे जोग्य पुण्यकर्मका कारण है और मूर्ख मिथ्यादृष्टीनकरि कल्पित समस्त जीवनिका घातक ऐसा यग्यादिक और धर्म, कल्याणका कारण नाहीं. भुक्ति कहिए इंद्रादिकनिके भोग और मुक्ति कहिए समस्त कर्मक्षय स्वरूप सुद्धात्माका है लाभ जाविखैं ऐसा परम निर्वाण इ

दोऊनके कारण अठरा दोषरहित छियालीस गुणकरि विराजमान सर्वग्य वीतराग जिनेंद्र देवही महादेव है. और और दोषाविष्ट हरिहरादिक कदेभी देव नाहीं है. बहुरि सर्वज्ञ भगवानकरि कहे ग्यारह अंग चतुर्दश पूर्वगतही धर्मके मूल सांचे शास्त्र है. और मूर्खनिकरि कल्पना किए वेद भागवत रामायण महाभारत आदि और शास्त्र महान पापके मूल हैं सांचे नाहीं. और लोकालोकके ग्यायक महा प्रवीण समस्त जीवनिके विनाकारण बांधव निर्ग्रंथही जैनके जती परमपूज्य गुरु है. और पांचौ इंद्रियनके विषयनकरि आकुल और मिथ्यादृष्टी कदेभी गुरु नाहीं. और भूत, भविष्य, वर्तमान त्रिकालवर्ति समस्त वस्तुस्वरूपका सूचक तीन जगतविखैं दीपकसमान जैसा ग्यान निर्ग्रंथ योगीश्वरनिका है तैसा ग्यान अन्य मिथ्या दृष्टीनके स्वप्नविखैंहू नाहीं. जैसे केई मूर्ख हालाहल विषकूं भक्षण करि दीर्घकाल जीवाकी वांछा करै, तैसेही कुमार्गी मिथ्यादृष्टी जीवघातकरि कल्याणकी वांछा करे है. जैसे कोऊ अग्यानी बाउली अपने कंठविखैं पहुप मालकी भ्रांतिकरि सर्पकूं धारण करैं, तैसे कुमार्गगामी मिथ्यादृष्टी पुरुष संध्यातर्पणादिकरि धर्मबुद्धितैं पापकूं आचरण करे है. अहो, यह कुमार्गगामी मिथ्यादृष्टी जीव मदिराके घटसमान केवल बहिरंग मलका किंचित अभावतैं अंतरंगविखैं शुद्धताकूं नाहीं प्राप्त होय है. भावार्थ—जैसे मदिराकरि भरे घटनिकूं जलतैं बाहर सैंकरोवार धोवतैं धोवतैंभी अंतर्गत मदिराके दोषतैं दुर्गंधरहित सुद्ध नाहीं है. जैसेही अंतर्गत कषायमलकरि व्याप्त मिथ्यादृष्टी जीव बाह्य स्नानादिकनिकरि सुद्ध नाहीं होय है. केवल नरक निगोदका दायक पापकर्म-

Scanned by CamScanner

हीका बंध करे हैं. मिथ्यात्व कषायरूप प्रचुर मोहके मलकरि लिप्त कहिए अत्यंत मलीन ऐसे मिथ्यादृष्टी जीव इहां गंगा, जमना, त्रिवेणी, गोदावरी, आदि नदी और पुष्कर, लोहागर आदि तलाव, कुवे, कुंड, बावडी, बहुरि समुद्र आदि जलके निवाणनिविखैं स्नानतैं अपने सुद्धताकी वांछा करे है. ते अग्यानी जीव बुद्धीके भ्रमणतैं तृषाकी शांतीके अर्थि भाडलीके जलकूं पीवेहैं. भावार्थ—जैसे जेष्ठमासविखैं अत्यंत तृषातुर मृग दूरतैं फूले कांसकूं देखि जलके भ्रमतैं दौरकरि तहां जाय हैं सो कांसतैं प्यास कैसे मिटैं? केवल खेदखिन्न ही होय. तैसे मिथ्यात्वकरि मलीन मिथ्यादृष्टी जीव गंगादिक तीर्थनिविखैं इतने दिन वृथाही गमाए. स्नानकरि शुद्ध भया चाहेहै सो केवल घोर पापका बंध करै है शुद्ध नाहीं होय है. शुद्धता तो मिथ्यात्व कषाय मलके अभाव भए होय. जलविखैं स्नान किएतैं कदाचित शुद्धता नाहीं होय है. ऐसा भावार्थ जानना. हाय हाय! मैं कुबुद्धीकरि मिथ्यामार्गविखैं इतने दिन वृथाही गमाए, अब मेरे कुमतीका अभाव भया, सुमतकी प्रगटता भई. तातैं पुण्यके उदयकरि भले मार्गकूं प्राप्त भया हौं. और अबही मैं पुण्यवान भयाहूं. धन्य भया हूं, जातैं इस सूर्यमित्र मुनिराजका प्रसादतैं अनादि कालतैं अति दुर्लभ अमोलिक ऐसा जैनधर्म मैंने पाया. इत्यादि नानाप्रकार चिंतवनके उपायकरि चित्तविखैं द्विगुणित संवेद निर्वेदकूं पाय सूर्यमित्र मुनिराजके वचनरूप अमृतका पानतैं बाह्य अभ्यंतर परिग्रहकरि सहित मिथ्यात्वरूप विषकूं वमनकरि नागश्रीका पिता नागसर्म पुरोहित भगवती दीक्षा ग्रहण करता भया. और ताही समय और बहुत ब्राह्मण सूर्यमित्र मुनिराजके वचनतैं जिन

धर्मका अद्भुत माहात्म्य जानिकरि संसारदेहभोगादिविखें परम वैराग्यकूं पायकरि शीघ्रही कुमार्गकूं और बाह्य अभ्यंतर परिग्रहकूं त्यागकर मोक्षके अर्थि मुनीका संयम ग्रहण किया. और वा नागश्री अपने पूर्वभव सुनकरि अनाचारके पापनितैं भयभीत होय और संवेगरूप आभूषणकूं पायकरि ताहि समय एक सुपेद साडीविना समस्त परिग्रहका त्यागकरि बाल्यपणेमेंही अति प्रवीण अर्जिका भई. और नागसर्म पुरोहितकी भार्या त्रिदेवी बिरामणकी आदि प्रवीण बहोत विरामण्याभी जैनधर्मकूं सुनकरि संसार देहभोगनिविखें वैराग्यकूं पाय मोहरूप वैरीका घात करि शीघ्रही स्वर्ग मोक्षादिककी प्राप्तिके अर्थि परिग्रहका त्याग करि सारभूत सुखनिकी खानि और मुक्तिकी मातासमान ऐसी भगवती दीक्षा अंगिकार किई. और चंपापुरीका राजा चंद्रवाहनभी नागश्रीके कथाके श्रवणमात्रतैं विषयभोगादिविखें उदास होय और लोकपाल पुत्रकूं राज्य देय बहुत भव्य जीवनिकरिसहित मन, वचन, कायकी शुद्धताकरि मोक्षके अर्थि जिनमुद्राकूं हर्षतैं धारण किई. और राजा चंद्रवाहनकी बहुत राण्याभी वैराग्यकूं पाय भरतारकी साथि मोक्षसुखके अर्थि शीघ्रही आर्यकानिके व्रत आचरण किए. और औरभी पुरवासी बहुत लोक नागश्रीकी कथारूप अमृतपानतैं मिथ्यात्वरूप विषका वमन करि. और परम सम्यग्दर्शनकूं ग्रहण करि कितनेक तो मोक्षके सिद्धीके अर्थि महाव्रत धारण किये. और केईकनिनैं अणुव्रत ग्रहण किये. बहुरि केईकनिनैं धर्मविखें महान् श्रद्धाही ग्रहण करी. तावर पीछें वह सूर्यमित्र मुनिराज बडा संघसहित धर्मकी प्रभावनाके अर्थि

Scanned by CamScanner

शीघ्रही विहार करनेकूं प्रारंभ किया. सूर्यमित्र गुरुके वचन-
करि वे समस्त नवीन दीक्षित शिष्य निरंतर सावधान यत्ना-
चारतैं अंगपूर्वादि समस्त श्रुतकूं पढते भये. ते समस्त मु-
निराज सूर्यमित्र गुरुकरिसहित कर्मरूप वनविखैं दावानल-
समान ऐसा बारह प्रकार घोर तप भवभोगरूप वैरीके सां-
तीके अर्थि करते भये. और सूने घर, पर्वतकी गुफा, पर्व-
तके सिखर, पर्वतके दराडे और निर्जन गहन वन आदि
स्थाननिविखैं ध्यान और अध्ययनकी सिद्धिके अर्थि वे मुनि
प्रमादरहित निवास करते भये. और गमन करते वन पर्वत
आदि स्थाननिविखैं जहां सूर्य अस्तकूं प्राप्त होय तहां ही वे
मुनि जीवदयाके प्राप्तीके अर्थि कार्योत्सर्गकरि तिष्ठे हैं. और
वे मुनि एकाग्र चित्तकरि यत्नतैं निरंतर धर्मशुद्ध ध्यानकूं
चिंतवे है. बहुरि आर्तरौद्र ध्यानकूं कदेभी नाहीं विचारे है.
और वे मुनि सदाकाल भव्य जीवनिकूं धर्मका उपदेश स्वा-
ध्याय षट् आदि शुभकर्मनिकूं कहे है. बहुरि भोजन स्त्री-
आदि विकथानकूं कदेभी नाहीं करे है. और वे मुनि सार-
भूत अठाईस मूल और चौरासीलाख उत्तरगुण और चंद्रमा-
समान उज्जल चारित्र मोक्षके सिद्धीके अर्थि महाव्रत धारण
किये. अर केईकनिनैं अनुव्रत ग्रहण किये. बहुरि केईकनिनैं
धर्मविखैं महान श्रद्धा ही ग्रहण करी. तावर पीछैं वह सूर्यमित्र
मुनिराज बडा संघसहित धर्मकी प्रभावनाके अर्थि शीघ्रही वि-
हार करनेकूं प्रारंभ किया. सूर्यमित्र गुरुके वचनकरि वे समस्त
नवीन दीक्षित शिष्य निरंतर सावधान यत्नाचारतैं अंगपूर्वादि
समस्त श्रुतकूं पढते भये. ते समस्त मुनिराज सूर्यमित्र गुरुक-
रिसहित कर्मरूप वनविखैं दावानलसमान ऐसा बारह प्रकार

Scanned by CamScanner

घोर तप भवभोगरूप वैरीके सांतीके अर्थि करते भये. अर सूने घर, पर्वतकी गुफा, पर्वतके सिखर, पर्वतके दराडे अर निर्जन गहन वन आदि स्थाननिविखैं ध्यान अर अध्ययनकी सिद्धिके अर्थि वे मुनि प्रमादरहित निवास करते भये. अर गमन करते वन पर्वतआदि स्थाननिविखैं जहां सूर्य अस्तकूं प्राप्त होय तहांही वे मुनि जीवदयाके प्राप्तीके अर्थि कायोत्सर्ग करि तिष्ठे है. अर वे मुनि एकाग्र चित्तकरि यत्नतैं निरंतर धर्मशुक्ल ध्यानकूं चिंतवे है. बहुरि आर्तरौद्र ध्यानकूं कदेभी नाहीं विचारे है. अर वे मुनि सदाकाळ भव्यजीवनिकूं धर्मका उपदेश स्वाध्याय षट्आदि शुभकर्मनिकूं कहेहै. बहुरि भोजन स्त्रीआदि विकथानकूं कदेभी नाहीं करे है. अर वे मुनि सारभूत अठाईस मूल अर चौरासी लाख उत्तरगुण अर चंद्रमासमान उज्जल चारित्रकूं जतनसहित मन, वचन, कायकी शुद्धता करि अतिचाररहित पाले है. अर वह मुनि कलह, युद्ध, अर स्त्रीनके रूप, बहुरि मिथ्यादृष्टीनके स्थान, आदिके देखवेविखैं तो अंधसमान है. अर अर्हंत देव, निर्ग्रंथ गुरु, अरहंतके प्रतिबिंब, निर्वाणभूमिआदि धर्मके स्थानकनिकूं अवलोकन करे है. अर वे ग्यानीमुनी खोटे तीर्थ, खोटे स्थान, अर खोटे मार्ग इनके गमनविखैं पांगलासमान है. बहुरि निर्वाणभूमिआदि भलेतीर्थ अर भलेगुरु यात्राआदि धर्मकार्यविखैं गमन करनहारे है. अर वे मुनि स्त्रीकथाआदि विकथा अर पराई निंदाआदिके करनेविखैं गूंगासमान है. अर उत्तम पुरुषनिकी समीचीन कथा सिद्धांत बहुरि जीवादिक तत्वनिके स्वरूप आदिकके कहनेविखैं उत्साहसहित है. अर जे भारत रामायण भागवतआदि खोटे शास्त्र, अर खोटी कथा, खोटे

Scanned by CamScanner

वचन, तिनके सुणवेविखैं वहरेसमान है. बहुरि सर्वज्ञकरि कहे आगम अर आत्मतत्वादि धर्मआदिके सुणवेविखैं सदा सावधान है. बहुरि वे मुनिराज परनिंदाकरि रहित है. अर स्वाध्याय ध्यानादिकविखैं निरंतर चित्तकूं लगावे है. बहुरि पापके लेशमात्रतैं अति भयभीत केवल मोक्षहीके वांछक है. बहुरि वह मुनि घोरवीर उपसर्गविखैं निर्भय समस्त विकार-करि रहित परिषह सहनेविखैं महा धीरवीर है अर पापकर्मका बंध होनेविखैं बडे कायर है. इत्यादिक नानाप्रकार शुभ आ-चरण करि सोभायमान जीते है मोहरूप वैरीके संतान जिन बाह्य अभ्यंतर परिग्रहकरिरहित सारभूत गुणनिकरिसहित तपही है धन जिनके ऐसे वे मुनिराज सूर्यमित्र गुरुकरिस हित यत्नतैं नाना देश पुरग्रामादिकनिविखैं विहार करे है. अर वे नागश्रीआदि समस्त अर्जिका अनेक देश पुरग्रामादि-कनिविखैं विहार करती भई. कैसी है वह अर्जिका शुभ है आ-सय जिनका अर धर्मध्यानविखैं तत्पर सदाकाल सिद्धांतनिके पढनेविखैं है उद्यम जिनके. अर हत्या है मोह, प्रमाद अर इं-द्रिय ज्या. व्रतशीलादिकरि भूषित, आत्मकार्यके साधनविखैं उद्यमी, पापतैं भयभीत, सरल है परिणाम जिनके बहुरि वि-काररहित है भेस अंग जिनके, नानाप्रकार तपश्चरणविखैं त-त्पर अत्यंत निर्मल है.

अब सूर्यमित्र मुनिराजके दुर्धर तपश्चरण करि अर परिणा-मनिकी अत्यंत विशुद्धता करि अर अति निर्मल आचार सं-यमनिकरि बहुरि धर्मशुक्लादि समीचीन भावनिकरि उग्रदीप्त आदिक सारभूत नानाप्रकारकी रिद्धि स्वयमेव प्रगट भई. वे सू-र्यमित्र मुनिराज संघसहित पृथ्वीविखैं विहार करते अर अने-

Scanned by CamScanner

भव्य जीवनिकूं मोक्षमार्गविखैं स्थापन करते धर्मोपदेशरूप अमृत करि समस्त जीवनिकूं तृप्त करते महंत पुरुषनिके गुरु एक दिन धर्मकी प्रभावनाके अर्थि राजग्रह नगरके समीप आयकरि प्राशुक वनकी भूमिविखैं विराजे. तिह अवसरविखैं कौसंबीपुरीका राजा अतिबल सो राजग्रह नगरका सुबल-नामा राजा ताका पितृव्य कहिए काका था. ताके दर्शनकूं आयकरि सुबलकरि सन्मानित भया थका प्रीतकरि तिसही राजग्रह नगरविखैं तिष्ठैथा. तब वे सुबल अतिबल दोउ राजा धर्मके वांछक वनपालके मुखतैं सूर्यमित्र मुनिराजका आगमन जानिकरि शीघ्रही धर्मकेआर्थि मुनिराजके वंदनाकूं वनकेमध्य गये. तहां तिष्ठते दीप्तरिद्धिकरि प्रकासमान सूर्यमित्र मुनिराजकूं शीस नवाय प्रणामकरि हर्षसहित प्रासुक अष्टद्रव्यकरि भक्तिपूर्वक पूजनकरि अर उपमारहित बहुरि समस्त दिसानके अंधकारका विनाशक ऐसा सूर्यमित्र मुनीके देहकी देदीप्यमान क्रांत्यादिकनिकूं देखिकरि राजग्रह नगरका राजा सुबल अतिशयकरि बहुत विस्मयवान भया. तपश्चरणका अतिशयके देखवेतैं हर्षायमान भया ऐसा राजा सुबल साक्षात् प्रत्यक्ष दीक्षाका फल देखिकरि अपने हृदयविषैं ऐसे तर्क करता भया. अहो! यह सूर्यमित्र पुरोहित विप्रनमे प्रधान मेरा दाससमान शुभचिंतक किंकर था; सो भगवती दीक्षा अर तपश्चरणनिके अनुपम फलतैं अनेक भानुसमान देदीप्यमान रूपवान महा तेजस्वी महान ज्ञानी कांतीकर प्रकासमान किएहै दिसानके समूह जानैं सकल संघविखैं प्रधान ऐसा गुणवान सूरपदका धारक भया है. जिन पुण्यवंत महंत पुरुषनिके जिन तप संयम ध्यानादिकनिकरि इसही लोकविखैं पूजा सत्कार अर

Scanned by CamScanner

तीन जगतविखैं पूज्यपना बहुरि नानाप्रकारके चमत्कारनिकी प्रत्यक्ष दिखावनहारी महानरिद्धा प्रगट होय है. तो तिन भव्य जीवनिके तपश्चरणादिक करि परलोकविखैं सारभूत कैसी विभूत संपदा वा कौनसा उत्तम उच्चपद होयगा. तातैं मैं अपने चित्तविखैं ऐसी जानूहू जो तपश्चरणके फलतैं इसही लोकविखैं तैसी अनुपम रिद्ध संपदा पाइएहै तो परलोकविखैं यातैं अधिक तैशीही ऋद्धि संपदा पावेंगे ऐसा निश्चय है.

अर जो राज्यसंपदाके त्याग करि इस भवविखैं वा परभवविखैं परम संपदा पाइए है. तो तिस राज्यसंपदाके छोरनेविखैं ग्यानवंत पुरुषनिकै कालका विलंबन कहा है? भावार्थ—कछूभी कालका विलंबन नाहीं है. याभांति चित्तविखैं विचार करि राजग्रह नगरका राजा सुबल धर्मविखैं अर धर्मका फलविखैं परम संवेगकूं पाय बहुरि संसार देहभोगादिविखैं अत्यंत उदास होय राज्यका अत्यंत पापरूप भारनै, अर गृहबंधनके छोरवेकूं बहुरि कल्याणरूप निर्मल तपश्चरणका भारकूं अंगीकार करवेकूं उद्यमी भयो. तावरपीछैं राजा सुबल अपने तपकी प्राप्तिविखैं कौसंबीका राजा अतिबलप्रत कहता भया. हे धीमन् नृप! अतिबल मगध देश राजग्रहनगरका परिपूर्ण राज्य तूं ग्रहण करि, मैं संयम अंगीकार करूं हूं. तब धर्मात्मा राजा अतिबल सुबलकूं कहता भया भो राजन्, जो महानदोष राज्यका तोहि दीख्या सोही महानदोष विशेषसहित अब मोहि दीख्या है अर तप धर्म चारित्रके जे गुण तोहि दीखे तेही गुण भेद विग्यानरूप निर्मल नेत्रकरि निश्चय मैं मोहि अधिक दीखे है यातैं तपःसंयमादि गुणनिके प्राप्तीके अर्थि दुर्द्धर राज्यरूप पापका भार छांडिकरि मुक्तीका राजके अर्थि

Scanned by CamScanner

तेरी साथि तपःसंयम अंगीकार करूंगा. ऐसे वचनकरि अतिबलकूं राज्यसुखतैं पराङ्मुख जाणि राजा सुबल मीनध्वज पुत्रके अर्थि राज्यसंपदा देयकरिआत्महितके अर्थि अतिबलादि बहुत राजानिकरि सहित राजा सुबल सर्व परिग्रहनका त्याग करि शीघ्रही सूर्यमित्र मुनिराजके समीप महामुनि भयो. तापीछैं तिन मुनिकरिसहित सूर्यमित्र मुनिराज धर्मकी प्रभावनाविखैं उद्यमी जगतके बंधु सबनिके हितकारी परम प्रवीण मोक्षमार्गकी प्रवृत्तीके अर्थि भव्य जीवनके संबोधवेकूं पुर ग्राम वनादिकनिविखैं विहार करवेकूं आरंभ करते भए.

अथानंतर नागश्री अर्यिका निजसक्ति प्रमाण यावज्जीव निर्दोष तपकरि अर अतिचाररहित भलीभांति संयमकूं पालि बहुरि अंतविखैं एक महिनेकी आयु अवशेष जानि समाधिमरनके सिद्धिके अर्थि समस्त आहारनका त्यागकरि अर शरीरतैं नेहका त्याग करि आनंदसहित संन्यास अंगीकार किया. तिह अवसरविखैं क्षुधा, तृषा आदि समस्त परिषहनकूं जीत अर उपवासरूप अग्निके संयोग करि शीघ्रही गात्र सुकाय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र अर सम्यक् तप ए परम चार आराधनाका आराधन करि धर्मध्यानविखैं तत्पर यत्नाचारतैं समाधिमरणकरि प्राणनिका त्याग किया. निर्दोष तपःसंयमके प्रभावकरि सुखनिकी खानि ऐसा अच्युतस्वर्ग ताविखैं आकास स्फाटिक मणिमई मनोहर पद्मगुल्म विमानविखैं सो नागश्रीका जीव दिव्य रूपवान पद्मनाभनामा महर्द्धिक देव भया. कैसाहै देव ? अनेक देवनिकरि सेवनीक है चरणारविंद जाके. अर नागश्रीका पिता नागसर्म बिरामण मुनि भया था सोभी निज सक्तिप्रमाण जन्मपर्यंत निर्दोष महानतप करि

Scanned by CamScanner

आयुके अंत संन्यास धारि समाधितैं प्राणनिका त्याग करि तपः-
संयमके प्रभावतैं अच्युत स्वर्गविखैं तिसही पद्मगुल्म विमानमैं
दिव्यदेहका धारी महर्द्धिक देव भया. बहुरि नागश्रीकी माता
त्रिदेवीनामा अर्जिका निजशक्ति प्रमाण व्रत सम्यक्सहित
तपकरि अंतविखैं संन्यास धारि आत्मीक सुद्धितैं देहका त्याग
करि अपने तपश्चरणतैं उपार्जन किया जो पुण्य ताके फलतैं
अच्युत स्वर्गविखैं जो नागश्रीका जीव पद्मनाभ देव भयाथा
ताके दिव्य देहका धारक अंगरक्षक देव भया. अर चंपापुरका
राजा चंद्रवाहन, राजग्रहनगरका राजा सुबल, कौसांबीका
राजा अतिबल ए तीनूं उत्तम मुनि उत्तम तपश्चरण करि आ-
युके अंत समाधिसहित जलतैं प्राणनिका त्याग करि तपधर्मके
प्रभावतैं सुखनिकी खानि जो आरणस्वर्ग ताविखैं बडी विभूत
संपदाकरि सोभायमान महर्द्धिक देव भये. अर औरभी मुनि-
राज जावज्जीव चमत्कारी तपश्चरण कर धर्मध्यानसहित अंत-
विखैं समाधिमरणतैं प्राणनिका त्यागकरि पुण्यके उदयतैं
अपने अपने तपके जोग्य सौधर्मादि अच्युतपर्यंत षोडशकल्प-
निविखैं दिव्य विभूत अर दिव्य सुखके भोगनहारे बडी रिद्धीके
धारी महर्द्धिक देव भये. अर केईएक अर्जिका शुद्ध सम्यग्दर्श-
नके प्रभावतैं स्त्रीलिंगकूं छेद करि अपने अपने तपके अनुसार
स्वर्गविखैं महर्द्धिक देव भये. अर केईएक अर्जिका तपकरि पुण्यके
प्रभावतैं सौधर्मादि अच्युतकल्पपर्यंत स्वर्गनिमैं देव्या भई.

अब वे पद्मनाभादिक देव अंतर्मुहूर्त कालकरि संपूर्ण यौ-
वनकूं पाय सहजोत्पन्न दिव्य श्रेष्ठ वस्त्राभरणकरि मंडित सि-
लासंपुटके मध्य दिव्य कोमल सेजपरि तिष्ठते विस्मयवंत चित्त-
करिसहित तिस देवलोकसंबंधी परमसंपदाकूं देखि क्षणमात्र

तैं अवधिग्यानकूं पाय करि तिस अवधिग्यानतैं तपका फल जानि अर समस्त पूर्वभवका वृत्तांत जानिके धर्मकेविखैं दृढ बुद्धिकूं धारते भये. ता पीछे वह देव परमधर्मकी सिद्धके अर्थी अपने परिवारसहित स्फाटिकमणिमई रमणीक श्रीजिनेंद्रके मंदिर गये. तहां कोटि सूर्यतैं अधिक है तेज जिनके ऐसे जे अर्हंत परमेष्ठीनके प्रतिबिंब तिनकी नमस्कार स्तुतिपूर्वक बडी पूजा करते भये. फिर वह देव चैत्यवृक्षनिविखैं बडी विभूतकरि भक्तिसहित देवलोकसंबंधी आठ प्रकार उत्तम प्रासुक पूजन द्रव्यकरि अर्हंत भगवानकी प्रतिमाका पूजन करि बहुरि पंचमेरु नंदीश्वरआदि कुंडल रुचक द्वीपसंबंधी तथा अढाई द्वीपसंबंधी जिनमंदिरनविखैं जाय अर्हंत देवके प्रतिबिंबनिकी परम पूजा करते भये. तापीछै विदेहक्षेत्रआदि भरत ऐरावत क्षेत्रविखैं तीर्थंकर सामान्य केवली गणधरदेव तथा आचार्य उपाध्याय सर्व साधूनके चरणारविंदनिकूं भक्तिसहित पूजन करि सीस नवाय नमस्कार करि जिन पंच परमगुरुनतैं सत्यार्थ धर्मरूप अमृतका पान करि महानश्रेष्ठ पुण्यका उपार्जन करि ते देव अपने अपने स्थान आये. तहांतैं देव तप संयमतैं उपार्जन करि समस्त दिव्य सुखनिकी खानि ऐसी परम विमान संपदाकूं अंगीकार करते भये. ए देव सदाकाल धर्मविखैं तत्पर एकसो सत्तर क्षेत्रनिविखैं जाय करि धर्मके अर्थि तीर्थंकरनके पंचकल्याणकविखैं समीचीन पूजा करेहै. अर अवशेष केवलीनकी भक्तीनकरि ग्यान निर्वाण कल्याणकविखैं पूजन करेहै. तथा गणधर आचार्य उपाध्याय परमसाधु आदि समस्त मुनिराजनकी पुण्यकी उपजावनहारी पूजा करे है. इत्यादिक अनेक शुभ आचरण करि पुण्यका उपार्जन करते वे देव

Scanned by CamScanner

पुण्यके प्रभावतैं हजारा देवागनाकरि सहित नाना प्रकारके भोगनिकूं भोगवे है. अर देवलोकविखैं रातदिनका विभाग नहीं है. अर दुखदाई ऋतु नाहीं है. सुखदाई सास्वता सुखमासुखमा काल प्रवर्ते है. देवलोकविखैं दीन, दरिद्री, निर्धन, रोगी, दुर्भागी, दुखी, अर जाका वचन काहूकूंभी नाहीं सुहावे ऐसा दुःखरी उन्मत्त कहिये मदोन्मत्त अर विकलांग इत्यादि औरभी अशुभ सामग्री स्वप्नाविखैंभी कदाकाल नाहीं दीखे है. तो वह देव कैसे है? देवलोकविखैं सर्वही देव दिव्य लक्ष्मी मनोहर कांति अनुपम दिव्य धैर्यकरि सोभायमान समस्त दुःखनिकरि रहित सुखरूप अमृतके समुद्रके मध्य प्राप्त भये है. अर ते पद्मनाभादि समस्त देव कैसे है? समस्त दुःखनिकरि रहित है. अर नेत्र नाहीं टिमकारे है. महाप्रवीण सास्वत जिनेंद्रदेवके पूजाविखैं तत्पर है. सात धातु, सात उपधातु, मलमूत्र, पसेव, खेदकरि रहित दिव्य देहके धारी है. अर तीन हस्तप्रमाण ऊंचा है सुंदर शरीर जिनका अर बाईस सागरकी है आयु जिनकी अर बाईस हजार वर्ष व्यतीत भए मानसीक आहारका सेवन करेहै. ग्यारह मास गए एक श्वास लेवेहै. अर अनेक गुणनिके भाजन अवधिग्यानके योगकरि षष्टम नरककी पृथ्वीपर्यंत शुभाशुभरूपी द्रव्यनिकूं जाने है. अर वे शुभपरिणामनिके धारक देव षष्टम नरकपर्यंत विक्रिया रिद्धीके बलतैं गमनागमनादि करवेकूं समर्थ है. देवांगनाके दिव्यरूप सौंदर्यता मनोहर शृंगारसहित नानाप्रकार नृत्य देखते अर अपसरानके मुखतैं मनोहर गान सुनते अर रत्नमई यह महल, भद्रशालादि वन मेरु कुलाचल आदि पर्वत अर असंख्यात द्वीप समुद्रनिविषैं देवीनकरिसहित क्रीडा करते

Scanned by CamScanner

इच्छापूर्वक हर्षसहित गमन करते पूर्वोपार्जित पुण्यकर्मके फलतैं पूर्वोक्त नानाप्रकार भोगनिकूं भोगते सुखसागरके मध्य प्राप्त भए गए कालकूं नाहीं जानतेसंते तिस अच्युत स्वर्गविखैं बाईस सागरपर्यंत वे पद्मनाभादि देव सुखसूं तिष्ठते भए. या भांति ते पद्मनाभादि देव पुण्यके उदयतैं परम सुखकी करणहारी देवलोकके विभूतिकूं पायकरि तिस अच्युत स्वर्गविखैं सागरांपर्यंत उपमारहित भोग सुखनिकूं भोगवे है. ऐसे जानिकरि भो ग्यानीजन हो, सुखके प्राप्तीके अर्थि सकल सक्तिकरि एक भगवानभाषित जैनधर्मका सेवन करो, ऐसा उपदेश है. धर्म है सो समस्त मनोरथादिकका उपजावनहारा है. अर धर्मात्मा पुरुष धर्मनैंही, आश्रय किया है. अर इस धर्मकरिही इहां सत्पुरुषनिके तीर्थकरादि कल्याणरूप पदवी होहै. इस धर्मके अर्थी निरंतर मेरा नमस्कार हो, अर जैनधर्मतैं शिवाय और कोऊ तीन जगतविखैं सुखकारी वस्तु नाहीं है. अर इस धर्मका बीज सम्यग्दर्शन हैं. अर धर्मविखैं निरंतर परिणामनिकूं धारण करता ऐसा जो मैं सकलकीर्ति मुनि ताके हे धर्मन्! चारि घातिकर्मनिका घात करि. ऐसी सप्त विभक्तीनकरि संबोधन सहित धर्मकी महिमा वर्णन करि धर्मतैं अर्हंतपदकी प्रार्थना करी. ऐसा इहां भावार्थ है.

इत्याचार्यसकलकीर्तिविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखैं नागश्री नागसर्मआदिका दीक्षाग्रहण अर स्वर्गगमनका है वर्णन जामैं ऐसा षष्टम सर्ग समाप्त भया.

Scanned by CamScanner

चौपाई.

सकलतीर्थ सिद्ध महेस, गणनायक पाठक परमेस ॥
सब साधूनके प्रणमूं पाय, जैनधर्मनिहचै उरलाय॥ १॥

अथानंतर सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यकचारित्रकी परम विशुद्धताकूं प्राप्त भए अर निरतिचार चारित्रकरि परम शोभायमान ऐसे वह दोऊ सूर्यमित्र अग्निभूत महामुनि मोक्षमार्गकूं प्रवर्तावते अनेक देशनिविखैं यथेच्छ विहार करते एक दिन वाणारसी नगरीके बाहिर वनविखैं आये. तहां वे दोऊ मुनि आत्मध्यानविखैं अत्यंत निश्चल चित्तकूं स्थापन करी चार घातियाके घातनेनिमित्त अद्भुत योग धारते भये. मुक्तिरूप महलकी सिडीसमान क्षपक श्रेणीपैं आरूढ होय प्रथम शुक्लध्यानरूप खड्गकरि आदिविखैं मोहरूप वैरीका घात किया. तापीछैं वह मुनि जयभूमिकूं पायकरि शेष घातिया जे ग्यानावरण दर्शनावरण अंतरायरूप वैरीनका द्वितीय शुक्लध्यानरूप शस्त्रकरि घात करते भये. कैसेहै वह मुनि मोहनीके विजयकरि पायाहै महान उदय जिनने ताही. समय समस्त घातियानके घाततैं तिन दोऊ मुनीनके लोकालोक प्रकाशी निजस्वभाव क्षायिकनवलब्धि आदि अनुपम सारभूत समस्त क्षायिक गुणनकरिसहित केवल ग्यान प्रगट भया. तब इंद्रादिक देव आयकरि गंधकुटीकी रचना रचाय बडी विभूततैं त्रैलोक्याधिपती तिन केवली भगवानको धर्मकेअर्थि महोत्सवसहित पूजन करते भए. तापीछे केवली भगवान, गणेंद्र, सुरेंद्र, नागेंद्रनिकरि सेवनीक दिव्यध्वानिकरि सत्पुरुषनिकूं मुक्तिका मार्ग प्रकाश धर्मके प्रभावनाकेअर्थि अनेक नगर, ग्राम, देश, वनपर्वतादिक

Scanned by CamScanner

निविखैं विहार करि निर्वाणसुखके प्राप्तीकेअर्थि अग्निमंदिर नामा पर्वतपरि आये. तहां चतुर्थ शुक्लध्यानके योगकरि अवशेष चार अघातिया कर्मनिकूं नास करि वे मुनिराज संसारके गमनागमनकी क्रियारहित निर्वाण साम्राज्यकूं प्राप्त भए. तहां अनंत अविनाशी अनुपम बाधारहित हानिवृद्धिरहित सारभूत अतींद्रिय अक्षय सिद्धसुखकूं प्राप्त भए. सम्यक्त्वादि अष्ट गुणनिकरि भूषित ग्यानमूर्ति वे सूर्यमित्र अग्निभूत केवली भगवान मुक्ति लक्ष्मीसहित आत्मिकसुखकूं करते भये, भोगते भये, तिससमय सौधर्मादि इंद्र अर वे पद्मनाभादि देव आयकरि निर्वाणकेअर्थि तिन सूर्यमित्र अग्निभूत मुनिराजके निर्वाण कल्याणककी परमपूजा करते अपने अपने स्थानक गए.

अथानंतर इस जंबूद्वीपमे भरतक्षेत्रविखैं विनयवान, धर्मात्मा ग्यानी जीवनिकरि भर्‍या अवंती नामा देश सोभे है. जा देशविखैं केवली भगवान अर चतुर्विधसंघसहित अवधिमन पर्ययज्ञानी गणनायक आचार्य बहुरि चरमशरीरी एकाविहारी मुनिराज मोक्षमार्गकी प्रवर्त्तीके अर्थि सासते विहार करे है. जा देशविखैं ग्राम, खेट, पुर, द्रोण, पत्तन, आदि बडेबडे नगर जिनमंदिरनिकरि अर धर्मात्मा महंत पुरुषनिकरि सोहे है. जा देशविखैं वनमे पर्वतनिमे नदीनके तटनपैं तथा पर्वतनकी कंदरानिविखैं सर्वत्र महा धीरवीर ध्यानी मुनिराज ध्यानसहित दीखे है. जहा केईक वीतरागी जीव वनमे जायकरि श्री गुरुके उपदेशतैं तप ग्रहण करे है. अर केई धर्मात्मा धर्मके अर्थि सम्यग्दर्शनसहित श्रावकके व्रत अंगीकार करे है. जा देशविखैं केईक मुनि तपकरि निर्वाण जाय है. अर केई एक अहमिंद्र पदकूं पावेहै. बहुरि केईएक सौधर्मादि कल्पनि-

Scanned by CamScanner

विखै उपजे है. केईएक सम्यग्दृष्टी जीव देवपूजा, गुरुसेवा, शास्त्राभ्यास, संयम, तप, दान आदि श्रावक धर्मके प्रभाव करि स्वर्गविखैं इंद्र होय है. अर केईएक सुपात्र दानतैं भोगभूमिकूं प्राप्त होय है. जा अवंती देशविखैं स्वर्गवासी देवभी मोक्षके सिद्धीके अर्थि अपना जन्म चाहे है तिस देशविखैं और वर्णन कहां करिये ? कैसा है देश ? स्वर्ग मोक्षका कारण है. इत्यादि पूर्वोक्त प्रकार वर्णनसहित तिस देशका मध्य भूतलविखैं सुखसंपदाकी खानि परम रमणीक उज्जयनी नामा पुरी है. सो पुरी बहुत ऊंचे दरवाजे, कोट, खाई, पडकोटादिकनिकरि अति दुर्गम अनेक सूरवीर सुभटनिकरि भरी अयोध्यापुरीसमान सोहे है. जा नगरीविखैं नानावर्णमई अति उत्तंग जिनेंद्र भगवानके मंदिरनकी पंक्ति सोहे है ते मानू उत्तंग धर्मकी खानिही है. कैसे है जिनमंदिर ? सुवर्ण रत्नमई नानाप्रकार शिखरनिविखैं धुजानिकरि अर आवते जावते भव्य जीवनके समूहकरि बहुरि गीत, नृत्य, वादित्रनिकरि अर स्तवन, पूजन, स्वाध्यायादिकनिकरि मानूं मूर्तिवान धर्मही है. तिस उज्जयनी पुरीविखैं पुण्यवंत पुरुष प्रातःकाल सेजतैं ऊठिकरि आदिविखैं तो सामाइक अर पंचनमस्कारका जापआदि धर्मकार्य करैं. अर तावर पीछैं गृहकार्य करैं. जातैं धर्म, अर्थ, काम, अर मोक्ष ए चार सत्पुरुषनिके पुरुषार्थ है. जिनकी आदिविखैं सर्व अर्थ सिद्धिका दायक भगवान भाखित धर्मही है. बहुरि जिनमंदिरनिविखैं अथवा अपने घरविखैं चैत्यालयनविखैं तीर्थकरनके प्रतिबिंबनका पूजनकरि अर मध्यान्हसमय ग्यानी जीव पात्रदानके अर्थि वारंवार घरकी द्वारा प्रेक्षण करे है. बहुरि अपराह्नसमयविखैं दिनमे उपार्जन किए जे पाप जिनके हानिके

अर्थि अर पुण्यके प्राप्तीके अर्थि अपनी सक्तिप्रमाण हमेसा कायोत्सर्गादि शुभ क्रिया करेहै. अर पुत्रनिके जन्म तथा विवाहादिक शुभ मंगलीक कार्यनिविखैं बडी विभूतकरि दीक्षा अर मंगलीक कार्यकी वृद्धीके अर्थि जिनेंद्र भगवानकाही पूजन करेहै. देवी, दिहाडी, क्षेत्रपाळ, गजानन, देहलीपूजन, राती जागा, सीतलाआदि कुदेवनिकूं स्वप्नाविखैंभी नाहीं पूजे है. इत्यादि पूर्वोक्त शुभकर्मके समुदायकरि अर व्रत आचार शील दान पूजनादिकरि तिस उज्जयिनी पुरीकी प्रजा रातदिन धर्मका उपार्जन करे है. तिस धर्मका उपार्जन करि तिन पुण्यवान जीवनिके उत्तंग महलनिविखैं अनेक संपदा अर सारभूत सुख पैंड पैंडपैं प्रगट होय है.

इत्यादि पूर्वोक्त वर्णनकरिसहित तिस उज्जयिनी पुरीका पति श्रीमान धर्मात्मा वृषभांकनामा राजा भया. सो वृषभांक राजा सारभूत जिनधर्मके आचरण करि अर सारभूत क्रांति कीर्ति शुभ लक्षणनिकरि, बहुरि देव गुरु धर्मके सेवन करि मानूं साक्षात् मूर्तिमान धर्मका चिन्हही है. अर तिसही उज्जयिनीपुरीविखैं महान धनवान, अर शुभ लक्षणनिकरि परिपूर्ण, धर्मकार्यविखैं अगवाणी, अर शीलव्रत उपवासादिक निकरि बहुरि सुपात्रनिके अर्थि दान देने करि अर जिनेंद्र भगवानकी पूजनादिककरि विभूति संपदा करि मानू मूर्त्तिवान पुण्यही है ऐसा परमश्रावक सुरेंद्रदत्तनाम शेठ, ताके मनोहर दिव्यरूपकी खानि, कल्याणकी मूर्ति, पतिमैं परम अनुरागिणी पांचू इंद्रियनके आनंदके कारण ऐसी यशोभद्रानामा सेठाणी भई. तिनके घरविखैं पुण्यके उदयतैं बडी विभूत संपदा भई. अर स्वजन परजन सारभूत सुख, बहुरि अनेक

Scanned by CamScanner

कोटि सुवर्ण रत्नादिक भये. वा यशोभद्रा सेठाणी हृदयविषैं ऐसे विचार करि निरंतर विषाद करैं. जो मेरे घरमैं पूर्वोपार्जित पुण्यका फलतैं सकल संपदा है अर स्वजन परिजनभी बहुत है. परंतु कुलका दीपक पुत्र नाहीं एक पुत्रविना निरफल वेलिसमान पुष्पने धारण करती ऐसी पुत्रवंती कुलवंती नायकानकेमध्य शोभाकूं नाहीं पाऊ हूं. धन्य है वह नायका जे पुत्रके मुखरूप चंद्रमाका अवलोकन करि सदा प्रसन्न रहेहै. ऐसे वा सेठाणी विषाद करैं. एकदिन तीन ग्यान आदि अनेक गुण रत्ननिके सागर, जगतके हितकारी, मुनी, श्रावक देवनिकरि वंदित, कल्याणरूप संघकरिसहित, ऐसे वर्द्धमाननामा मुनिराज धर्मात्मा जीवनिके पुण्यकरि प्रेरे भव्य जीवनिके संबोधवेकूं उज्जयिनीके वनमे आये. तिनके आगमनकूं जानिकरि राजा वृषभांक आनंद घोषणा दिवाय चतुरंग सेना करि वेष्टित मुनिराजके वंदिवेकूं निकस्या. राजाकी भेरीका सद्धनैं सुणकरि यशोभद्रा सेठाणी अपनी सखीकूं ऐसे पूछी जो यह भेरीका शब्द आजि कौन कारनतैं भया? तब सखी कही, आजि वनके मध्य महामुनि पधारेहै अर तिनकी वंदनाकूं अनेक वादित्रनिके नादकरि महोत्सवसहित राजा वृषभांक जाय है. ये वचन सुनकर वा सेठाणी यशोभद्रा धर्मके सिद्धीके अर्थि अर मनोवांछित फलकी प्राप्तीके अर्थि पूजनकी सामग्री लेय मुनिके समीप गई. तहां संघसहित विराजमान वर्द्धमान मुनिराजकूं नमस्कार करि, पूजन करि यशोभद्रा सेठाणी मुनिराजके समीप बैठी. कैसे हैं मुनिराज? इंद्र नरेंद्र नागेंद्रादिकनिकरि वंदनीक पूजनीक है. मुनिराजके मुखकी वानी स्वर्ग मुक्तिका कारण, इंद्र, नरेंद्र नागेंद्रादिकनिकी संपदाकी दायिक,

Scanned by CamScanner

बहुरि समस्त कल्याणनिका कारण जिनेंद्र भगवान करि भाषित, दयामई, मुनिश्रावकके भेदतैं दोय प्रकार धर्म श्रवण करि सेठाणी यशोभद्रा हात जोर सिर नवाय नमस्कार करि मुनिराजकूं ऐसे पूछती भई. हे भगवन, इहां मेरे पुत्र होगा कि नाहीं सो आप कृपा करि कहो. तब मुनिराज याभांति कहते भये. हे भद्रे, महाधीर, वीर, दिव्य, रूपवान, गुणनिका सागर, महान पुण्यके फलका भोक्ता, समस्त जगतके मान्य, सकल कार्यके करणेविखैं महान सामर्थ्यवान ऐसा पुत्र तेरे होगा. परंतु तेरा पति सुरेंद्रदत्त संसारके सुखनिविखैं अत्यंत उदास है अर तपोवनप्रति जानेकी वांछा करे है. सोउ पुत्रके अभावतैं नाहीं जाय है. सो धर्मात्मा सुबुद्धी जौ लौं अपने पुत्रका मुख नाहीं देखेगा तौ लौं धन संपदाके मोहतैं घरमैं तिष्ठैगा; पीछें पुत्रका मुख देखि करि उत्तम गुणनिका आकर सेठ सुरेंद्रदत्त सकल संपदाका अर थारा त्याग करि निर्दोष तप ग्रहण करैगा. अर तेरा पुत्रभी अति धर्मात्मा धर्मका सेवनहारा जौं लौं दिगंबर मुनिके वचनादिक प्रगट नाहीं सुनैगा तौ लौं अपने घरमे रहेगा. अर मुनीके दर्शनमात्रकरि अथवा मुनिके प्रत्यक्ष वचनके सुनवेकरि सो तेरा पुत्र धीरवीरनिके गोचर दुर्द्धर तप अवश्य ग्रहण करेगा. याभांति वर्द्धमान मुनिराजके वचन सुनिकरि वा सेठानी यशोभद्रा आपके इष्ट अनिष्टादिके संयोगतैं मनविखैं हर्ष अर विषादसहित भई. भावार्थ–पुत्र होयगा यहतो हर्ष भया, अर पुत्रका मुख देखतेही सेठ दीक्षा ग्रहण करसी यह विषाद भया. तब कितनेक दिननिकरि पुण्यका उदयतैं सेठानीके गर्भाधान भया. जो सेठ मेरे गर्भाधान जाणेगा तो अवश्य तप ग्रहण करेगा. ऐसे जानिकरि से-

Scanned by CamScanner

ठके तप ग्रहणको भयकरि वा सेठाणी यशोभद्रा सेठ आदि समस्त स्वजनानके अति प्रच्छन्न वृत्तीकरि घरके कूणेविखैं तिष्ठती अपने गर्भकूं बढाया. भावार्थ—काहूकूंभी गर्भ नाही जनाया. अनुक्रमतैं नवमास पूर्ण भये पीछैं सेठाणी रमणीक भूमिग्रह विखैं प्रवेस करि देदीप्यमान कांतीका पुंज ऐसा पुत्र जनती भई. तव प्रसूतके वस्त्र अर तिस बालकके मलकरि भरे वस्त्रनिकूं धरतैं बाहिर सरोवरकी पार दाशी धोवैथी ताहि देखिकरि कोई एक बिरामण चित्तविखैं ऐसे विचारता भया. अहो इहां यह सुरेंद्रदत्त सेठही पुत्ररहित है सो आजि इस सेठके अवश्य पुत्र भया है. ऐसे वस्त्र प्रक्षालनरूप अनुमान ग्यानकरि पुत्रकी उत्पत्ति जानि सो बिरामण हर्षसहित सेठके समीप आयकरि आश्चर्यकारी वचन ऐसे कहताभया. कैसा है बिरामण ? वेणुकरि रुकि रह्या है दाहिणा कर जाका. भावार्थ—आशीर्वाद देणेका दक्षिण हात वीणाकरि रुक्याथा तातैं आशीर्वाद दियेबिनाही आनंदसैं कहताभया. भो श्रेष्ठिन् तेरे अखंड पुण्यके प्रभावकरि आजि अवश्य पुत्र जन्म्या है. यह वचन बिरामणके सुण सेठ हृदयविखैं परम आनंदकूं प्राप्त भया. बिरामणके वचनतैं सुरेंद्रदत्तशेठ अत्यंत आश्चर्यकूं प्राप्त होयकरि, अर हर्षसहित अपने पुत्रका मुख अवलोकन करि, बहुरि बिरामणकूं बहुत संपदा देय, अर गृहपुत्रदारादिकनिकरिसहित सकल संपदाके त्यागकरि अर संसार देहभोगादिविखैं सर्वत्र वैराग्यकूं पायकरि तपके अर्थि वनविखैं गया. तहां श्री गुरुके चरणारविंदकूं नमस्कार करि सो सुरेंद्रदत्तशेठ समस्त परिग्रहका त्याग करि मनवचनकायकी विशुद्धता करि हर्षसहित मुक्तीके अर्थि दीक्षा ग्रहण करताभया. तापीछैं सु-

Scanned by CamScanner

बुद्धी सुरेंद्रदत्तमुनि अपनी सक्तीकूं प्रगटकरि स्वर्गादि मुक्ति-पर्यंत सुखका दायक संयमसहित दुर्द्धर घोर तप करवेका आरंभ करताभया.

अथानंतर यशोभद्रा शेठाणी जिनालयविखैं जिनेंद्रदेवनिका पूजनादि महोत्सवकरि अर वस्त्राभरणके दानकरि समस्त सुजनानकूं संतोषितकरि बहुरि नानाप्रकार गीत वादित्र नर्तनादिकनिकरि सकल कुटुंबसहित पुत्रके जन्मका बडा उत्सव करतीभई. तापीछैं अन्यदिनविखैं बालककी माता यशोभद्रा अपने स्वजननिकरि सहित अत्यंत कोमल शरीरका अवयवपणातै बालकका सुकुमाल ऐसा नाम प्रगट किया. अपने पुत्रका सुकुमाल ऐसा नाम प्रसिद्धकरि पुण्यके प्राप्तीकेअर्थि जिनेंद्र भगवानके मंदिरविखैं अर अपने घरके चैत्यालयविखैं बडी विभूतिकरि पूजनादि महोत्सव करावतीभई. बालचंद्र समान अत्यंत सुंदर सो बालक समस्त परिजनके नैननिके परमानंदकारी स्फुरायमान कांति अर मनोहर आलापनकरि अर शुभ अंगोपांग अवयवनिकरि मधुर गुणनिकरि बहुरि अपनी अवस्थाके योग्य मधुर पयपानादिनिकरि अनुक्रमतैं सारभूत वस्त्राभरणनिकरि जगतके अत्यंत प्यारा ऐसा सुकुमाल, दोयजका चंद्रमासमान क्रमतैं बढताभया. तापीछैं वह सुकुमाल अत्यंत मनोहर अंग अर स्वभावतैंही सुंदर आकृतिका धारक, मंद मुलकनिकरि अर बालपनेकी शुभचेष्टानकरि माता आदि समस्त परिजननिकूं अत्यंत हर्ष उपजावता, बालपनाकूं उल्लंघि बहुरि कुमारपनाकूं पायकरि, दिव्य आभूषण शुभ लक्षणनिकरि तथा समीचीन कांति दीप्त तेज आदि गुणनिकरि सो सुकुमाल कुमार देवकुमारसमान अत्यंत सोहेहै. तासमय जैसे

Scanned by CamScanner

मेरा पुत्र सुकुमाल इहां दिगंबर मुनिकूं कदेभी नहीं देखैं तैसा उपाय शीघ्रही करूं ऐसे विचारकरि सुकुमालकी माता यशोभद्रा नानारत्नादिकनिकरि जडित एक सुवर्णमई सर्वतोभद्रनामा उत्तंग महल बनाया. अर तिस सर्वतोभद्र महलके चहूं ओर बडी संपदाकरि संयुक्त सुवर्णमई रूपामई बत्तीस महल और बनाये. फिर मोहकरि आंधी भई ऐसी यशोभद्रा सेठाणी सुकुमालकी माता द्वारपालजनादिकनिकरि अपने घरविखैं दिगंबर मुनिराजनिका आगमन मनैं कराया. भावार्थ—द्वारपालनिसैं ऐसे कही जो दिगंबर मुनिराजनकूं मेरे महलनिविखैं मति आवने द्यो, यह मेरी आग्या है. अहो मोहकरि अंध भया है चेत कहिये ग्यान जिनके ऐसे मोही जीवनिके इहां विचार कहां है? भावार्थ—मोही जीवनिके मोहके उदयतैं विचार नाहीं. अर कार्य अकार्य विचार कियेबिन धर्म कैसे प्रगट होय! जाके परमार्थस्वरूप कार्य अकार्यका विचार नाहीं ताकें धर्मका लेसहू नाहीं है. अब तिन सौधनिविखैं यथेच्छ क्रीडा करता ऐसा सुकुमाल कुमार दिनरातसंबंधी कालभेद अर मनुष्यादिकनिके जातिभेद, बहुरिशीत आतापकूं कदेभी नाहीं जानता, समस्त दुःखनिकरि रहित, महान रूपवान जैसे विमानविखैं धरणेंद्र, इंद्र, वृद्धीकूं प्राप्त होय तैसे अनुक्रमतैं महलननिविखैंही वृद्धीकूं प्राप्त भया. तव यौवन अवस्थाकूं पायकरि मनोहर सुगंधायमान पुष्पनिकी माला सुंदर वस्त्राभरणनिकरि अर कांत तेज मधुर वचन अर शंखचक्रादि शुभलक्षण तथा तिल मुस आदि शुभ लक्षणनिकरि महानभोग उपभोगकी सामग्रीनकरि शुभ आकृति, शुभही है गुणनिके समुदायनिकरि तथा परम लावण्यता सौंदर्यताआदि गुणनिकरि निरंतर

Scanned by CamScanner

देवसमान शोभाकूं धारण करेहै. तव यशोभद्रा सेठाणी बडे-बडे श्रेष्ठीनतैं चतुरिका, चित्रा, रेवती, पद्मिनी, मणिमाला, सुशीला, रोहिणी, सुलोचना, सुदामा, आदि बत्तीस कन्यानकी जाचनाकरि कन्याकूं अपने घर ल्यायकरि अर महलविखैं रमणीक विवाहमंडपकी रचना कराय शुभ लग्नविखैं बडी विभूतिकरिसहित तिन कन्यानतैं अपना पुत्र सुकुमालका विधिपूर्वक महलके ऊपरि भली भांतितै विवाह करती भई. अर महलके बाहर आये ऐसे अपने बंधुजन तिनकरि सहित गीतवादित्रनिकरि विवाहका बडा उत्सव किया. अर ताहीसमय यशोभद्रा शेठाणी सुकुमालकी बत्तीस वनितानिकूं भोग सुखके प्राप्तीके अर्थि जे सर्वतोभद्र महलके चहूवोर बत्तीस महल पहले बणायाथा. ते एकएककूं एक एक महल दिये. तिस सर्वतोभद्र महलविखैं पुण्यरूप लावण्यताकी खानि ऐसी जोडे बत्तीस स्त्रियांकरि सहित महान्पुण्यके उदयतैं निरंतर इंद्रसमान भोग भोगता ऐसा सुकुमाल कुमार चिंतारहित निश्चित सुखसागरके मध्य तिष्ठता गये कालकूं नाहीं जाने है. एक दिन कोई एक व्योपारी देशांतरतैं आय राजा वृषभांककूं एक अमोलिक रत्नकंबल दिखाया. सो राजा वृषभांक तिस रत्नकंवलकूं देखि बहुत मोलका जानि बहुत द्रव्य देनेकी सक्तीके अभावतै ताही समय व्योपारीकूं देदिया.

भावार्थः—रत्नकंवलके मोल जोग्य राजाके घरमे द्रव्य नाहीं. तव वो व्यौपारी नृपतैं रत्नकंबलकूं लेय शीघ्रही जायकरि यशोभद्रा सेठाणीकूं दिखाया, अर द्रव्य लेनेंके अर्थि मोल कह्या. सेठाणी रत्नकंबलकूं अपनां पुत्रकै जौग्य जानि तिस व्यौपारीकूं यथायोग्य बहुत द्रव्य देय शीघ्रही महलविखैं अपनां पुत्रकै

Scanned by CamScanner

पास भेज्या. सुकुमालकुमार रत्नकंबलकूं भाज्या अर कठिन देखि कही यह तो मेरे जोग्य नाहीं. ऐसे कहिकर करतैं डार दिया. तव यशोभद्रा रत्नकंबलके खंडन करी सुकुमालकी बत्तीस वनितानिके सुंदर पगरख्यां कराय दीई. एक दीन सुकुमालकी स्त्री सुदामा, पावनितैं पगरखी खोलि अपने महलके शिखरपैं बैठि कितनेक काल दिशा अवलोकन करती पश्चिम द्वारके मंडपविखैं तिष्ठेथी. ताही समय गृध्रपक्षी महलमैं प्रवेश करी मांसके भाससैं एक पगरखीकूं चूंचतै उठाय फेर आकाशतैं उडकरि वृषभांक राजाका महलका शिखरपैं बैठा. खानेके अर्थि अति कोपतैं अपनी चूंच करि पगरखीके घात करतां संता खानेकूं असमर्थ होयकरि राजमंदिरविखैं गेरताभया. तव राजा वृषभांक रत्नकंबलकी पगरखी देखि अचिरजवान हुवा संता कहीके, यह रमणीक पगरखी कौनकी है? ऐसैं काहू निकटवर्ती पुरुषनैं पूछी. राजाके वचन सुनकरि निकटवर्ती पुरुष कही, हे राजन्, यह रमणीक पगरखी सुकुमालके कांता की है. कैसा है सुकुमाल? महान् लक्ष्मीवान्, महान् सुख संपदाकरि इंद्रसमान शोभायमान है. ऐसे निकटवर्ती पुरुषनिके वचन श्रवणमात्रतैं कौतुक करि पायाहै कौतुक जानैं ऐसा नृप वृषभांक सुरेंद्रदत्तसेठका पुत्र महालक्ष्मीवान् ऐसा सुकुमालके देखनेकूं शीघ्रही चाल्या. तव यशोभद्रा सेठाणी सुकुमालकी माता, नृपकूं आवता जानिकरि नृपके सन्मुख जाय बडी विभूतिकरि अपनां घरके मध्य नृपकौ प्रवेश करावती भई. तहां नृपकूं रत्नजडित सुवर्णका सिंहासनपैं बैठाय बहुत भेट नृपके आगैं धरि सुकुमालकी माता यशोभद्रा सेठाणी नृपकूं ऐसैं पूछती भई, भो देव, आ-

Scanned by CamScanner

पके आगमनकरि आजि तुमनैं मेरा घर पवित्र किया. परंतु अबार तुमारे आगमनविखैं कारण कहा है सो कृपा करि कहौ. तब वृषभांक नृप ऐसें कही, हे भद्रे, मैं केवल तेरे पुत्रके देखनेंके अर्थि आया हूं, और कछूभी कारण नाहीं. तव वा यशोभद्रा सेठाणी महलकै मध्यखणविखैं नृपकूं बैठाय हर्षसहित अपनां पुत्रकूं ल्याय दिखावती भई. राजा वृषभांक सुकुमालको विस्मयकारी रूपकूं अतिशयकरि देखिकर प्रसन्न होय अत्यंत सन्मानकरि सुकुमालकूं आधा सिंहासनपैं बैठाय लिया. तब यशोभद्रा महीपतितैं ऐसी प्रार्थना करतीभई, भो देव, आजि महारे घर भोजन करि आपनैं जाय वो जोग्य है. अन्यथा कहिए भोजन कियेविन तुमनैं जाय वो जोग्य नाहीं है. ऐसी सेठाणीकी प्रार्थना करी राजा वृषभांक सुकुमालसहित तहां सुवर्णके थालमैं परम मनोहर भोजन किया. भोजन किये पीछैं नृप सेठाणीकूं ऐसैं कहताभया, भो कल्याणरूपिणी, इस सुकुमालकै निंद्यनीक तीन व्याधि कहा है? तिनके मेटनेके उपायविखैं तूं कैसैं मंद है? तब सेठाणी कही इसकै व्याधि कहा है? तब बहुरि नृप कहता भया, एक तो आसनकी दृढता नाहीं चलायमानपना हैं; दूजैं प्रकाशविखैं नेत्रतैं जल स्रवै है; तीजैं भोजनविखैं एक एक चांवल खाय है. ए वचन सुनकरी सेठाणी सुकुमालकी माता यशोभद्रा कही, हे राजन्, जो आपनैं तीन व्याधि कही ते तौ व्याधि इस सुकुमालकै कदेभी नाही है. यह सुकुमाल अत्यंत कोमल दिव्य शय्याविखैं शयन करैहै. अर अत्यंत कोमल गद्दिका तथा गालीचा निपरी सदाकाल सुखसूं बैठे है. अर आजि आपकी साथी सिंहासनपैं बैठ्या. बहुरि हमनें मंगलकै अर्थि इस सु-

Scanned by CamScanner

कुमालके मस्तकपैं बहुत सिरस्यूं क्षेपी, ते सिरस्यूंके कण इहां आबार इसके सुखासनविखैं परे; सो तिस सिरसूंका कर्कसपनां करी यह सुकुमाल चलासन भया. बहुरि इस पुण्यात्मानैं दे- दीप्यमान मणिमई मंदिरनिके मध्य एक रत्ननिकी प्रभाकूं छांडि और प्रभा कदेभी नाही देखी है. अर आजि हमनैं आ- पकी दीपकनिकरि आरती उतारी सो आरतीके प्रतापरूप प्रभाके देखवेकरि इस अत्यंत सुखियाकैं दुःखकी उत्पत्तिका कारण नेत्रनितैं शीघ्रही जल स्रवता भया. बहुरि दिनके अस्त- विखैं सरोवरविखैं आर्द्रतकमलकी कर्णिकामैं धोये हुये भीजे मनोग्य तंदुल धरिदेवै है फिर प्रभातसमय तिन तंदुलनिका मनोहर अति कोमल सुगंधायमान भात, यह कुमार केवल भो- जन करै है. सो उन तंदुलनिके अल्प भातकरि भोजनविषैं दो- उनके तृप्तपनां नाहीं जानिकरि आजि हमनै तिन तंदुलनिके मध्य सुंदर और तंदुल क्षेपे है. सो सुंदर मिले हुए तंदुलनि- कूंभी भोजन इस कुमारनै आजि अरुचिसैं कीना हैं. तिस सुकु- मालकी वार्ताके श्रवणमात्रतैं राजा वृषभांक हृदयविखैं अ- त्यंत अचरजवान भया. बहुरि सेठानीनैं भेट किये जे रत्न आ- भरण मनोग्य वस्त्र तिनकरि सुकुमालकी पूजा करि, बहुरि स- मीचीन सराहिवे जोग्य वचननितैं प्रशंसाकरि, अर यह अवंती सुकुमाल है ऐसा और दूजा नाम सत्पुरुषनिके मध्य प्रसिद्ध करि, राजा वृषभांक अत्यंत आनंदसहित अपने राजमंदिर गया. अथानंतर तीन जगतविखैं विख्यात है कीर्ति जाकी ऐसा अवंती सुकुमार पुण्यके उदयतैं परम मनोहर भोग भोग- वता तिस सर्वतोभद्र महलहीविखैं सुखसूं तिष्ठता भया. या भांति पुण्यके उदयतैं इहां अनुपम परम संपदाकूं पायकरि

Scanned by CamScanner

सुरेंद्रदत्तसेठका पुत्र यह अवंती सुकुमार दुःखरहित अनुपम सारभूत महान् सुखनिकूं अर मनोहर दिव्य भोगोपभोगनिकूं भोगवै है. कैसा है अवंती सुकुमार? बडे बडे राजादिकनिकरि पूजनीक प्रशंसा जोग्यहै. ऐसैं जानिकरि विभव सुखके अर्थि निपुण ज्ञानी जन हो, तुम इहां अपनी सक्तिप्रमाण मनवचनकायकी शुद्धता करि बडे जतनतैं निरंतर सर्वज्ञभाषित परम धर्मका सेवन करो. जिनधर्मके सेवनकरि ज्ञानी पुरुष तीन जगतविखैं सारभूत सुखनिकूं पायकरि तीर्थंकरादिकनिके परम कल्याणकूं पावे है. बहुरि क्रमतैं अनुपम अविनाशी सुखनिकी खानि ऐसा जो निर्वाणपद तांहि पावे है ॥

इत्याचार्यश्रीसकलकीर्तिविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखैं सुकुमालकी उत्पत्ति अर सुखानुभवका है वर्णन जामैं ऐसा सप्तम सर्ग समाप्त भया.

चौपाई ॥ तीन जगतपति पूज्य अनूप श्रीमत्
तीन जगतगुरु भूप ॥ तीन भुवनपति सेवत
पाय प्रणमू परमइष्ट शिरनाय ॥

अथानंतर एक दिन इस सुकुमालका मामा धर्मात्मा जगतका हितकारी अवधि ज्ञानी यशोभद्रनामा महामुनि अपनां अवधिग्यानकरि पुण्यवान् सुकुमालकी अत्यंत अल्प आयु जानि पूरवभवतैं आया जो संबंध ताके स्नेहकरि ऐसैं चिंतवन करते भये, अहौ इस सुकुमालकी अति दुर्लभ संपूर्ण आयु तौ धर्मके सेवनकरि रहित ऐसैही गई. अर तपधर्मका कारण किंचित् अति अल्प आयु अवशेष रह्या है. बहुरि अब तिसके घरविखैं सकल संयमीका गमनहू नाही पाइये है,

Scanned by CamScanner

तातैं और कोई सांचे उपाय करि तिस सुकुमालके अर्थि संयम धूंगा. याभांति विचार करि यशोभद्रनामा मुनि तिस सुकुमालके संबोधनके निमित्त चतुर्माससंबंधी भला योगका ग्रहणके शुभदिनविखैं सुकुमालके निकट उपवनके मध्य शोभायमान उत्तुंग त्रिजगद्वंद्य ऐसा चैत्यालयविखैं आये. ताही समय वनपाल जायकरि सुकुमालकी माताप्रति ऐसैं कही, हे मात, उपवनके चैत्यालयविखैं योगीराज आये हैं. यह वचन मालीके सुनकरि तिस जिनालयविखैं शीघ्रही जाय तहां पुण्यरूप अरहंत देवकेप्रति ब्यंबनिका अर अपनां भाई यशोभद्र मुनिराजका पूजन करि, प्रणाम करि वा यशोभद्रा सेठाणी ऐसैं कहती भई, हे नाथ, इहां मेरे प्राणसमान एकही पुत्र है. सो तुमारे वचन श्रवण मात्रकरिही तुरत संयम ग्रहण करैगा. तब मरणका कारण आर्तध्यान मेरे अवश्य होयगा. ऐसें जानि भो दयानिधान, मोपैं दया करि इहां तैं और स्थानप्रति शीघ्रही जावो. तव मुनिराज ऐसैं कही, हे भद्रे, आजि योगका दिन वर्ते हैं, तातैं हमनैं कहींभी स्थानक गमन करवो जोग्य नाहीं. कैसे हैं हम? जीवनिकी दयाही है अर्थ कहिए प्रयोजन जिनकै. तातैं चतुर्मासके योगकरि इहांही तिष्ठूंहूं यामैं और तरह नाहीं. ऐसैं कहि करि शीघ्रही अंतरंग बहिरंग उपाधिसहित देहका ममत्वका त्याग करि सर्वत्रही समतारूप है भावजिनके ऐसे यशोभद्र मुनिराज सूके ठूंठ समान अडिग होय ध्यानका अवलंबन करि कायोत्सर्ग करि सहित खडे तिष्ठे. तिस जिनमंदिरविखैंही धर्मध्यानकरि आत्मतत्वके विचारतैं कायोत्सर्गसहित चार महीने व्यतीत करि, सो धीरबुद्धी यशोभद्र मुनि, कार्तिक सुदि १५ के दिन रात्रीके चौथे

Scanned by CamScanner

पहर चातुर्मासकी क्रिया करि योगका त्याग किया. ता समय अवधिज्ञानरूप नेत्र करि सुकुमालकूं निद्रारहित जानि ताके संबोधनके अर्थि वह यशोभद्रमुनिराज अमृतसमान मधुर वाणी करि समस्त त्रैलोक्य प्रज्ञप्तिका वर्णन करवेका प्रारंभ किया. तापीछैं प्रथमही वैराग्यकेनिमित्त अधोलोकका वर्णन करि तापीछैं मध्यलोकका कथनकरि अनंतर स्वर्गनका वर्णनकरि बहुरि अच्युत स्वर्गविखैं पद्मगुल्म विमानमैं पद्मनाभ देवकी बडी विभूत संपदाका मधुर वाणीकरि वर्णन करिवेकूं वह यशोभद्र मुनिराज उद्यमी भये. तब तिस पद्मनाभ देवकी विभूत संपदाके श्रवणमात्र करि सो अवंती सुकुमाल जातिस्मरणकूं प्राप्त भया. सो तिस जातिस्मरणतैं अपनें समस्त पूरव भव जानिकरि अर संसार शरीरभोग सुखनिविखैं परम वैराग्यकूं पायकरि अत्यंत विरक्त भया. सुकुमाल या भांति चिंतवन करताभया, अहौ जो मेरा जीव अनुपम परम रमणीक स्वर्गसंबंधी भोग सुखसागरपर्यंत चिरकाल भोगे तिनकरि हूँ तृप्तिकूं नाहीं प्राप्त भया, तौ, सो मेरो जीव दुःखकरि मिले निंदनीक पराधीन अर शरीरकै पीडाके उपजावनहारे ऐसें मनुष्य पर्यायके भोग सुख तिनकरि कहा तृप्तिनैं प्राप्त होय है?

भावार्थः—तृप्तीकूं नाहीं प्राप्त होयहै. कदाकाल दैवयोगतैं इंधनकरि अग्नि तृप्तकूं प्राप्त होय, अथवा नदीनके प्रवाहकरि समुद्र तृप्ति होय, बहुरि धनके संग्रहकरि लोभशांति होय, तौ होहू; परंतु यह आत्मा अनंत जन्मकरि भोगे जे त्रिलोकसंबंधी नानाप्रकारके मनोहर विषयसुख तिनकरि काहूकालविखैंभी तृप्ति नाहीं भया. यातैं जे अत्यंत कामी पुरुष सुखनिकरि तृप्तिकूं वांछै है ते अज्ञानी अपथ्य सेवनकरि रोगकी शांति चाहे हैं,

Scanned by CamScanner

अथवा तैलकरि अग्निकूं शांत करी चाहै है. जा शरीरकरि काम-संबंधी पीडाकी शांतिकेअर्थि इहां विषयसुख भोगिए हैं सोई शरीर मल, मूत्र, मांस, रुधिर मज्जादिककरि भऱ्या साररहित क्षणभंगुर है. हायहाय मैं मूढ अज्ञानी तपश्चरणविना अतिशयपणांकरि इस देहकूं इतनें कालपर्यंत निरंतर विषय-सुखनिकरि वृथाही पोख्या. यह शरीर यद्यपि वसन-भूषणादिकनिकरि बाहर सुंदराकार दीखै हैं, तथापि अभ्यं-तरविखैं मलमूत्रादि धातु उपधातूनकरि भऱ्या अत्यंत घृणावणा है. अर आजि में सम्यग्ज्ञानकूं प्राप्तभया हूं सो जगत निंद्य इस कलेवरकूं तपरूप अग्नितैं शोषणकरि शिवरमणीका साधन करूं, अर यह क्षणभंगुर रामा समस्त पापनिकी खानि मनुष्यके भक्षणविखैं काली नागणीसमान हैं. अथवा पुरुष-निके बंधनकूं पायनिविखैं सांकल वा बेडीसमान है. कैशी है रामा? अत्यंत अपवित्र महा निंद्यनीक नरक धराके प्रवेश करिवेकूं गैलीसमान है. अर ज्ञानी पुरुषनिकरि निंद्यनीक बंदीखानासमान ग्रहादि धर्मका विनाशक अनंत दुःख अर अनेक पापनिकी खानि है. अर यह अत्यंत विनाशीक आपदासमान संपदा मोहकी उपजावनहारी समस्त अन-र्थकी कारण पापकी मूल है. अर महानिंद्य विषय यह कुटंब कंठविखैं सांकलसमान पुरुषनिकूं पापादिक कार्यके प्रेरक, धर्मका विध्वंस करवावाला है. अर यह जोबन जराकरि ग्रसित है. बहुरि यह अपनी आयु यमराजका मुखविखैं तिष्ठै है. अर सुख है सो दुःखके भारकरि व्याप्त है. बहुरि समस्त संसार क्षणभंगुर है. अर पांचूं इंद्रियरूप तस्कर मनुष्यनिके धर्मरूप रत्नके चोरटे हैं. बहुरि समस्त विगारके

Scanned by CamScanner

कारण आत्माकै असाध्य शत्रु है. हाय हाय संपदारूप फांशीकर वेष्टित अर स्त्रीरूप सांकलकरि सर्वांग बंध्या घररूप बंदीखानामैं तिष्ठता ऐसा जो मैं सो इंहा इतने दिन वृथाही खोए. आजि मैं योगीराजकी परमार्थरूप वचन श्रवणतैं शीघ्रही प्रबुद्ध भया. सो मोहरूप फांशिकूं शीघ्रही छेदन करि जतीको संयम ग्रहण करूं. जौलौ देहमैं जरा नाहीं व्यापै, अर आयु क्षीण नाही होवै, बहुरि सकल इंद्रियनकी मंदता नाही होय, तौलौं मनुष्यनकै तपका करणाही हितकारी है. जौलौं बुद्धीकी प्रवीणताहै, अर यौवनविखैं शरीरकी दृढता है, तौलौं तपश्चरणकरि स्वर्गमोक्षका साधनका उद्यम करणां. अर जे मोही जीव ऐसा विचार करैहै जो आजि वा प्रभात स्वर्गमुक्तिका साधन आत्महित करूंगा ऐसे विचार करतै तौ बहुत दिन वीतजाय. केवल विचारहीतै कार्य सिद्ध नांही होय. विनाकार्य कियेंही कालरूप वैरीकरि कंठविखै बंधनकूं प्राप्त भए ते मोही जीव पापकर्मके वशतैं क्षणमात्रकरि दुर्गतिरूप समुद्रविखैं पडै हैं. इत्यादिक चिंतवनतैं तिस सुकुमालके हृदयविखैं कामभोगादिकतैं अर घरदारादि वस्तुतैं दुगुणां वैराग्य भया. अहो इस उत्तुंग महलतैं कोईभी उपाय निकसनेंकूं दीखै नाहीं. कैसा है महल? दृढ है द्वारनिविखैं कपाट जाके. ऐसैं चिंतवन करता वैराग्यविखैं तत्पर भला तपश्चरणके अर्थि उद्यमी ऐसा बुद्धिवान् सुकुमाल महलतैं निकसनेंका उपाय देखता संता एक वस्त्रनिका वींटा देख्या. तातैं वस्त्रनिकूं खैंचि परस्पर एकएक वस्त्रकूं रज्जूसमान दृढ बांधि, बहुरि महलका थंभका दृढ बंधनकरि, फिर तिस वस्त्र लंबाय भूमिपर्यंत लंबा क्षेपणकरि तांहि पकड पुण्यका उदयतैं पृथ्वीविखैं उतरि यशोभद्र मुनि-

Scanned by CamScanner

राजकै समीप गया. तीन प्रदक्षिणां देय हाथ जोर नमस्कार करि आनंदसहित सुकुमाल मुनिराजकूं ऐसै कहताभया, हे भगवान्, इस लोकविखैं विखयाशक्तिपनेंकरि जे दिन गए ते संयमके आचरणविना वृथाही गए. अब आपकी कृपाकरि आपके वचनरूप अमृतके पानतैं मोहरूप दुर्विखका वमन करी आजि मै अत्यंत सचेत भया हूं. यातैं अबही दयाकरि मोक्षकी प्राप्तिके अर्थि मोहि भगवती दीक्षा देहूं. कैशी है दीक्षा? समस्त सुखनिकी खानि है अर मुक्तिकी उपजावनहारी है. तब यशोभद्र मुनिराज बोले, हे भद्र, तोनैं बहुत भला विचार किया. जातैं तेरी आयु तीन दिनप्रमाण अवशेष रही है. तब सुबुद्धी सुकुमाल बाह्य अभ्यंतर समस्त परिग्रहका अर चार प्रकार आहारका मनवचनकायकी शुद्धतातैं त्याग करि, यशोभद्र गुरुके वचनतैं शीघ्रही जिनमुद्रा ग्रहण करी, प्रायोगगमन संन्याससहित ध्यानकी सिद्धके अर्थि धर्मध्यानका अवलंबन करि, वनकै मध्य गमन करता भया. तहां भयानक निर्जन प्रदेशविखैं जाय देहतैं ममत्वका त्याग करि पृथ्वीविखैं एक पार्श्वतैं शरीरकूं निश्चल स्थापन करि धर्मध्यानतैं समाधिमरणके अर्थि महाप्रवीण सुकुमाल मुनिराज प्रायोगगमननामा संन्यासकूं अंगीकार करताभया.

भावार्थः–संन्यासकै अर्थि तीन भेद है. भक्तिप्रत्याख्यान, इंगिरी, प्रायोगगमन. तहां चतुर्विधि आहारका त्याग तौ तीनूंही विखैं प्रसिद्ध है. अर भक्तिप्रत्याख्यान संन्यासविखैं स्वपरकृत देहका उपचार है. इंगिनीविखैं स्वकृतही उपचार हैं, परकृत नाहीं है. बहुरि प्रायोगगमनविखैं स्वपरकृत दोऊही उपचार नाहीं है. सो सुकुमालमुनिनैं प्रायोगगमन संन्यास अं-

Scanned by CamScanner

गीकार किया. अर यशोभद्र मुनिराजभी तिस जिनमंदिरतैं निकसि करि संक्लेशकी हाणिकै अर्थि कोऊ और जिनमंदिर-विखैं जाय तिष्ठे. कैसे है यशोभद्र मुनि ? अत्यंत विशुद्ध है बुद्धि जाकी. अब यह सो कथन इहांही रह्या. यातैं परै और कथन सुनहू. वे सुकुमालकी बत्तीस स्त्रिया सुकुमालकूं नाहीं देखिकरि शोक करि आकुल भई संती शीघ्रही यशोभद्राके निकट आय बत्तीस सुंदरा गद्गदवाणी करि ऐसै कहती भई. हे मात, हम बत्तीस वनितानिको प्राणवल्लभ तेरा पुत्र आजि नांही दीखै है. सो नहि जाणिये है वह धर्मात्मा कहां गया ? या भांति तिन सुकुमालकी वनितानके वचन सुनकरि बडे शोकका भारकरि शीघ्रही यशोभद्रा मूर्च्छाकूं प्राप्त भई. सो मानूं निश्चल जिनवानीही है. अर ताही समय सकल सुजन परजन हाहाकार शब्द करते भए. बहुरी शोककरि पीडित सुकुमालकी समस्त वनिता बडा रुदन करती भई. तावर पीछैं अपनें अपनें बंधु जननिकरि शीतोपचारादिकनितैं सनैं सनैं कहिए मंद मंद धीरै चेतनाकूं पायकरि यशोभद्रा सुकुमालके हेरवेकूं उद्यमी भई. परिवारसहित शोककरि पीडित वह यशोभद्रा इत उत अपनां पुत्रकूं देखती संती जिस वस्त्रमाला करि सुकुमाल महलतैं उतऱ्याथा तिस वस्त्रमालाकूं देखती भई. तव सुकुमालकी माता यशोभद्रा तिस वस्त्रमालाकरि चित्त-विखैं अपना पुत्रका गमन जानि शीघ्रही श्रीजिनेंद्रके मंदिर गई. तहां तिस यशोभद्र मुनिराजकूंभी नांही देखिकरि ताही समय प्रगट यह निश्चय किया जो इस वस्त्रमालाका उपायकरि अर इहां चतुर्मासका योग धारणके उपायकरि निश्चय थकी मेरा पुत्रकूं यशोभद्र मुनिही ले गया. तापीछैं परम शोक-

Scanned by CamScanner

करि व्याकुल ऐसी वा यशोभद्रा समस्त बंधुजनानिकरि सहित बडे आग्रहतैं भूतलविखैं अतिशयपनेकरि सुकुमालकूं हेरने लगी. अर वृषभांकनृप आदि समस्त राजेलोक बहुरि समस्त पुरवासी लोक सुकुमालके हेरवेकूं प्रवर्ततेथके अपनें घरतैं वनविखैं गये. ए राजादिक वा यशोभद्रादिक बडे जतनतैं वनविखैं निरंतर सुकुमालकूं हेरते थके हू जिस गूढप्रदेशविखैं सुकुमाल मुनि प्रायोगगमन संन्यास धारि तिष्ठैथा. तिस उज्जयनीपुरीविखैं सुकुमालका शोकादिकरि समस्त पुरवाशी लोकनिनैं भोजन नांही किया; अर पसूननैं घांस नाहीं भख्या; बहुरि पक्षीननैं चुगा नाहीं आचऱ्या. तासमय सुकुमालकी माताकै अर बंधु जननिकै बहुरि सुकुमालकी बत्तीसूं वनितानिकै जो दुःसह आतापकारी तीव्र शोक भया ताहि वर्णन करवेकूं कौन समर्थ है?

भावार्थः—कोऊभी समर्थ नाहीं यह तो कथन इहांही रह्या. अब आगैं वो सुकुमाल मुनिभी निश्चल निर्मल परिणामनिसहित महाप्रवीण निज अर परकृत उपचारकी वांछारहित अशुभ कर्मके क्षयकूं उद्यमी सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र सम्यक् तप इन चार आराधनाविखैं तल्लीन शुद्ध भावनाविखैं लगाया है चित्त जानैं. स्नेहरहित निद्रारहित धर्मबुद्धी धर्मध्यानका जबलों चिंतवन करै था तौलौं वह पूर्व भवकी भोजाई अग्निभूत विरामणकी स्त्री सोमदत्ता जाके मुखपैं सुकुमालके जीवनैं वायुभूतके भवमैं लातकी दईथी, तानैं असमर्थपनें करि याका पाद भखनेंका निदान किया था. सो सोमदत्ता संसाररूप वनविखैं त्रसस्थावरकी अनेक योनिमैं चिरकाल भ्रमण करि भयरूप है आत्मा जाका, पराधीन सर्व ऋतुके दुःखकरि पीडित, पापकर्मके उदय करि तिसही वनविखैं स्यालनी भई. सो व-

Scanned by CamScanner

नविखैं आगमनके अवसर सुकुमालके कोमल पावनितैं भूतल-विखैं रुधिरकी धारा पडती गईथी तांहि आस्वादन करती चाटती थकी आयकरि निश्चल ध्यानारूढ सुकुमाल मुनिकूं देखत भई. तव पूर्व वैरसंबंधी कोप करि निदान वैरके देखतैं महां क्रोधायमान होयकरि वा स्यालनी स्वयमेव सुकुमालका दाहिनां पराकूं खानें लगी. अर वास्यालनीकी पिछी क्षुधातुर तिस स्यालनीकी साथिही सुकुमाल मुनिका वामा पावके खानेंकूं मुख करि ताही समय प्रारंभ किया. सक्तिरहित तिन दोउनकरि अति स्तोक स्तोक भक्षण करनेतैं तिस सुकुमाल मुनिके अत्यंत कोमल अंगविखैं बडी वेदना भई. तासमय तिस वेदनांके जीतवेके अर्थि अर परम वैराग्यकी वृद्धिके अर्थि, वो धीरवीर सुकुमाल मुनि अपनें हृदयविखैं इन बारा भावनांके चिंतवनका प्रारंभ किया. तिनके नाम सुनहू. प्रथम अनित्य भावना; दूजी आसरणभावना-तीजी संसारभावना; चौथी एकत्वभावना; पंचमी अन्यत्व-भावना; छठी असुचिभावना; सातमी आश्रवभावना; आठवी संवरभावना; नवमी निर्जराभावना; तापीछैं दशमी लोकभावना; ग्यारमी बोधदुर्लभभावना; अर बारवी धर्मभावना. ए बारह भावना संवेगकी उपजावनहारी उपसर्गका विजयके अर्थि चिंतवन करवो जोग्य है. तहां प्रथम अनित्यभावना भावता भया. यह देहकालरूप वैरीतैं क्षणमात्रमैं विध्वंस हो जायगा. अर यह यौवन विजुरीसमान क्षणभंगुर है. बहुरि समस्त भोग संपदा पटलसमान क्षणस्थायी है. जैसैं इस संसारविखैं भ्रमण करतैं पूर्वैं मेरे अनंतानंत शरीर विलाय गए, तैसैं इहां यहभी शरीर कर्मरूप वैरीनकी हानिके अर्थि जाहू. इस देहके जानेमै मेरा कछुभी बिगार नाहीं. मेरुसमान प्रचुर पापक-

Scanned by CamScanner

र्मके वसि भया मैं नरकविखैं उपज्या. तहां नारकीननैं अनंता-
नंत तिल तिल प्रमाण मेरे देहके खंड खंड किए. अर तिर्यंच
गतनिविखैं भ्रमतैं मेरे अनंत शरीरनिकूं निर्दई सिंहव्याघ्रादि
क्रूर जीवनिनैं अनंत वार भक्षण किए. अब यह मेरा शरीर
इहां कर्मनिके नासके अर्थि जाय है. तौ इस उपसर्गके विजय
होतैं संतै मेरे परम लाभ है. जातैं संसाररूप वैरीतैं भयभीत
ऐसे ज्ञानी जीवनिनैं दुष्कर तप करिए है. तहांभी ज्ञानी
जीव उपसर्गका विजयकूं परम तप कहैहै. अर तीन लोकविखैं
जीवनिके शुभ कर्मतैं निपजे जे राज्यभोग शरीर दारादिक
बहुरि संपदासुख धनादिक वस्तु कछू येक सुंदर दीखैं है, ते
सर्व वस्तु गिणतीके दिननमैं कालरूप अग्निकरि खाककी रासि
हो जायगी. या भांति समस्त जगतकूं विनाशीक जानिकरि भो
ज्ञानी पुरुष हो, सुखकी प्राप्तिके अर्थि उग्रोग्र तपके समुदाय-
निकरि अविनाशी परम पदका साधन करो. इति अनित्यता १
जैसैं मृगारी करि पकऱ्या वनविखैं मृगकूं कोऊ सरन नाहीं
तैसैंही मनुष्यनिके जन्ममरणके दुःखनितैं रक्षक कोऊभी
नाहीं है. जब इस जीवकूं यमराज आयकरि पकरै है तब इं-
द्रादिक देव अर समस्त विद्याधर चक्रवर्त्यादिक मनुष्य क्षण-
मात्रभी राखवेकूं समर्थ नाहीं है. संसाररूप वनविखैं भ्रमण
करते अशरणपणें कर मैनैं छेदनभेदनादिक अत्यंत तीव्र को-
टिक दुःख भोगे है अब इहां यह पशू स्यालनी मेरे पावनिकूं
भक्षण करै है सो अशुभ कर्मकी हानिके अर्थि, अर मोक्षकी
प्राप्तिके अर्थि, बहुरि संसारका विनाशके अर्थि, यह बहुत भला
काज भया है. और तरह नाहीं. जहां कोउभी रक्षक नाहीं
ऐसा इस तीन लोकविखैं हुं संसारी जीवनिकै रक्षक पंचपरम

Scanned by CamScanner

गुरुही है. अर केवल प्रणीत धर्म रक्षक है. जातैं इस लोकविखैं यह पंच परमेष्ठी मुक्तिके दायक सत्पुरुषनिकै उपकार करवेकूं समर्थ है. इनसिवाय और नीच देव ब्रह्मा, विष्णु, महेशादिक तथा देवी, दिहाडी, क्षेत्रपाल भैरवादिक मंत्रतंत्रादि कोऊभी उपकार करवेकूं समर्थ नाहीं. यातैं इस दुर्द्धर उपसर्गविखैं अशुभ कर्मका विजयके सिद्धकी अर्थि अर मुक्तिके अर्थि मेरे अरहंतादि पंच परमेष्ठी तथा जिनधर्महीं शरणाधार होहु. और कुदेवादिक शरणादिक प्रतिपालक नाहीं होहू, या भांति तीन लोककूं शरणरहित जानि करि भो चतुर विचारज्ञ पुरुष हो, तपसंयमकरि शाश्वता निर्वाणकै शरणै जाहू. इति अशरणता. २ यह आदिअंतरहित पापरूप दुःखनिका समुद्र महाभयानक पंडितनिकरि निंद्यवेजोग्य ऐसा पंच प्रकार संसार सत्पुरुषनिकै स्थिरताके अर्थि कैसैं होय? इस अनादि संसारविखैं भ्रमण करतैं नरक तिर्यंच दुर्गतिविखैं समस्त जीवनिकरि चिरकालपर्यंत मैनैं अनंती वेदना पाई. इस स्यालनीके भक्षणादिकतैं उत्पन्न भया. ऐसा यह दुःख मेरे कितनाक है?

भावार्थः—कछूभी नाहीं. यह दुःख तौ अशुभ कर्मके नाशतैं मेरे निःसंदेह मुक्तिका सुखकै अर्थि है. या भांति वारंवार संसारका विचित्रपनांका चिंतवन करता ऐसा वह सुकुमालमुनि मेरुगिरसमान अत्यंत निश्चलांग कहिए निष्कंप भया. भो सुखके अर्थि ज्ञानी पुरुष हौ, अनंत दुःखनिकरि परिपूर्ण संसारका स्वरूपकूं जानि, देहतैं नेहका त्यागकरि, दर्शन, ज्ञान, चारित्रादिकके आचरणमैं अनंत सुखनिकी खानि ऐसा मोक्षका साधन करो. इति संसार ३. जन्म, जरा, मरणा-

Scanned by CamScanner

दिकके दुःखनिकरि रहित अर एकाकी निर्मल अमूर्त्तिक चिरं- जीव ऐसा मैं आत्माराम निश्चय करि अनंत गुणनिका भाजन हूं. ए दोउ स्यालनी अर स्यालनीकी पीली इस दुर्गंध कलेवरकूं भलैंही खावो. मेरा अमूर्तिक निजस्वरूपकूं नांही खाय हैं. या भांति विचारि वह सुकुमालमुनि रंचमात्रभी कलुष परिणाम नाहीं करै है. भो ज्ञानी पंडित जन हो, जन्म जरा मरण रोग शोक दुःखादिकनिविखैं अपनां एकाकीपना देखिकरि मुक्ति- के अर्थि एक चिदानंद आत्माहीका चिंतवन करो. इति एकत्व भावना ४. यह घणावणां क्षणभंगुर शरीर मौतैं जुदा है अर निश्चयतैं मनवचन तथा सकल इंद्रियांभी मौतैं जुदी है. जातैं यह दोऊ पशू कायकूं भखै है अर कायरहित मेरा आत्माकूं नाहीं भखै है. तातैं मेरे दुःख कहातैं होय ? ऐसैं वह मुनि हृ- दयविखैं चिंतवन करै है. या भांति शरीरादिकतैं अपनां अ- न्यपणा जाणि करि भो अन्यत्व बेदी भव्य जीव, इस अशुचि अंगतैं जुदा कर मुक्ति अर्थि एक अपना निजस्वरूपका ध्यान करो. इति अन्यत्वभावना ५. क्षुधा तृषारूप अग्निका घर अर कामक्रोधरोगरूप नागनिकरि व्याकुल सप्तधातु उपधातु मलादिकनिकरि परिपूर्ण ऐसा यह काय ज्ञानी पुरुषनिकरि कहा सराहिये है ?

भावार्थः—जैसैं जिस घरमैं मूत्रादिक भरे अर जामैं सांप, गोहरे, न्यौल क्रीडा करैं; बहुरि जाके चहूं वोर अग्नि प्रज्वलित भई; तिस घरकी पंडित जन सराहनां नाहीं करैं. तैसैं इस अशुचि कलेवरकी ज्ञानी जन सराहनां नाहीं करैहै. अहो यह स्यालनी बंदीग्रहसमान मेरा अशुभ अंगकूं भखै है, अर इस अंगतैं मोहि मुक्ता कहिए रहित करै है, सो

Scanned by CamScanner

यहही मेरे शिवदायक परम लाभ है. इत्यादिक भेद विज्ञानके चिंतवन करि, अति धीरवीर वह सुकुमालमुनि स्यालनीकरि पावनिकूं खातसंतैंभी मनवचनकायकी शुद्धता करि रंचमात्र भी क्लेशकूं नाहीं प्राप्त होय है. भो भव्य जीव हो, सर्व प्रकार इस कायकूं अशुचिमय जानिकरि संयमविखैं वा महाघोर उग्रोग्र तपविखैं लगाय परम पवित्र मोक्षका साधन करो. इति अशुचिभावना. ६ यह संसारी जीव पांच मिथ्यात्व, बारह अव्रत, पचीश कषाय, पंदरह योग इन सत्तावन प्रत्ययनकरि संचयरूप भए ऐसे जे अशुभ कर्मके आश्रव तिन करि छिद्र सहित नावकी नांइ संसारसमुद्रविखैं डूबे है. जिस भव्य जीवनैं तप, ध्यान अर क्षमादिकनिकरि कर्माश्रवका निरोध किया, तिस भव्यजीवकै मनौवांछित संजम, संवर, निर्जरा अर मोक्ष सिद्ध भया. अर उपसर्गके दुःखकरि जो मेरा मन आजि मलीन होय तो मलीन मनकरि पापहीका आश्रव होय. अर फिर तिस पापाश्रवतैं अनंत संसार होय. बहुरि तिस संसारविखै बडेबडे पंडितनिकरिभी नाहीं कहे जाय ऐसा अत्यंत तीव्र घोर दुःख है. ऐसैं जानिकरि वह सुकुमाल मुनि मोक्षका अर्थी उत्कट कष्टकूं सहै है. या भांति आश्रवके महान दोष जानि भोग्यानी पंडित जनहो, मन बचन कायतैं कर्मरूप वैरीनका विरोध करि आश्रवका अबरोध करो, इति आश्रव भावना. ७ अर सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप करि बहुरि मन वचन कायके योग निरोध करि, अर धर्म शुक्ल ध्यान करि, जो महंत पुरुषनिके कर्माश्रवका निरोध होय सो संवर है. कैसे है संवर? अनंत गुणरत्ननिका समुद्र है. अर संवर करि सहित कियेहूये अल्पभी तप व्रतादिक भव्य जीवनिकै सर्वकाल विखैं

Scanned by CamScanner

महान फलकूं फलै है. अर संवरविना घोर तप व्रतादिक क-
छूभी फलदाई नाहीं. उलटे अशुभ कर्मके बंधके कारण होय
है. बहुरि ऐसा दुस्सह घोर उपसर्ग होतसंतैं धीरवीर पुरुष-
निनैं एकाग्र चित्तकरि शुभ ध्याननितैं जो संवर करण है सो
संवर सकल अर्थकी सिद्धिका दायक संसारके कारण ऐसै
घोर पापरूप वैरीनका घात करे है. ऐसैं विचार करि संवरका
अर्थि ऐसा यह सुकुमालमुनि आत्मध्यानतैं रंचमात्रभी
नाहीं चलायमान होहै. या भांति संवरतैं प्रगट भए ऐसे
सारभूत गुणनिकूं जानिकरि भो भव्य हो, उत्तम अनुपम गु-
णनिकी प्राप्तिकेअर्थि मन बचन कायके निग्रहतैं सदाकाल
संवर करो. इति संवर भावना. ८ अर सविपाक अविपाक भेद
करि सवर्ग्य देवनै निर्जरा दोय प्रकार कही है. तहां सविपाक
निर्जरा तो सर्व संसारी जीवनिके होय है. अर अविपाक नि-
र्जरा ध्यानी मुनिराजनके ही होय है. वीतरागी आत्मध्यानी
मुनिराजननैं उग्रोग्र तपश्चरणनिकरि संवरसहित जो निर्जरा
इहां करिये है सो अविपाक निर्जरा है. कैसी है अविपाक नि-
र्जरा? दया कहिये आत्माकी रक्षा, अर मुक्ति कहिये समस्त
कर्मनिका अभाव आदि गुणरत्ननिकी खानि है. अर कर्मनिके
स्वयमेव उदयकरि प्रगट भई, बहुरि कर्मबंधनकी करनहारी
ऐसी सविपाक निर्जरा सत्पुरुषनिकै सदाकाल होय है. अथवा
संवरकरिसहित मुक्तिके अर्थि सविपाक निर्जराभी करिये है.

भावार्थः–संवरसहित दोऊही निर्जरा मुक्तिकी कारण
है. अहो, या सविपाक निर्जरा अपने कर्मके उदयतैं स्वयमेव
मेरे भाग्यतैं उदय भई. कैसी है सविपाक निर्जरा? पूर्वे संचय
किया जे अशुभ कर्मरूप वैरी तिनकी नाश करनहारी है. वो

Scanned by CamScanner

निर्जराकाअर्थि सुकुमाल मुनि या भांति विचार समस्त मनवांछितका दायक ऐसा परिसहकरि मेरुसमान निश्चळ भया. भो भव्य जीवहो, सारभूत मुक्ति आदि समस्त गुणनिकी उपजावन हारी ऐसी निर्जराकूं जानिकरि मोक्षसुखके अर्थि सुकुमालमुनि या भांति विचार, मनवांछितका दायक ऐसा परिसहकरि उग्रोग्र तपश्चरण करि निरंतर अविपाक निर्जराका उपाय करो. इति निर्जरा भावना ९

अधोलोक, मध्यलोक, उर्द्धलोक भेदकरि तीन प्रकार यह लोक जिनेंद्रदेवनैं अकृत्रिम अर सास्वता कह्या है. कैसा है लोक? दुख अर सुख बहुरि उभय कहिये सुख दुखनिनकरि आश्रित है. तहां अधोलोकविखैं सात नरकधरानिमैं तो सर्वथा महान घोर दुःखही है सुखका लेसहू नाहीं. अर मध्यलोकविखै काहू जायगा सुख है, काहू जायगा दुख है, काहू जायगा सुखदुःख दोऊ मिश्रित है. बहुरि इस लोकका उर्द्धभागविखैं स्वर्गादिकनमैं सुख है. अर तीन लोकका शिखरपैं नित्य अविनासी अनंतगुण अर अनंत सुखनिका सागर ऐसा शिवालय है. बहुरि परमार्थ जो शुद्ध निश्चयनय ताकरि ग्यानी जीवनिके चित्तविखैं मोक्ष विना यह समस्त लोक दुःखनिका भाजनही भासे है. अर इस लोकविखैं अधोगतीमैं तथा पशूनकी बासठलाख जोनिविखैं कर्मनके वसि मैंने छेदन भेदनादि संबंधि महान घोर दुःख भुगते. सो यह दुःख कितनाक है? कछूभी नाहीं. इस दुःखकूं कोनसा धीरवीर दुःख मानै? कोऊभी ग्यानि दुःख नाहीं मानैं. ऐसे विचार करि वह सुकुमालमुनि आकुलतारहित ध्यानविखैं एकाग्रचित्त भया. याभांति परमागमकूं इस लोककूं दुःखमय जानिकरि भो भव्यजीवहो, यमनियमा-

Scanned by CamScanner

दिकनिकरि लोकका सिखरपैं शिवालयका साधन करो. इति लोक भावना १०

चार गति चौरासीलाख जौनरूप संसारविखैं भ्रमण करते ऐसे मिथ्यादृष्टी पापी जीवनिके निश्चयकरि यह मनुष्यजन्म-का लाभ निधिसमान अति दुर्लभ है. अर तिस मनुष्य जन्मका लाभतैंभी आर्यखंडका लाभ दुर्लभ है. बहुरि आर्यखंडका लाभतैंभी क्षत्री, ब्राह्मण, वैश्यसंबंधी उत्तम कुलविखैं जन्मका लाभ महान दुर्लभ है. अर उंचकुलविखैं जन्म पावनैंतैंभी दीर्घ आयुका पावना बहुत दुर्लभ है. अर दीर्घ आयुका लाभतैंभी निर्मल सम्यग्यानमई बुद्धीका पावना अत्यंत दुर्लभ है. अर निर्मल बुद्धीका लाभतैंभी पांचूं इंद्रियनकी परिपूर्ण सामग्रीका पावना महान कठिन है. बहुरि इन समस्त सामग्रीनका लाभ होतसंतेभी सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, सम्यक्तप अर वीतरागी निर्ग्रंथ गुरुनका सेवन आदि सामग्रीनका लाभ निधिसमान उत्तरोत्तर अति दुर्लभ है. इत्यादिक उत्तरोत्तर दुर्लभपनांतैं अत्यंत दुष्प्राप्य ऐसी जो सम्यग्दर्शनादिककी एकत्रतारूप बोधि ताहि पायकरि जे भव्यजीव बडे जतनतैं मोक्षका साधन करेहै तिनही भव्यजीवनिकैं इहां बोधिका लाभ सफळ होहै. अर मनुष्यजन्मका लाभ होतसंतेभी जे मूर्ख मिथ्यादृष्टी पापी जीव सम्यग्दर्शन ग्यान चारित्रादिकविखैं प्रमाद करेहै ते पापी जीव संसाररूप गहन अटवीविखैं अनंतानंतकालपर्यंत परिभ्रमण करेहै. कैसीहै बोधि ? परलोकविखैं मनोवांछित अर्थकी साधनहारीहै. अब इस घोर उपद्रवतैं जौमैं सम्यग्दर्शनादि गुणनितैं चिगजाऊं तो अगामी कालमैं मेरा दीर्घ संसारविखैं परिभ्रमण होय. ऐसे विचार वो सुकुमालमुनि मेरु-

Scanned by CamScanner

समान अचल होतभया. भो भव्यजीवहो, मनुष्य पर्याय सम्यग्-दर्शन आदि मोक्षमार्गकी सामग्री पायकरि तपयोगादिकनितैं निर्वाणका साधन करो, इति बोधिदुर्लभ भावना ११

जो अपार संसारके दुःख समुद्रतैं उद्धारकरि संसारी जीवनिकूं शिवालयविखैं अथवा सौधर्मादि सर्वार्थसिद्धिपर्यंत शुभस्थानकविखैं धारणकरैं सो सर्वज्ञभाषित महान धर्म है. ताके भेद दस है. उत्तम क्षमा १ उत्तम मार्दव २ उत्तम आर्जव ३ उत्तम सत्य ४ उत्तम शौच ५, उत्तम संयम ६ उत्तम तप ७ उत्तम त्याग ८ उत्तम आकिंचन्य ९ उत्तम ब्रह्मचर्य १० ए दश लक्षणधर्म भव्य जीवनिके परम धरमके कारण है. इस उत्तम क्षमादि दश लक्षण धर्मके सेवनकरि मुनिराजके महाव्रतादिकको पालनरूप परम धर्म मोक्षका दायक होहै. बहुरि इस दश लक्षण धर्मका सेवनविना और दुर्द्धर कायक्लेशादिककरि मोक्षका लाभ कदेभी नहीं होय है. बहुरि तीन लोकविखैं सुखसंपदा, निवास आदि जो कछु सुंदर सुहावणी वस्तु दीखेहै सो समस्त धर्मरूप कल्पवृक्षका फल है. अर इस परिसहनैं प्राप्त होतसंतै जो मेरा मन विकारपनाकु प्राप्त होयतो मेरे उत्तम क्षमाधर्म कहां रह्या ? ऐसे बिचारि सो सुकुमालमुनि तिस स्यालनीकृत उपसर्गकूं समभावतैं सहेहै. याभांति समस्त धर्मका फल जानिकरि भो धर्मात्मा भव्यजीवहो, उत्तम क्षमादि दशलक्षणनिकरि बडे जतनतैं एक केवल सर्वज्ञभाषित धर्महीका सेवन करो इति धर्मभावना १२.

अर जे भव्यजीव इन बारह अनुप्रेक्षानिका निरंतर चिंतवन करेहै तिन भव्यजीवनिके रागादिक वैरी क्षीण होयहै अर

Scanned by CamScanner

धर्मविखैं वहुरि धर्मका फलविखैं अत्यंत प्रीति बढे है. या भांति जानिकरि भो बुधजनहो, अशुभ कर्मके नाशके अर्थि इन बारह शुभ भावनाका चित्तविखैं निरंतर चिंतवन करो. कैशी हैं यह बारह भावना? अनंत गुणनिकी उपजावनहारी है. ऐसे इन बारह अनुप्रेक्षानिका चिंतवन करि तासमय इस सुकुमालके हृदयविखैं तुरतही परम वैराग्य प्रगट भया. तब तिस वैराग्यभावकरि निज आत्माकूं अपना देहतैं भिन्न करि वो धीरवीर सुकुमाल मुनिराज, शुद्ध आत्माका निर्विकल्प एकाग्र चित्तकरि अंतरंगविखैं निरंतर चिंतवन करता भया. अर स्यालनीकृत अत्यंत तीव्र वेदनाकूं जानता संताभी यह सुकुमालमुनि तिस आत्मध्यानके प्रभावकरि चित्तविखैं कदाचितहू रंचमात्र खेदकूं नाहीं प्राप्त होय है. तावरपीछैं वह धीरबुद्धी सुकुमालमुनि स्यालनीकृत प्रचंड वेदनाकूं जीतकरि तिन उपसर्गनिकरी वज्रसमान अभेद्य भया. कैसा है सुकुमालमुनि? मेरुसमान अचल है आकृति जाकी. अथवा महापापनी दुर्वल स्यालनी पिल्लीकरिसहित प्रथम दिनविखैं तो क्रमतैं तिस सुकुमालके गोडे तक पग खाये. अर दूजे दिन जांघतक भक्षण करी. तीजे दिन अर्द्धरात्रीके समयविखै बलात्कार सुकुमालका उदरकूं विदारण करि वा पापिनी स्यालनी अपने मुखकरि तिस उदरकैं मध्यतैं आंतनके समूहकूं खैचि करि सनैं सनैं खानेका प्रारंभ किया. तासमय उदरके विदारणतैं लगाय प्राणनिका अंतपर्यंत भले प्रकार चार आराधनाका आराधन करि वो सुकुमालमुनि धर्मध्यान विखैं तल्लीन बहुत सावधानपनातैं प्रायोगगमन सन्यासमरणकरि प्राणनिका त्याग किया. तावर पीछे आत्मध्यानके प्रभावतैं बहुत पाप-

Scanned by CamScanner

कर्मनिका घातकरि प्रचुर पुण्यके उदयतैं वह अवंती सुकुमाल महामुनिराज सर्वार्थसिद्धीकूं प्राप्त भए. कैसी है सर्वार्थसिद्धि? समस्त मनोवांछित कार्यनके सिद्धीकी दाता है. अर महारमणीक परमपवित्र है. अर शिवालयके अधोभागविखैं बारह योजन नीचे तिष्टे है. बहुरि मुक्तिरूपी कामिनीकी सारभूत निकटवासिनी सखी है.

भावार्थः—एक भवमेहीं मुक्ति कामिनीतैं मिलावनहारी परमप्रवीण सखी है.

या भांति यह सुकुमाल पूर्वपुण्यके प्रभावतैं परम अनुपम भोग संपदाकूं भोग करि, अर रागका अभावतैं विधिपूर्वक परमपुनीत भगवती दीक्षा अंगिकार करि, बहुरि स्यालनीकृत महान घोर परिसहनकूं सहिकर परम उत्कृष्ट सुखनिकी खानि ऐसी सर्वार्थसिद्धीकूं प्राप्त भए. ऐसे जानिकरि भो भव्यजीवहो, शिवालयके अर्थि धीरपना अंगिकार करो ऐसा उपदेश है. अर जे बाह्यअभ्यंतर समस्त परिग्रहकरिरहित मोक्षमार्गके सन्मुख सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र आदि अनेक गुणनिके भाजन समस्त परिसहरूप वैरीके जीतनहारे परम धीरवीर तीन लोकविखैं पूजनीक संसारसागरके पारकूं प्राप्त भये ऐसे जे सुकुमालादि समस्त महामुनि तिनकी तिनकेही गुणानुवादकरि मैं सकल कीर्तिनामा आचार्य स्तवन करूं हूं.

इत्याचार्य सकलकीर्तिविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखैं सुकुमालमुनीके स्यालनीकृत उपसर्गको विजय, अर बारा भावनाके चिंतवनकरि सर्वार्थसिद्धिविखैं गमनका है वर्णन जामैं ऐसा अष्टम सर्ग समाप्त भया.

Scanned by CamScanner

चौपई.

चारि घाति घातक अरिहंत ।
वसुविधिरहित सिद्ध सिवकंत ॥
रत्नत्रयधारक सब साध ।
मंगलकार नमूं तह बाध ॥ १ ॥

अथानंतर जासमय सर्वार्थसिद्धीकूं पधारे ताही समय इस सुकुमालमुनीके घोर उपसर्गनिका विजयका महात्म्यतैं इंद्रादिक देवनिके आसन कंपायमान भए. तब इंद्रादिक देव अवधिग्यानके बलकरि तिस सुकुमाल मुनिराजका परमउत्कृष्ट मरण जानिकरि आश्चर्यसहित हुए संते हर्षकरि भक्तिके अनुरागतैं ऐसे स्तुति करते भए. अहो, यह सुकुमाल महामुनि धीरपनाकरि शोभायमान, अनेक गुणरत्ननिका आकर, तीन लोकविखैं वंदनीक, पूजनीक, महान ग्यानी समस्त भव्य जीवनिके अग्रेश्वर, महा गुणवान ऐसा वह मुनि अत्यंत कोमलकायका धारक हुता, सो ऐसा अत्यंत दुर्द्धर घोर उपसर्गकूं समभावनितैं जीतता भया. या भांति तिस धीरवीर सुकुमाल मुनिकी परमस्तुति करि अर समस्त देवदेवीनकरि सहित अपने अपने वाहनपैं चढे. अर नानाजातिके वादित्रनिके नाद करि, बहुरि जयजिनेंद जयजिनेंद इत्यादि घोकणानिकरि दिशानकूं पूर्ण करते ऐसे इंद्रादिक महर्द्धिक देव हर्षसहित पुण्यकी प्राप्तीके अर्थि बडी विभूतिकरि सुकुमाल मुनिके पूजनके निमित्त महीतलविखैं आये. तदा वनविखैं सुकुमाल मुनीके शरीरकी इंद्रादिक देव बडी विभूतिकरि देवलोकसंबंधी पूजनके द्रव्यनकरि उत्सव सहित महान पूजा

Scanned by CamScanner

करी. तब तिन देवनिके जयजयकार आदि शब्दनिकूं अर वादित्रनिके परम रमणीक नादनिकूं सुणकरि सुकुमालकी माता कुटुंब आदि समस्त परिजन तिस सुकुमाल मुनीके तप व्रतका ग्रहण, अर आयुके अंत समभावनितैं सर्वार्थसिद्धि विमानविखैं भली शुभगति जानि करि आरतकूं छांडि आनंदसहित होय करि याभांति प्रसंसा करते भये. अहो, यह अत्यंत धर्मात्मा सुकुमाल इहां देवनिकेभी दुर्लभ ऐसी भोगसंपदाका सीघ्रही त्याग किया. अर भगवती दीक्षा अंगिकार करि ऐसा घोर तप किया जो काहूसैं बणि न आवे. बहुरि तीन दिनपर्यंत स्यालनीकृत ऐसा घोर उपसर्गकूं जीतकरि समभावनितैं प्राण छोर सर्वार्थसिद्धिकूं प्राप्त भया. ऐसे सुकुमालकी अत्यंत प्रसंसा करि अर प्रभातही समस्त सज्जन पुरजनकूं बुलाय बहुरि नृपादिकनिकरिसहित सुकुमालकी माता यसोभद्रा जहां सुकुमालका कलेवर था तिस वनस्थळमें गई. तहां सुकुमालका अर्धभक्षत देहकूं देखिकरि अंतःकरणविखैं सोक करि आकुल थई थकी वा यसोभद्रा दुःखकरि विव्हल तहां मूर्छा करि भूमीमैं परी. अर सुकुमालकी बत्तीस प्राणवल्लभा भरतारके देहके दर्शनमात्रतैं परम शोककूं पाय करि हाहाकार सहित रुदन करती भई. अर समस्त बांधवभी हाहाकारसहित रुदन करते भये. अर वृषभांक नृप आदि राजालोक बहुरि कितनेक पुरवाशी लोक सुकुमालका धीरपनाके देखवेतैं सुकुमालकी परम प्रशंसा करते संते हृदयविखैं बडा अचरजकूं प्राप्त भये. तावरपीछे सुकुमालकी माता यसोभद्रा सनैंसनैं चेतनाकूं पायकरि अर भेदविग्यानके बलतैं शीघ्रही शोकका नाश करि बहुरि भली वाणी करि स्वजनपरिजनकूं संबोधिकरि तिस सुकुमाल मुनिकी परम

Scanned by CamScanner

प्रशंसाकरती भई. अहो परिजनहो, पृथ्वीविखैं सुकुमालसारखे केई सत्पुरुष ऐसे है जो देवनिहूके दुर्लभ ऐसे परमभोग अनुपम सुखनितैं भोगते निमिषमात्रकरि महा घोर उपसर्गनिके जीतवेकूं समर्थ भये. ऐसे सुकुमालकी प्रशंसा करि संतुष्ट भई ऐसी यसोभद्रा सेठाणी सुकुमालके शरीरका पूजन करि, बहुरि अगर चंदनतैं संस्कार करि, जिस जिनालयविखैं यसोभद्र मुनिराज तिष्टेथे तिस मंदिरविखैं धर्मके सिद्धिके अर्थ समस्त बंधुजन आदि वृषभांक राजासहित मुनीके पास गई. तहां तिस आचार्यकूं देखि हृदयविखैं हसिके जिनबिंबका पूजन करि अर यसोभद्र मुनिराजकूं प्रणाम करि हर्षसहित कोमळ वाणीकरि ऐसे पूछती भई. भोभगवन् इहां सुकुमालके ऊपरि मेरा अत्यंत स्नेह कैसे भया? सो आप कृपा करि स्नेहका कारण कहो. याभांति यसोभद्राके प्रश्नतैं वायुभूतके भवतैं लगाय अच्युतस्वर्गविखैं गमनपर्यंत समस्त जीवनिका पूर्वभवसंबंधी कथाको पूर्वोक्त प्रकार वर्णन करि, बहुरि अवशेष पुण्यके उदयतैं तिनका इहां आगमन संबंधी समीचीन कथाकूं वह यसोभद्र मुनिराज अवधि ग्यानकरि याभांति कहते भये.

अथानंतर सुकुमाल पूरव भवविखैं जो नागश्रीका पिता नागसर्म बिरामण ताका जीव देव भयाथा, सोतो अच्युत स्वर्गतैं चयकरि इंद्रदत्त सेठ अर गुणवती सेठाणीका सुरेंद्रदत्तनामा पुत्र, महा धर्मात्मा, विषयभोगतैं अत्यंत विरक्त, महा धनवान, राजश्रेष्ठी तेरा भर्त्तार भया. अर चंपापुरीका चंद्रवाहनराजाका जीव देव भयाथा सो आरणस्वर्गसैं चयकरि सर्वयसा नामा वैश्य अर यशोमती नामा स्त्री तिनके, मैं यसोभद्रनामा पुत्र होता भया. सो मैं कुमार अवस्थाविखैंही

Scanned by CamScanner

संसार देहभोगनितैं उदासीन श्रीगुरुकेपास भगवती दीक्षा धारण करी. समीचीन तपके बलतैं अवधि मनःपर्यय दोय ग्यानकूं प्राप्त भया. अर त्रिदेवी बिरामणीका जीव देव भयाथा सो अच्युतस्वर्गतैं चयकरि सम्यग्दर्शनके अभावतैं सुकुमालविखैं अत्यंत स्नेहवती ऐसी तूं मेरी बहिण यसोभद्रा भई. अर नागश्रीका जीव पद्मनाभ देव भयाथा सो अच्युतस्वर्गतैं चयकरि इहां पुण्यके प्रभावतैं जगतविखैं विख्यात ऐसा धर्मात्मा सुकुमाल भया. अर राजग्रहनगरका राजा सुबलका जीव देव भयाथा सो अच्युतस्वर्गतैं चयकरि पुण्यके उदयतैं यहां यह वृषभांक राजा भया. अर कौसांबीका राजा अतिबलका जीव देव भयाथा सोभी आरणस्वर्गतैं चयकरि इहां इस वृषभांक राजाके यह कनकध्वजनामा पुत्र भया. याभांति यशोभद्रमुनिराजके मुखरूप चंद्रमातैं उत्पन्न भया जो सत्यार्थ वचनरूप अमृत ताहि नृपादिक निकरिसहित पानकरि, अर मोहरूप विषका वमन करि, अर संसारसंपदा गृहादिकविखैं परम संवेगकूं पायकरि, बहुरि पुत्रसंबंधी अपने मोहकी निंदाकरि यह यसोभद्रा तप ग्रहण करवेकूं उद्यमी भई. तासमय सुकुमालकी चार प्राणप्रिया गर्भवंती हुती. तिनकूं सर्व घरसंपदादिक सौंपकरि अवशेष अठाईस पुत्रवधू अर और बहुत बंधुजनकरिसहित सेठाणी यसोभद्रा तुरतही बाह्य अभ्यंतर परिग्रहका त्याग करि मुक्तीके अर्थि दीक्षा ग्रहण करती भई. अर राजा वृषभांकभी तिस यसोभद्र मुनिराजके समीप अपने पूर्वभवकूं सुनकरि परम वैराग्यकी सामर्थ्यतै अपने छोटे पुत्रके अर्थि राज्यसंपदा देय करि संसार देह भोगनितैं विरक्त ऐसे बहुत राजपुत्रनिकरिसहित अर कनकध्वजकरिसहित समस्त

Scanned by CamScanner

संपदाका त्याग करि मन वचन कायकी विशुद्धतातैं मोक्षके अर्थि मुक्तीकी मातासमान ऐसी भगवती दीक्षा अंगिकार करी. तापीछैं ते समस्त मुनिराज परम तप करते अर श्रुतका अध्ययन करते अर आपापरका विचार करते, अर नानादेशनिमैं विहार करते, अर निर्जन वनविखैं निवास करते, बहुरि परमदीक्षाकूं पालतेसंते, मोक्षमार्ग विखैं स्थित करते भये. तहां तिस समस्त योगींद्रनके मध्य सुकुमालका पिता सेठ सुरेंद्रदत्त १ सुकुमालका मामा यसोभद्रमुनि १ उज्जयनीका राजा वृषभांक १ अर वृषभांकका पुत्र कनकध्वज ये चार महामुनि चरमसरीरी तद्भव मोक्षगामी शुक्लध्यानरूप खड्गतैं बलात्कार समस्त कर्मरूप वैरीनका घात करि अर इंद्रादिक देवनितैं पूज्यताकूं पायकरि बहुरि क्षायकसम्यक्त, क्षायकज्ञान, क्षायकदर्शन, अनंतवीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अर अव्याबाधत्व इन आठ गुण आदि अनंत गुणनिकूं पायकरि अनुपम अनंत सुखकरि परिपूर्ण ऐसा परमधामकूं प्राप्त भये. अर और समस्त मुनिराज अपने अपने तपश्चरणके अनुसार सौधर्मस्वर्ग आदि सर्वार्थसिद्धिपर्यंत उत्तमपदकूं प्राप्त भये. अर सुकुमालकी माता यसोभद्रा अर्जिका तीव्र तपके प्रभावतैं अच्युतकल्पकूं प्राप्त भई. बहुरि केईएक अर्जिका दर्शन, ग्यान, चारित्र अर तप इनके प्रभावतैं सौधर्मादि अच्युतस्वर्गपर्यंत युगलनि विखैं बडी रिद्धके धारक महार्द्धिक देव भये. अर केईएक अर्जिका तपके प्रभावतैं सौधर्मादि अच्युतस्वर्गपर्यंत कल्पनिविखैं अत्यंत रूपवती मनोहर देवांगना भई. अथानंतर सो सुकुमालमुनिराज पुन्यका उदयतैं सर्वार्थसिद्धि विमानविखैं उपपाद शिलाके मध्य रत्नमई कोमल सय्याविखैं अंतरमुहूर्तकरि संपूर्ण

Scanned by CamScanner

नवयौवनकूं पाय दिव्य वसन भूषण अर पहुपमाला दीप्तकांत आदिकरि विभूषित कहिये सोभायमान ऐसा अहमिंद्र देव तिस उपपाद शय्यातैं ऊठकरि मानू साक्षात पुण्यके पुंजहीहै कहां ऐसे अहमिंद्र देवानिकूं नैननितैं अवलोकन करि अवधिग्यानतैं प्रभावतैं पूर्वभवसंबंधी समस्त प्रचुर तपका फल जानिकरि, बहुरि साक्षात तपका फल देखिकरि धर्मविखैं दृढ बुद्धि धारण करता भया. तापीछैं अत्यंत पुण्यात्मा वह अहमिंद्रदेव धर्मके सिद्धीकेअर्थि उत्तंग, दिव्यरत्न मणिमय सुवर्णमई जिनमंदिरविखैं गया. तहां अद्भुत तेजके पुंज जे श्री जिनदेवके प्रतिबिंब तिनकूं प्रणाम करि अर परम पुनीत पूजाके द्रव्यकरि भक्तीथकी आठ प्रकार पूजनविधान करि अहमिंद्रनिकरिसहित सो पुण्यात्मा पुण्यका उपार्जन करता भया. तापीछैं वह अहमिंद्रदेव अपना निवासविखैं जायकरि पूर्वभवविखैं उग्रउग्र तपकरि उपार्जन करी ऐसी समीचीन विमान आदि समस्त अपनी संपदाकूं अंगिकार करी. अर अपने निवासविखैं तिष्ठता यह अहमिंद्रदेव त्रिलोकवर्ती समस्त जिनबिंब अर जिनमंदिरनिकूं अपना अवधिग्यानतैं अवलोकनकरि प्रणाम करता भया. अर अपना स्थानमें तिष्ठताही यह अहमिंद्र सदाकाल पंचकल्यानकनिविखैं श्री जिनेंद्र तीर्थंकर देवनिकूं शिर नवाय भक्तिसहित स्तुति नमस्कारादि करे है. अर गणधरादिमहंत केवलीनके केवलग्यान निर्वाण कल्याणके कालमैं यह अहमिंद्र देव प्रणामादि करेहै. अर तहां कोई अवसरविखैं विना बुलाए स्वयमेव अपनी इच्छातैं आये ऐसे जे अहमिंद्र देव तिनकरिसहित सो अहमिंद्र धर्मकी करणहारी समीचीन धर्मगोष्टी करे है. इत्यादिक नानाप्रकार पुण्यका

Scanned by CamScanner

उपार्जन करता ऐसा वह अहमिंद्र देव पूर्वपुण्यके उदयतैं प्रविचाररहित अनुपम सुखनिकूं निरंतर भोगवेहै. अर स्फाटिक मणीमई विमानविखैं स्वभावही करि परम सुंदर अतिमनोहर ऐसे महल वनपर्वतादिकनि विखैं प्रीततैं अहमिंद्रनिकरिसहित यथेच्छ क्रीडा करता अर सदाकाल धर्मध्यानका चिंतवन करता वो अहमिंद्र देव सुखसागरके मध्य मग्न रहे है. तिन अहमिंद्र देवनिके स्वभावहीकरि परम रमणीक ऐसा अपना मनोहर शुभस्थानविखैं जो रति होय है. सो रति और स्थान विखैं काहूठौर कदाकालभी नाहीं होहै. तातैं अपनां परम उत्तम मनोहर स्थानकूं छांडिकरि अन्यथा स्थान विखैं अहमिंद्र देवनिका गमन कदेभी नाहीं होहै. अर वह समस्त अहमिंद्र देव कैसे है? समान ऋद्धिकरि शोभायमान है. अर जिनके हीनाधिकपनां नाही, सबही समान पदकरि सहित है. अर जिनके लेश्याकी विशुद्धता अवधिग्यानका प्रमाण पांचूं इंद्रियनके सुख अर भोगोपभोगसंपदा समान है, सर्वही अहमिंद्र देव मंदरागी धर्मध्यानविखैं सावधान परमस्नेहकरि संयुक्त है अर जिनके परस्पर ईर्षा नाहीं, मान बढाई नाहीं, अर विकारकरिरहित, सरळ परिणामके धारक, परमप्रवीण, परम सौम्यरूप, सादस धर्मके फलतैं सर्वही अहमिंद्रदेव समान है. इहां मैंही इंद्र हूं. मैंही अहमिंद्र हूं. यहां मोसिवाय और कोऊ दूजा इंद्र नाहीं है. ऐसे वह समस्तही अहमिंद्र देव अपना उत्तमपदसंबंधी महान सुखकूं अपने अपने हृदयविखैं प्राप्त होहै. अर स्वर्गविखैं अनेक अप्सरानकरिसहित केलि करतैं जो सुख होय है तातैं असंख्यातगुणा सुख अहमिंद्रदेवनिके पैंड पैंडमें है. कैसा है अहमिंद्रदेवनिका सुख? बाधारहित है. अर

Scanned by CamScanner

उपमारहित है. अर स्वात्मज कहिये अपने आधीन है. पराधीनताकरि रहित है. बहुरि प्रविचारता करि रहित है.

भावार्थ–प्रविचार नाम पांचूं इंद्रियनके विषयनका है सो भवनवाशी , व्यंतर, ज्योतिषी देव, यह भवनत्रक अर सौधर्म ईशान सुर्गके देव इन चार जायगा तो मनुष्य मनुष्यणीके मैथुनका रतिकालविखैं कामसेवनकी नांई काय भोग है. अर सनत्कुमार माहेंद्र स्वर्गके देवनिके देवांगनाके स्पर्शमात्रही भोगसुख है, अर ब्रह्मब्रह्मोत्तर, लांतव, कापिष्ट इन चार स्वर्गके देवनिनैं देवांगनाके रूपके अवलोकनमात्रही भोगसुख है, अर शुक्र, महाशुक्र, सतार, सहस्रार इन चार स्वर्गके देवनिके देवांगनाका वचन श्रवणमात्रही भोगसुख है. अर आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, इन चार स्वर्गनिविखैं देवनिके केवल मनविखैं विचारमात्रही भोगसुख है. बहुरि नव ग्रैवेयक, नव अनुदिसि, पांच अनुत्तरविखैं देवांगना नाहीं. तातैं समस्त अहमिंद्रनिके मनकाभी विकल्प नाहीं. परम ब्रह्मचारी सदा प्रविचाररहित अप्रविचार है. कैसे है अहमिंद्र देव ? कामज्वर करि रहित है. संसारविखैं परिपूर्ण पुन्यका उदयतैं समस्त दुःखरहित जो सर्वोत्कृष्ट सुख है सो संपूर्ण सुख सर्वार्थसिद्धिनिवासी अहमिंद्र देवनिके है. इत्यादिक सुखविखैं भले प्रकार तल्लीन वो अहमिंद्र देव कैसा है? तेतीस सागरकी है आयु जाकी, अर दिव्य मनोहर लक्षणनिकरि लक्षित है. अर तेतीस हजार वर्ष व्यतीत भये सर्व इंद्रियनके सुख दाई अमृतमई दिव्य मानसिक आहारकूं आस्वाद करै. अर तेतीस पक्षका साढासोला मास व्यतीत भये रंचमात्र एक स्वास लेवे है. अर अपना अवधि ग्यान करि त्रिलो-

Scanned by CamScanner

कवर्ती समस्त मूर्तिक द्रव्यनकूं जाने है. अर अपना अवधि ग्यानका क्षेत्रपर्यंत विक्रिया करनेविखैं समर्थ ऐसी जो विक्रियारिद्धी ताकरि शोभायमान है. अर उत्कृष्ट शुक्ल लेश्याकरि सहित है. अर निरंतर धर्मध्यानविखैं तल्लीन है. अर सात धातु, सात उपधातु, मैल, पसेव, रोगादिक करिरहित दिव्य स्फटिक मणीसमान उज्ज्वल है. विक्रिय देहकूं धारण करेहै. अर एक हाथ प्रमाण ऊंचा है मनोहर काय जाका अर नेत्रनिको जो उन्मेष कहिये टिमकारा ताकरिरहित है.

भावार्थ–नेत्र टिमकारे नाहीं. अर आदिशब्दतैं शरीरकी छाया नाहीं परे है. अर सुखका समुद्रके मध्य तिष्ठे है. अर समस्त अनिष्टके संयोग करिरहित है. अर इष्टका वियोग करिरहित है. बहुरि समस्त दुःखकरि रहित ऐसा वो अहमिंद्र देव तिस सर्वार्थसिद्धि विमानविखैं सुखसहित स्थिति करता भया. सो यह सुकुमालका जीव अहमिन्द्र देव तिस सर्वार्थसिद्धि विमानतैं चयकरि इसही जंबूद्वीप भरतक्षेत्र आर्यखंडविखैं क्षत्रियादिक तीन उत्तम कुलमें जन्म पायकरि बहुरि रत्नत्रयधर्मका प्रभावतैं समस्त कर्मनिका नाश करि निश्चयथकी मोक्ष जायगा. याभांति शुद्ध निर्दोष चारित्रके प्रभावतैं सो अहमिंद्र देव अनुपम सारभूत अर दुःखका लेशमात्र करिभी रहित, बहुरि समस्त विकारकरिरहित ऐसा परम सुखकूं भोगवे है. ऐसे जानिकरि भो भव्य जीव हो, उत्तम सुखके प्राप्तीके अर्थ इहां चारित्रकी सुद्धता करि केवल सर्वज्ञ भाषित धर्मका सेवन करो. धर्म जो है सो अनंतगुणनिका दायक है. अर समस्त दोसनिका नासक है. अर ध्यानी मुनिराज धर्म-

Scanned by CamScanner

हीनैं आश्रय करे है. अर धर्मकरिही मोक्षका सुख भले प्रकार साधिये है. अर धर्महीके अर्थि मेरा वारंवार नमस्कार हो हू. अर भगवानभाषित धर्मतैं सिवाय और कोऊभी उत्तम सुख प्रगटनहारा नाहीं है. अर धर्मके मूलत्रय सम्यग्दर्शन, ग्यान चारित्र है. तातैं मैं धर्महीविखैं निरंतर लगाऊ हूं. सो हे धर्म तू मेरे परिपूर्ण होहू. यह जीव धर्मतैंही अत्यंत उत्तम विभूतकूं पावे है. अर धर्मतैं ही शोभायमान रूप संपदा पावे है. अर धर्महीतैं संयमका लाभ होय है. अर धर्मतैंही महा घोर उपसर्गका विजय होय है. बहुरि धर्मतैंही एक भवमें निर्वाण संपदाकी करणहारी ऐसी अनुपम परम उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्धिकी संपदा पावे है. या भांति जानिकरि भो भव्य जीव हो, इहां सदाकाल बडे जत्नतैं मन वचन कायकी सुद्धताकरि धर्महीका सेवन करो. इस संसारविखैं धर्मविना उत्तम संपदा कहांतैं होय. अर पांचूं इंद्रियनके मनोग्य विषयनका लाभ धर्मविना काहेतैं होय? अर सारभूत समस्त भोग धर्मविना काहेतैं होय? अर समस्त लोकनिके मध्य मानपणा धर्मविना काहेतैं होय? अर धर्मविना अति मनोग्य रमणीनका लाभ काहेतैं होय? अर धर्मविना इहां अपने वांछित अर्थका लाभ कैसे होय? अर इहां धर्मविना अपने मनकी शुद्धता काहेतैं होय? अर धर्मविना उत्तम धर्म जो निजात्म शुद्धधर्म ताका लाभ काहेतैं होय? अर धर्मविना यहां यथाख्यात संयमका लाभ काहेतैं होय? अर धर्मविना इंद्र अहमिंद्र, तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, कामदेव, आदि उत्तमपदनिका लाभ काहेतैं होय? अर धर्मविना इहां सत्पुरुषनिके बाह्य अभ्यंतर वैरीनका विजय काहेतैं होय? याभांति जानिकरि भो

Scanned by CamScanner

बुधजनहो आत्महितके अर्थी सर्वज्ञभाषित अनुपम धर्मका बडे जतनतैं निरंतर सेवन करो. कैसा है धर्म ? समस्त संसारके दुःखनिका घातक है. अर समस्त मनोवांछित अर्थका प्रगट करनहारा है. बहुरि परमार्थभूत आत्मीक सुखका अद्वितीय एक कारण है.

या भांति सारभूत चरित्रके रचनेका मिसकरि अत्यंत धीरवीर श्री सुकुमाल मुनिकी मैं सकल कीर्तिनामा आचार्य यह स्तुति करी है. कैसे है सुकुमाल मुनि ? तीन भुवनकरि वंदनीक है. सो वह मुनिराज कर्मरूप वैरीनके विजयविखैं समस्त उपद्रवका घातक ऐसा अपना अद्भुत वीर्य मोकूं देहु. अर समस्त अशुभ कर्मको विनासक ऐसो समाधिमरण, बहुरि अपने समस्त उत्तम क्षमादिक गुणनिके समुदाय, मोहि देहु येही मेरी उनतैं प्रार्थना है. अर अल्पश्रुतका धारक ऐसा सकलकीर्तिनामा मुनिकरि किया जो यह सुकुमालचरित्र ताहि समस्त अग्यानसंबंधी दोषनिके घातक ऐसे बहुग्यानी मुनिराज सुद्ध करो. अर इस सुकुमालचरित्रकी रचनाविखैं अब इहां प्रमादके वसकरि अक्षर, स्वर, संधि तथा मात्रा, बहुरि पदनके जोडनेविखैं जो मैं कछु चूक करि कह्या होय, तो सो समस्त मेरा अपराध हे माता भगवती परमेश्वरी जिनवाणी तुम क्षमा करहू. अर इस सुकुमाल चरित्रकूं जे मुनिराज इहां मोक्षके सिद्धीके अर्थि पढे है ते मुनिराज समस्त श्रुतसमुद्रका पारकूं पायकरि परमपदका आश्रय करेहै. कैसाहै यह चरित्र ? समस्त रागभावका विनाशक है. अर निर्मल समस्त सुखनिकी खानि है. अर जे निपुण ग्यानी जन इस सुकुमालचरित्रकूं परमसुखका लाभके अर्थि सुनेहै ते पुरुष तुरतही

Scanned by CamScanner

रागरोसका नाशकरि परमवीतरागधर्मका सेवन करे है. कैसा है यह चरित्र? वृष कहिये मुनिधर्म अर श्रावकधर्म इन दोऊनका बीज कहिये मूलकारण है. अर भगवान वृषभदेव आदि वर्धमान . जिनराजपर्यंत चोवीस तीर्थंकर अनंत गुणनिके निवास समस्त लोकके परमेश्वर महेश्वर ऐसे अर्हंत परमेष्ठी अर समस्त कर्मनकरि रहित परमपदकूं प्राप्त भये परमपूज्य ऐसे अनंतसिद्ध मरमेष्ठी अर शिवके अभिलाषी समस्त मुनिराजनके हितकारी ऐसे आचार्य परमेष्ठी अर द्वादसांग श्रुतसमुद्रके पारंगत पचीस गुणनिकरि विराजमान ऐसे उपाध्याय परमेष्ठी बहुरि आठवीस मूलगुणके धारक सम्यग्दर्शन ग्यान चारित्रकी एकतारूप मुक्तिमार्गके साधक ऐसे सकल साधु परमेष्ठी ऐसे यह पंच परमेष्टी परमोत्कृष्ट तपका फलकूं प्राप्त भये ते पंच परमगुरु इस सुकुमालचरित्रकी परिपूर्णताविखैं मुझ सकलकीर्ति मुनिराजकूँ अर तुम समस्त भव्य जीवनिकूं पंचकल्याणरूप परम मंगल प्रकर्षपनेकरि द्यौ. ऐसे यह प्रार्थनारूप तथा आशीर्वादरूप परममंगल शास्त्रके परिसमाप्ति विखैं आचार्यने कीना है. अर निर्मल गुणरत्ननिका निधान तीन लोकविखैं अद्वितीय दीपकसमान समस्त दोषनिकरिरहित अर पांच इंद्रिया अर हिंसादिक पांच पापरूप वैरीनका घातकशस्त्रसमान समस्त दोषनिकरिरहित अर कल्याण सुखका अर कर्मक्षयका मूलकारण चार ग्यानके धारक मुनिराजकरि पूजनीक ऐसो यह सम्यग्ज्ञानरूप परमपवित्र तीर्थ भूतलविखैं अद्वितीय अतिशयपणे करि जयवंतो प्रवर्तो. यह जिनवाणीकी महिमा वर्णन करि अंतविखैं मंगल प्रगट दिखाया है. अर इस सुकुमाल चरित्र मूलग्रंथ संस्कृतके समस्त

Scanned by CamScanner

श्लोकनिकी संख्याका प्रमाण ग्यारहसे लेखकनिकरि जानिवे योग्य है.

चौपई.

अर्हत सिद्ध सूर उवझाय ॥
साधु भारती गणसमुदाय ॥
जैनधर्म सब मंगलरूप ॥
मंगलदायक होहु अनूप ॥ १ ॥

इत्याचार्य श्री सकलकीर्तिविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृत ग्रंथ ताकी देशभाषामय वचनिकाविखैं सुकुमालकी माता यशोभद्राके दीक्षाका ग्रहण, अर यशोभद्र, सुरेंद्रदत्त, वृषभांक, कनकध्वज, इनका मोक्षगमन अर अहमिंद्र देवके विभूतिका है वर्णन जामैं ऐसा नवम सर्ग समाप्त भया ९.

दोहा.

आदि अंत मंगल करो ॥ श्री वृषभांक जिनेस ॥
जैन धरम जिनभारती ॥ हरि संसार कलेस ॥ १ ॥

सवैया ३१.

ढुंढाहड देशमध्य जैपुर नगर सोहै चारवर्ण राह चले अपने सुधर्मकी ॥ रामसिंघ भूपतिके राजमाहि कमी नाहीं कमी कछु दृष्टि परैं मानू निज कर्मकी ॥ वैश्यकुल जैनीको

पूरवकृत पुण्यथकी पायो यह, खोलो अब मुदी दृष्टि भर्मकी ॥ जैन वैन कान सुनो आतम स्वरूप मुनो चारौं अनुयोग भनो यही शीख मर्मकी ॥ २ ॥

चौपई.

दोशी गोत दुलीचंद नाम ॥ ताको सुत शिवचंद अभिराम ॥ नाथूलाल तास सुत भयो॥ जैनधर्मको शरणो लयो ॥ ३ ॥ श्रीदिवाण संगही अमरेस ॥ पाय सहाय पढ्यो श्रुतलेस ॥ कासलिवाल सदासुख पास ॥ फिर कीनो श्रुतको अभ्यास ॥ ४ ॥ श्री सुकुमाल चरित्र रसाल ॥ देखि कही हरचंद गंगवाल॥ होय वचनिकामय जो येह ॥ सबही जन वांचे हित गेह ॥ ५ ॥ बिनव्याकरण पढे नहि ग्यान ॥ मूलग्रंथको होय निदान ॥ ऐसे प्रार्थन तने बसाय ॥ मूलग्रंथको पाय सहाय ॥ ६ ॥ भावारथसौं लिखयो येह ॥ देशवचनिकामय धरि नेह ॥ वांचो पढो पढावो सुनो ॥ आतमहितकूं नीके मुनो ॥ ७ ॥ जो

Scanned by CamScanner

प्रमादवसतैं कछु इहां ॥ भोलपनेतैं मैंने कहा ॥ सो सब मूलग्रंथ अनुसार ॥ सुध करियो बुधजन सुविचार ॥ ८ ॥ उनवीस शत ठारह सार ॥ सावण सुदि दशमी गुरुवार ॥ पूरण भई वचनिका येह ॥ वांचो पढो सुनो धरि नेह ॥ ९ ॥

दोहा.

मंगलमय मंगल करन ॥ वीतराग चिद्रूप ॥
मन वच तनकरि ध्यावते ॥ होहे त्रिभुवन भूप ॥१०॥

इति श्रीसकलकीर्तिआचार्यविरचित सुकुमालचरित्र संस्कृतग्रंथकी देशभाषामय वचनिका समाप्ता ॥

Scanned by CamScanner